श्रीमद्भागवत-प्रकाश

35



श्रीराजलक्ष्मी जी

श्रीमद्भागवत-प्रकाश

लेखिका

श्री राजलक्ष्मीजी

(श्रीमती बड़ी महारानी साहिबा)

रामबाग डेउढ़ी

दड़िभंगा

१६६६

प्राप्तिस्थान
श्री मणिनाथ झा
रामवाग पैलेस
दड़िभंगा

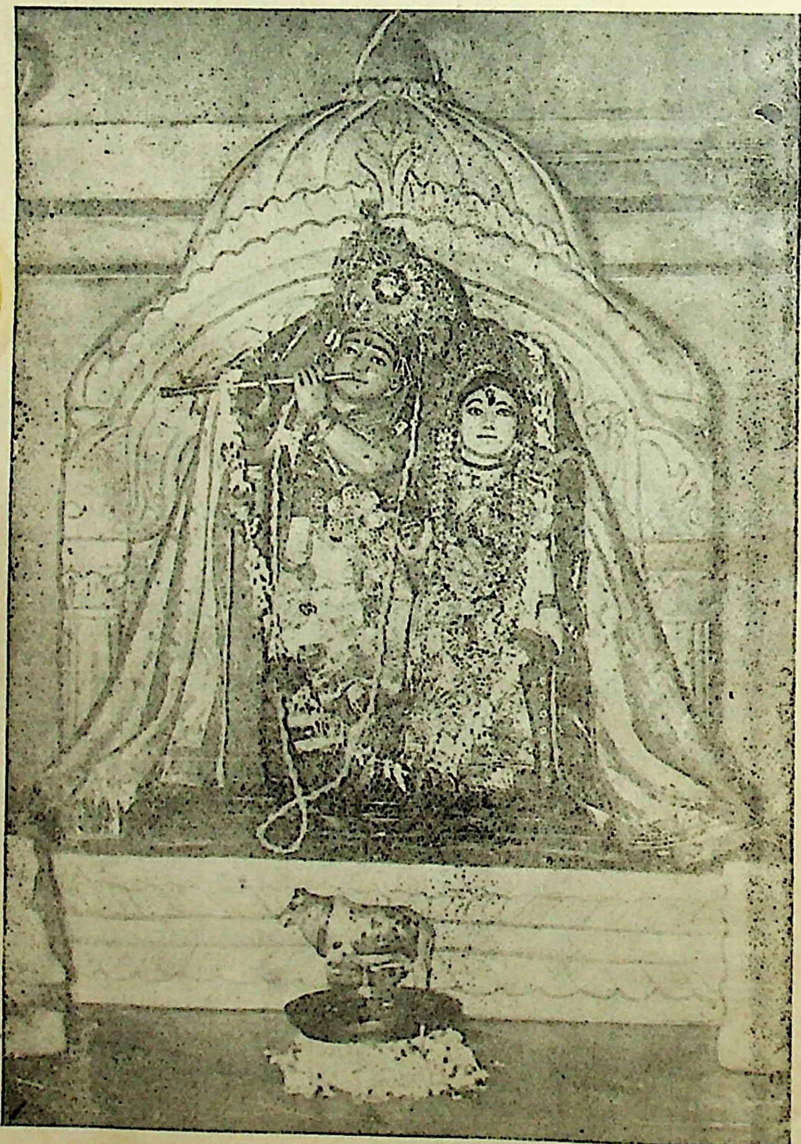
मुद्रक
निर्भय राघव मिश्र
नव भारत प्रेस
लहेरियासराय ।



परमपूज्य परमगुरु वैकुण्ठवासी दादाजीक स्नेहसिक्त कृपासँ
संस्कृत ओ मिथिलाभाषाक यत्किञ्चित् शिक्षा भेल
तकरे प्रसादसँ श्रीमद्भागवत पर किछु प्रकाश
लिखल, १९४९ ई०मे जे आइ बीस वर्षक वाद
प्रकाशित भए रहल अछि। हमर
हार्दिक अभिलाषा जे हम जे किछु
लिखल अछि से मैथिल-
समाज कृपापूर्वक
देखथि, पढ़थि,
बूझथि।

एही अभिलाषाक सङ्ग ई पोथी हम
श्री १०८ राजपतिक युगल चरणार-
विन्दमे समर्पण करैत छी।

श्रीराजलक्ष्मीजी



परमपूज्य परमगुरु वैकुण्ठवासी दादाजीक स्नेहसिक्त कृपासँ
संस्कृत ओ मिथिलाभाषाक यत्किञ्चित् शिक्षा भेल
तकरे प्रसादसँ श्रीमद्भागवत पर किछु प्रकाश
लिखल, १९४९ ई०मे जे आइ बीस वर्षक बाद
प्रकाशित भए रहल अछि। हमर
हार्दिक अभिलाषा जे हम जे किछु
लिखल अछि से मैथिल-
समाज कृपापूर्वक
देखथि, पढ़थि,
बूझथि।

एही अभिलाषाक सङ्ग ई पोथी हम
श्री १०८ राजपतिक युगल चरणार-
विन्दमे समर्पण करैत छी।

श्रीराजलक्ष्मीजी

विषय सूची



भूमिका

मैथिलीक ई परम सौभाग्य जे श्रीमद्भागवतक कथाक सार आइ संक्षिप्त रूपेँ मैथिलीमे बहराए रहल अछि तथा से लिखलैन्हि अछि दड़िभङ्गाक राजक श्रीमती बड़ी महारानी साहिबा, श्रीराजलक्ष्मीजी। श्रीराजलक्ष्मीजीक भजन-माला बहुत दिन भेल प्रकाशमे आएल। हिनक भक्तिप्रवणता सबकेँ बुझल छैक। आइ ओही भक्तिभावक उद्रेक एहि भागवत-प्रकाशक रूपमे प्रकाशित भए रहल अछि ई बड़े सौभाग्यक विषय थिक।

ई ग्रन्थ भागवत पर आधारित अछि, भागवतक दशम स्कन्ध पर, जाहिमे कृष्णक चरित बड़े विस्तारसँ वर्णित अछि। एकरा भागवतक अनुवाद नहि कहब मुदा सबटा कथा भागवतहिक थिक। शिशुपालक वध धरि एकरा लए जाए एहिमे कृष्णकेँ पुरुषोत्तम सिद्ध कएल गेल अछि। ओना भक्तिहुक ठाम-ठाम निवेश अछि मुदा एहिमे मुख्यता अछि कथाकेँ जाहिसँ पढ़बामे ई रोचक अछि।

श्रीराजलक्ष्मीजी परम विदुषी छथि, हृदयसँ भक्त छथि। महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह बहादुरक पुतहु, महाराजधिराज कामेश्वरसिंह बहादुरक धर्मपत्नी, यश तँ हिनका स्वतः प्राप्त

... । विद्याक अनुराग, दीनपर दया, विवेकपूर्ण सद्व्यवहार, एवं ...लिक मर्यादाक यश हिनका देश भरि छैन्हि। आइ ई भा... ...तक सुन्दर कथा लिखि प्रकाशित कए रहलीह अछि तेँ कीर्त्तिरक्षर-सम्बद्धा यदि सत्य त चिरकाल धरि हिनक कीर्त्तिवल्ली पसरल रहत। वस्तुतः एहन सुन्दर सरल गद्यमे कृष्णक लीलाक वर्णन एहि साहित्यक गौरव थिक।

हम श्रीराजलक्ष्मीजीक भूरि-भूरि अभिनन्दन करैत छिऐन्हि ओ मैथिली प्रेमो शिक्षित समाजक दिशिसँ हुनका आश्वासन दैत छिऐन्हि जे एक त कृष्णक चरित, से पुनि हिनक लिखल, एकर पूर्ण सत्कार होएत जाहिसँ श्रीराजलक्ष्मीजी आओर एहने-एहने उपादेय ग्रन्थ सब लिखि-लिखि प्रकाशित करबैत रहथि। इति

महालया
१९६६

श्रीरमानाथ झा

१

श्री कृष्ण-जन्म-वर्णन

१

द्वापरक कथा थिक। सुख ओ सुन्दरताक लेल समस्त आर्यावर्तमे एक गोट प्रसिद्ध नगर छल मथुरा जे धर्म–कर्मक केन्द्र मानल जाइत छल, कर्म–काण्डक गढ़ बुझल जाइत छल, जतए यज्ञादि धार्मिक क्रिया दैनिक जीवनक अंग छल, वेदादि पाठ प्रातः कृत्यक अनिवार्य कर्त्तव्य छल। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र, सभ केओ समाजमे अपन-अपन सीमाक पूर्ण ध्यान रखैत छल। शूर-वीर ओ पराक्रमी राजाक एक विशाल परम्परा शासन कए चुकल छल। ओही मथुरामे उग्रसेन नामक एक गोट पराक्रमी ओ न्यायी राजा छलाह। बड़ सुख ओ शान्तिसँ ओ शासन करैत छलाह। हुनक शासन सेहो पूर्ण सुदृढ़ ओ व्यवस्थित छल। ओतए ने चोरक भय छल ओ ने दस्यु आदिक। ओतए ने हेजा–प्लेग होइत छलैक ओ ने दुर्भिक्ष। प्रजाक सुख–दुःख उग्रसेन स्वयं अपनहि बुझैत रहैत छलाह। प्रजाक प्रत्येक समस्याक समाधान तत्पर भए स्वयं कए दैत छलाह। ओ करक रूपमे प्रजासँ दशांश मात्र लए लैत छलाह। प्रत्येक प्रजा क जीवन

शान्तिपूर्ण ओ आनन्द-मय छल। सभ केओ सुखी छल ओ पूर्ण स्वतन्त्रताक अनुभव कए रहल छल। साम्राज्य होइतहुँ शासन प्रजातन्त्र छल। राज्यसत्ता ओ जनतन्त्रक ओतए अद्भुत समन्वय छल। धन्य उग्रसेन ओ धन्य मथुरा!

२

उग्रसेनक धर्मपत्नी जे हुनक पटरानी छलथिन्ह, बड़ सुन्दरी ओ गुणवती छलथिन्ह। एक दिन ओ वनमे घुमैत-घुमैत एक-सरे घन जंगलमे पहुँचि गेलीहि। संगक लोक छूटि गेलैन्हि। जावत ओहिठामसँ पुनः घुरथि, ताही बीचमे एकटा राक्षस उपस्थित भए हुनका पकड़ि लेलक ओ प्रणयक याचना करए लागल। रानीकेँ राजी नहि भेला पर राक्षस हुनका संग बलात्कार करए लागल। अन्तमे अपन काम-वासनाकेँ शान्त कइए कए ओ राक्षस रानीकेँ छोड़लक। ग्लानिसँ गलल जाइत रानी मनहिं मन क्षुब्ध छलीहि जे की करी, की नहि? स्त्रीकेँ बिनु पतिक स्वच्छन्द भए नहि विचरण करबाक चाही। मुदा उग्रसेनक धर्मपत्नी आइ एही नियमक उल्लंघन कएने छलीहि। पश्चात्तापसँ विह्वला रानी राज प्राङ्गणक लग अबैत-अबैत मूर्च्छित भए खसि पड़लीहि। हुनका लग रहनिहारि परिचारिका सब दौड़लि। सभ केओ हाथे-पाथे उठाए रानीकेँ प्रासाद लए गेलि ओ सेवा-सुश्रुषा एवं

होशमे अनबाक उपचार करए लागलि। उग्रसेनकेँ सेहो सूचना देल गेलैन्हि। उग्रसेन अएलाह ओ रानीक दशा देखि दुःखी भए हुनकासँ एहि रूपक दशा भए जएबाक कारण पूछए लगलाह। अपनाकेँ अपराधिनी बुझैत रानी अपना संग घटल घटना उग्रसेनकेँ सत्य-सत्य कहि देल—"हे नाथ! आइ जे अहाँक बिना हम वन गेलहुँ, तकर विकट परिणाम हमरा भोगए पड़ल। एक गोट राक्षस हमरा संग बलात्कार कएलक। हम गर्भवती भए गेलि छी, परपुरुषगामिनी भए आब हम जिबिए कए की करब?" मुदा उग्रसेन ई बुझैत छलाह जे एहिमे रानीक दोष नहि छलैन्हि। सात्विक क्षमा-शील ओ न्यायी हुनका विधिक विधान पर दृढ़ विश्वास छलैन्हि। ओ रानीकेँ क्षमा कए देलैन्हि। हुनक धारणा छल जे भावी भइए कए रहैत छैक। ओकरा केओ नहि रोकि सकैत अछि। अन्तमे एक दिन समय प्राप्त भए गेला पर रानीक गर्भसँ सुरकेँ त्रस्त कएनिहार एक गोट असुरक जन्म भेल जकरा जातक संस्कारक समय 'कंस' नाम देल गेल। एहि बालकक जन्म होइतहिँ गीदड़ भूकए लागल छल। तरे-गन सभ टूटि-टूटि पृथ्वी पर खसए लागल छल। भगवान भास्कर मेघमे नुकाए गेल छलाह। शोणितक वर्षा होमए लागल छल। उल्कापात होमए लागल छल। स्वर्ग, मर्त्य ओ पाताल, तीनू लोक श्रीहत भए गेल छल। समय उदास लागि रहल छल। वातावरणमे भयङ्करताक आभास भेटि

रहल छल। मुदा ई नवजात शिशु कंस दिन दोगुन ओ राति चौगुनक अनुपातमे बढ़ि रहल छल। किछुए दिनमे समर्थ भए ओ प्रौढ़ युवक बुझि पड़ए लागल।

३

युवक भेला पर कंसकेँ उग्रसेनक शासनमे हुनका जूतिएँ रहब नीक नहि लगैन्हि। कारण उग्रसेन धार्मिक प्रवृत्तिक विवेकी राजा छलाह, कंस छल नास्तिक दुष्टाचारी राजकुमार। ओ मदिरा पिबैत छल, मांस भक्षण करैत छल, पर स्त्रीक गमन करैत छल। उग्रसेन कंसकेँ एहि सभक लेल बरोबरि डँटैत रहैत छलाह। मुदा कंस पर एहि सभक कोनो प्रभाव नहि पड़ैत छल। उनटे ओ दिन दिन आरो बेसी नास्तिक ओ उद्दण्ड भेल जाइत छल। आब तँ ओ उग्रसेनहु कें कोनो मोजर नहि दैत छल, अवसर पाबि उग्रसेनहुकेँ डाँटि दैत छल। एक दिनुक कथा थिक। एकटा तपस्वी "नारायण, नारायण" करैत उग्रसेनक दरबार अएलाह। किछु याचना सेहो कएलैन्हि। ओकरा किछु देथिन्ह कथी लए, कंस उनटे ओहि तपस्वीकेँ ओतएसँ मारि-पीटि कए बइलाए देल। एहि पर उग्रसेन कंसकेँ गञ्जन कएल। उग्रसेनक कहब छल जे तपस्वीकेँ एहि रूपेँ अपमानित करब उचित नहि। तपस्वीक संग एहि रूपक व्यवहार उद्दण्डता थिक। उग्रसेनक एहि कथा पर कंस बिगड़ि गेल; ओकर क्रोधक सीमा नहि रहल।

पहिने तँ कंस उग्रसेन कैँ डँटलक जे हुनका आब राजा रहब उचित नहि, मुदा पश्चात् ओ कोनो अनुचरकैँ उग्रसेनकैँ बन्दी करबाक हेतु कहलक। परञ्च ओ अनुचर कंसक आज्ञा नहि मानलक, कहलक "हे नाथ! जाहि हाथसँ हम भरि जन्म हिनक सेवा करैत रहलहुँ अछि, ताहि हाथसँ हम राजाकैँ कोना जंजीर लए बान्हब गए?" एहि पर बिगड़ि कंस ओहि अनुचरकैँ जानहिसँ मारि देल। पुनः दोसर अनुचर कैँ उग्रसेनकैँ बन्दी बनएबाक हेतु कहल। ओ दुष्ट अनुचर तुरन्त उग्रसेनकैँ बन्दी बनाए कंसक आज्ञानुसार कारागृहक एक काल कोठलीमे बन्द कए देल जतए हवा-बसातक कोन गप, सूर्यक किरण पर्यन्त नहि प्रवेश कए सकैत छल। एहि रूपेँ उग्रसेनकैँ बन्दीगृहमे राखि कंस मथुराक राज-सिंहासन पर बैसि अपन इच्छानुसार शासन करए लगलाह। भाट सम उग्रसेनक गुण-गान छोड़ि, कंसक मनगढ़न्त गुण गाबए लागल। कंस आब सोनाक कटोरामे अप्सराक हाथसँ मदिरा पीबए लागल। झुण्डक झुण्ड नर्त्तकी कंसक आगू नृत्य करैत रहैत छलि, कंस अनुक्षण आँखि लाल कएने उन्मत्त रहैत छल।

ओमहर उग्रसेनकैँ एक गोट कन्या सेहो छलथिन्ह। हुनक नाम छलैन्हि देवकी, ओ देवकन्या जकाँ रूपवती ओ गुणवती छलि, उग्रसेनक आस्तिकता हुनकामे नीक जकाँ आएल छल। पूजा-पाठ ओ धार्मिक क्रिया हुनक नित्य कृत्य भए गेल छल। अतस्थैँ ओ कंसक छोटि बहिनि छलीहि।

४

मथुराक राज-शासन अपन हाथमे लए कंस राजक धर्म-भीरु मन्त्री ओ नोकर-चाकरकेँ राज काजसँ हटाए देल। कारण ओ सभ आस्तिक छल ओ धर्ममे विश्वास करैत छल। ओ सभ विवेकी छल ओ कोनो काज करवाक काल उचित-अनुचितक विचार करैत छल। ओकरा सभक एहि प्रवृत्तिसँ कंसकेँ अपन इच्छानुसार अनुचित ओ विवेक-शून्य काज करवामे बाधा पहुँचैत छलैक। अतः ओकरा सभकेँ हटाए कंस अपन राजकाज चलएबाक हेतु दुराचारी असुर सभकेँ रखलक जे आइ धरि धर्म ओ ईश्वरसँ डरि पतनुकान लेने छल। आब की छल ? जेहने राजा, तेहने राज-कर्मचारी। कंस निश्चिन्त भए दुराचार करए लागल। समस्त मथुरा ढोल-हो देआए देल गेल जे कंसक राजमे केओ पूजा-पाठ, यज्ञ-जाप, दान-पुण्य आदि कोनो धार्मिक काज नहि करए। जे केओ गोग्रास देत तकरा प्राण-दण्ड दए देल जएतैक। सभकेँ कंसहिकेँ ईश्वर मानवाक चाही। जे किछु करवाक हो, से कंसक हेतु कएल जाए। जे किछु देबाक हो, से कंसकेँ देल जाए। कंस रायक एहि रूपक आदेश सूनि मथुराक सकल जनता त्रस्त भए गेल ओ हरदम दण्ड पएवाक चिन्ता रहए लगलैक; उग्रसेनक परम भक्त अनुचर अक्रूर हतप्रभ भए जीवन बितबए लागल, चुप छल; शान्त छल, मुदा हृदय

मे ओकरा ईश्वरहिक प्रति भक्ति छलैक ओ उग्रसेनहिक प्रति श्रद्धा। मुदा कंस अनुदिन एतबए सोचैत-विचारैत रहैत छल जे कोन रूपेँ देवगण पर विजय प्राप्त कएल जाए? कोना देवताकेँ परास्त कएल जाए? कोना हुनक अधिकारकेँ छीनि लेल जाए? एहि सभ उद्देश्यसँ कंस अपन अनुचर असुर सभकेँ ब्राह्मण ओ तपस्वीक तपश्चर्यामे विघ्न-बाधा देबाक आज्ञा देलक। कंसक एहि रूपक आज्ञा पाबि असुर-गण ऋषि-मुनिक यज्ञमे बाधा पहुँचाबए लागल, हवन-कुण्डमे शोणितक वर्षा करए लागल। सुन्दरी युवतीक अपहरण करए लागल। ब्राह्मण ओ गाइक हत्या साधारण बात भए गेल छल। क्रमशः सूर्य ओ चन्द्रमाकेँ के कहए, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल, तीनू लोक पर कंसक आधिपत्य भए गेल। देवतालोकनि कंसक आज्ञाक पालन करए लगलाह। एहि रूपेँ धर्म नामक कोनो वस्तु नहि रहि गेल छल। स्वाहा ओ स्वधा, देवता ओ पितरक सभ कर्मक अन्त भए गेल, कंसक राज्यसँ धर्म, विवेक, दया आदि शब्द जेना लुप्त भए गेल छल, सर्वत्र दुराचार, व्यभिचार ओ अत्याचारक साम्राज्य भए गेल छल।

५

कंसक दुराचार· व्यभिचार ओ अत्याचारकेँ पराकाष्ठा पर पहुँचैत-पहुँचैत पृथ्वी काँपए लगलीह। पृथ्वीकेँ पापक भार नहि सह्य भेलैन्हि। ओ गाइक रूप धारण कए इन्द्रक ओतए

जाए निवेदन कएल जे "हे देवराज ! एहि पापक भार आब हमरा नहि सहल जाइत अछि। जँ आबहु अपने उद्धार नहि करब; तँ हमरा असहाय भए रसातल चलि जाए पड़त।" इन्द्र उत्तर दैत पृथ्वीकेँ कहल जे "हे माता सर्वसहा ! हमरहु तँ ओएह दशा अछि। अहाँक संग हमहूँ जाइ से भए सकैत अछि, मुदा हमरासँ अहाँक उपकार होएत, तकर कोनो सम्भावना नहि।" इन्द्रसँ निराश भए पृथ्वी ब्रह्माक ओतए गेलीह। ब्रह्मो ओएह उत्तर देलथिन्ह जे "हम अहाँक सङ्ग जाए सकैत छी, मुदा अहाँक कष्टक प्रतिकार करबामे हम सर्वथा असमर्थ छी।" एतहुसँ निराश भए पृथ्वी कैलाश जाए शिव लग उपस्थित भेलीहि। अपन समस्त दुःख-गाथा ओ शिवसँ कहि सुनओलथिन्ह। शिवजी पृथ्वीक दुःख-कथा सुनि द्रवित भए गेलाह। करुणा उमरि अएलन्हि। पृथ्वीसँ कहल जे 'हे धरा ! अहाँ अधीर जुनि होउ। हम एकटा उपाय कहैत छी। अहाँ सुनू। एहिसँ अहाँक कष्टक अन्त भए जाएत। चलू; क्षीर-समुद्र जाए भगवान विष्णुसँ एहि प्रसङ्ग विचार कएल जाए।" पृथ्वी बड़ प्रसन्न भेलीहि। पृथ्वीकेँ लेने शिवक सङ्ग भए आओरो देवता लोकनि विष्णुक ओतए विदा भेलाह। ओतए पहुँचि विशाल क्षीर समुद्रक शोभा देखल। ओहिमे सहस्र फण पसारने शेषनाग विराजमान छलाह। फण पर विराजित मणिसँ अद्भुत आभा पसरि रहल छल। देवतो लोकनिकेँ चकचोन्ही लागिगेल। कनिको

किछु नहि देखि पड़ि रहल छल। सभ केओ मनहि मन परमात्माक ध्यान करए लगलाह। तदुत्तर किछु कालक पश्चात् ओ सभ प्रकृतिस्थ भए सभ किछु देखए-सूनए ओ बूझए-गमए लगलाह। ओ लोकनि शेषनाग पर सहस्र दल कमलक शय्या देखल जाहि पर निराकार परब्रह्म श्रीमन्नारायणकेँ सूतल देखैत गेलाह। ओ श्याम वर्णक छलाह। मस्तक पर मणि खचित मुकुट विराजित छल। विशाल भाल पर कस्तूरीक तिलक कएल छल। मणिमय कुण्डल हुनक कानमे अद्भुत लागि रहल छल। गरामे वनमालाक छटा सुन्दरतासँ भरल छल। मणिजड़ित चकुठा बाँहि पर अत्यधिक सुशोभित भए रहल छल। नासिका सुन्दर छूड़ी सन ठाढ़ छल। पीताम्बर अद्भुत रूपेँ सुशोभित भए रहल छल। चारू हाथमे क्रमशः शंख, चक्र, गदा ओ पद्म धारण कएने छलाह, लगहिमे महालक्ष्मी सेहो छलीहि लाल रंगक पट्टवस्त्र पहिरने। हुनकहु मस्तक पर रत्न खचित मुकुट विराजित छल। मणि जड़ित झूमक ओ कर्णफूल कानक शोभा बढ़ाए रहल छल। आँखि कमल सन आयत छल। भन्हु पूर्णतः धनुषाकार छल। अधर लालिमा-युक्त छल। हाथमे मणि-खचित कंगना ओ डाँरमे किंकिणी पहिरने महालक्ष्मी ध्वजा-कमल-वज्र-अंकुश जवक चिन्हसँ युक्त विष्णुक चरण-कमलकेँ सप्रेम दबाए रहलि छलीहि। ई दृश्य देखि देवगणो धन्य भए गेलाह। ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, वरुण, कुबेर, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, नारद

गरुड़, मास, पक्ष ओ नक्षत्रादि सभ मिलि महालक्ष्मीसँ सेवित विष्णुक स्तुति करए लगलाह। ब्रह्मा ओ महेश करबद्ध भए कहए लगलाह—"हे नारायण! हे मधुसूदन!! कंसक अत्याचारसँ धरा व्याकुलि भए गेलि छथि। अहाँक शरणमे आइलि छथि, उद्धार कए दिअन्हु।" हुनका दूहू गोटाकेँ चुप भए गेला पर सभ देवता लोकनि सम्मिलित रूपेँ कहए लगलाह जे' हे परमेश्वर!' हमरा लोकनिक आब कोनो टा दशा बाँकी नहि रहल अछि। कंस हमरा लोकनिक यज्ञ भाग हरण कए लैत अछि। एहिसँ हमरा लोकनि निर्बल भए गेलहुँ अछि। हमरा लोकनि ओकर विरुद्ध आब किछु नहि कए सकैत छी। अतः हे नाथ! अहाँकेँ छोड़ि आब हमरा लोकनिक उद्धार केओ नहि कए सकैत अछि। हे ईश्वर! उद्धार करू।" पश्चात् देव-ऋषि नारद कहए लग-लथिन्ह जे "हे नाथ! ऋषि-मुनि पर तँ कंस अत्याचार कैए रहल अछि। ऋषि-मुनिक कोनहु कार्यकेँ निर्विघ्न ओ समाप्त नहि होमए दैत अछि। स्वधा-स्वाहा सभ कथूक कंस नाश कए देलक अछि। धर्मक तँ अस्तित्व उठि गेल अछि। अतः हे ईश्वर! हमरा लोकनिक उद्धार करू।" सभक अन्तमे गाइक रूप धारण कएने पृथ्वी कहए लगलीहि जे "हे पृथ्वीपते! अहाँक नाम आब सार्थक नहि रहि गेल अछि! हे नाथ! सत्ययुग ओ त्रेता-युगमे अहाँ जाहि कोनहु राक्षसादि केँ मारलहुँ, से सभ कंस आदि नाम धराए मथुरामे जन्म

लेलक अछि। ई राक्षस सभ निर्भीक भए गाए, ब्राह्मण ओ स्त्री आदिक निःसंकोच वध करैत अछि। एहि सभ पापक कारणे हम दबलि जाए रहलि छी। हमरा ई सभ आब सह्य नहि भए रहल अछि, अतः, हे लक्ष्मीनाथ! आब हम रसातल चलि जाएब।" एतबा कहैत-कहैत पृथ्वी थर-थर काँपए लगलीहि। आँखिसँ निर्बाध नोर खसए लगलैन्हि। पृथ्वीक ई दशा देखि भगवान विष्णु द्रवित भए उठलाह। करुणाभि-भूत भए कहए लगलाह जे "हे शिव-ब्रह्मादि सुरगण! हे नारद!! हे पृथ्वी!!! अहाँ लोकनि अधीर जुनि होउ। हम सभ किछु जनैत छी। अवश्य अहाँ लोकनिक कष्टकेँ दूर करब। अहाँ लोकनि ध्यान पूर्वक सुनैत जाउ। हम कृष्ण कहाए देवकीक आठम बालक भए कंस आदि असुरक संहार करब। अहाँ लोकनिकेँ यज्ञादिमे जेना जे अंश भेटैत छल, से सभ पुनः ओहिना भेटत।" पुनः पृथ्वीकेँ स्वतन्त्र रूपेँ महाप्रभु कहए लगलाह जे "हे सर्वंसहा! अहाँक कष्टक निवारण हम शीघ्रातिशीघ्र कए रहल छी। अहाँ चिन्ता जुनि करू। हम अवतार तखनहि लैत छी जखन हमर भक्तकेँ कोनो विशेष कष्ट होइत छैन्हि। गाए-ब्राह्मण तँ हमर दोसर रूपे थिक। कंस हमर द्रोही थिक। सेना ओ मन्त्री सहित हुनक हम नाश करब। शोणितसँ पृथ्वीकेँ हम लाल कए देब। चिन्ता धरि अहाँ नहि करू।" ई कहि भक्तवत्सल करुणा-सिन्धु नारायण चुप भए गेलाह। शिव-ब्रह्मा-सुरगण प्रसन्न

भए अपन-अपन धामकेँ ! विदा भेलाह पृथ्वी निश्चिन्त भए मर्त्य-लोक गेलीहि। मुदा नारदकेँ चैन कतए ? विनु झगड़ा लगओने तँ नारदकेँ पेटक अन्ने नहि पचैत छैन्हि ! भगवान् विष्णुक लगसँ उठलाह ओ सोझे कंसक दरवार पहुँचि गेलाह। ओतए जाए विष्णुक ओतए भेल सभ विषय कंसकेँ कहि देल। तत्पश्चात् अपना ओहिठाम गेलाह। मुदा कंसक माथ पर तँ काल नचैत छलैक। ओ नारदक गप पर कोनो ध्यान नहि देलक।

६

देवकी नामक कंसकेँ जे बहिनि छलथिन्हि ओ आब समर्थि भए गेलि छलीहि। अतः कंस आब हुनक विवाहक तैयारी करए लागल। स्थान-स्थान पर कदली-स्तम्भ गाड़ल गेल। सड़क सब गुलाब-जलसँ पटाओल गेल। वन्दनवार लगाओल गेल। विवाहक वेदी सुन्दर ढंगसँ सजाओल गेल। देवकीक विवाह वीर-पुंगव वसुदेवसँ निश्चित भेल छलैन्हि। वसुदेव अएलाह। पाणिग्रहण भए रहल छल। बन्दीजन कंसक गुणगान कए रहल छल। अनेको रूपक उत्सव भए रहल छल। देवकीक विदाक दिन प्राप्त भेला पर रत्न-जड़ित रथ आनल गेल। पाँचो बाजन बाजए लागल। वसुदेवक संग देवकी विदा भेलीहि। एही वेरमे आकाशवाणी भेल जे "हे अभिमानी कंस ! अहाँ कान खोलि कए सुनि लिअ।

अहाँक अत्याचारसँ पृथ्वी ओ पृथ्वी पर रहनिहार सकल मानव त्राहि-त्राहि कए रहल अछि। अतः देवकीक गर्भसँ जे आठम बालक जन्म लेत से अहाँक हेतु काल सिद्ध होएत। अहाँक नाश करत।"

एहि रूपक आकाशवाणी सुनि कंस आगू बढ़ि रथ रोकि देवकी ओ वसुदेवकेँ रथसँ घीचि नीचा उतारि देलक। झोंटा पकड़ि देवकीकेँ घिसिअबैत नीचा खसाए देलक। क्रोधसँ थर-थर कँपैत तरुआरि खींचि देवकी पर उसाहैत असुराधम कंस कहए लागल—"हे देवकी! अहाँ आकाशवाणी सुनलहुँ ने!! अहाँक आठम बालक हमर नाश करत!!! तेँ अहाँ गरदनि झुकाए लिअ। अहाँक गरदनि हम काटि लेब। ने रहत बाँस, ने बाजत बाँसुली। ने अहाँ रहब, ने अहाँक गर्भसँ आठम बालकक जन्म होएत।" अपन भाइक एहि रूपक वचन सुनि देवकी भयभीत भए उठलीहि। डरसँ थर-थर काँपए लगलीहि। एहन बुझि पड़ैत छल जेना सिंहक डरसँ हरिणी प्राण त्यागि रहल हो। देवकीकेँ काटि देबाक हेतु कंस तरुआरि ऊपर उठओलैन्हि। तरुआरि देवकीक गरदनि पर आब खसत, तब खसत; कि वसुदेव आगू बढ़ि हाथ जोड़ि कंसकेँ कहए लगलाह—"हे क्रोधावतार कंसराज! हम क्षत्रिय छी। अपन वचनसँ कखनहुँ नहि हटि सकैत छी। हम वचन दैत छी जे देवकीकेँ जे कोनो सन्तान होएतैन्हि से हम अहाँकेँ सुनझाओल करब। अहाँ जे आज्ञा देब तकर हम

सहर्ष पालन करब।" वसुदेवक एहि रूपक वचन सुनि देव-मायासँ कंस विमोहित भए गेलाह। हुनक चित्त किछु शान्त भए गेल। देवकी ओ वसुदेवकेँ बन्दी बनाए कारागृहमे बन्द कए कड़ा पहरा दए कंस निश्चिन्त भए गेलाह।

मदिरासँ भरल सोनाक कटोरा ठोरसँ सटबैत अट्टहास करैत कंस बाजि रहल छल जे "हमरा तँ आकाशवाणीक डर नहि अछि! केहन भगवान् छथि ओ कतए ओ रहैत छथि, ताहिसँ हमरा कोन!! हम तँ अपनहि ईश्वर छी। सभ देवगण हमरहि संकेत पर चलैत घुमैत छथि। हमरहि आज्ञासँ इन्द्र पानि बरिसबैत छथि। सूर्य-चन्द्र प्रकाश दैत छथि। हमहि ईश्वरक ऐश्वर्यकेँ भोगनिहार छी। हमरहि डरसँ देवगणकेँ विष्णुक शरण जाए पड़लैन्हि। ई तँ हमरा नारद कहिए देने छथि। मुदा हमरा तँ विष्णुक कोनो डरे नहि अछि।" ई कहैत-कहैत मध्य-मध्यमे कंस अपन भयङ्कर अट्टहाससँ आकाश-पातालकेँ दलमलित कए दैत छल। ओमहर कारागृहमे वन्दिनी देवकी व्याकुल भए नारायण-नारायण कए रहलि छलीहि। भगवान् विष्णुक आराधना करैत देवकीकेँ रहि-रहि मूर्च्छा भए-भए जाइत छलैन्हि। वसुदेव होश कराए-कराए सान्त्वना दैत छलथिन्ह।

वन्दिनी देवकीक आर्त्तनाद सुनि-सुनि भगवान् विष्णु चिन्तित भए रहल छलाह। साध्वी पतिव्रता अबला स्त्रीक

एहि रूपक करुण-क्रन्दन सूनि भगवान विष्णु विह्वल भए उठलाह। लगले योगमायाकेँ बजाए कहए लगलाह जे "हे योगमाये! सुनू। कंसक बहिनि देवकीक गर्भमे अहाँ पातालसँ क्रमशः छओ गोट असुर दए ओकर जन्म कराउ। हिनक गर्भसँ सातम बालकक रूपमे शेषावतार होएत। तदुत्तर देवकीक गर्भसँ आठम बालकक रूपमे हम अवतार लेब। नन्दक स्त्री यशोदाक गर्भमे अहाँ अवतरित होउ। संगहि ओहि कालमे अहाँ सभकेँ योगमायासँ अचेत कए देबैक। सभकेँ निद्राभिभूत कए देबैक। तेहन उपाय करब जाहिसँ हमर-अहाँक जन्मक कथा कंसकेँ शीघ्र नहि बुझल होइक।" एहि रूपेँ अनेक विषय भगवान विष्णु योग-मायाकेँ बुझाए देल।

समय बितए लागल। एक-एक कए देवकीकेँ सात गोट बालकक जन्म भेल। मुदा प्रत्येक बालकक जन्म भेला पर वसुदेव अपन क्षत्रियत्वक परिचय देल, कंसकेँ देल वचनक पूर्णतः पालन कएल। प्रत्येक बालकक जन्मक पश्चात् वसुदेव एकर सूचना कंसकेँ देल करथि। पहिल बालक लए तँ वसुदेव कंसक दरबारहि पहुँचि गेलाह। वसुदेव ओ बालक कंसकेँ सुनझाए देल। सभ केओ ओहि बालककेँ टकटकी लगाए देखि रहल छल। केओ कोनो कोनसँ बाजि उठल जे "हे कंसराज! ई बालक तँ निरपराध अछि। आकाशवाणीक अनुसार तँ आठम बालक अपराधी होएत। एहि निरपराध

नेनाकेँ छोड़ि दिऔक।" मुदा सर्वज्ञ नारद विचारल जे एहिसँ तँ कंस बाल-घातक पापसँ बचि जाएत। अतः ओही काल नारद वीणा बजबैत हरि-गुण गबैत कंसक दरबार आबि उपस्थित भए गेलाह। बालक दिशि तकैत नारद कंसकेँ कहए लगलाह जे "हे कंसराज! कमलक पत्तीकेँ कोम्हरहुसँ गनल जाए तँ ओ आठे होएत। एहिना पहिल ओ अन्तिम दूनू आठ भए सकैत अछि।" मदान्ध कंस नारदक गपमे पड़ि वसुदेवक हाथसँ ओहि बालककेँ लए पाथर पर पटकि मारि देल। नारद अपन सफलता पर प्रसन्न भए नारायण-नारायण कहैत ब्रह्मलोककेँ विदा भए गेलाह।

देवलोकमे देवगण त्राहि-त्राहि कए रहल छलाह। मुदा मथुराक असुरगण अपनाकेँ आइ धन्य बुझैत छल। कंसराज तँ आइ अपनाकेँ अमर बुझए लागल छलाह। ओ बुझैत छलाह जे ओ अपन कालकेँ मारि चुकलाह अछि। अतः ओ पूर्ण प्रसन्न छलाह कंसराजक दरबार आइ खूब सजल-धजल छल। झुण्डक झुण्ड सुन्दरी बाला हाथमे मदिरासँ भरल सोनाक कटोरा लए कंसराजकेँ मदिरा पिअएबाक लेल आइ अपनामे उपरौँझ कए रहलि छलि। कंसराज एहिना आनन्द पूर्वक दिन वितबए लागल। एक-एक कए छओ गोट बालक देवकीकेँ भेल ओ एक-एक कए कंस पाथर पर पटकि कए मारि प्रसन्न छल। देवकीक सातम गर्भ नष्ट भए गेल। मुदा किछु दिनुका पश्चात् देवकीकेँ आठम गर्भ

भेलैन्हि। ई सूनि कंस पहिने तँ किछु घबड़ाएल, मुदा पुनः सावधान भए सचेत भेल। कड़ा पहरा बैसाए देलक। प्रत्येक क्षणक सूचना लेमए लागल। ओमहर देवकीक गर्भ बढ़ैत गेल। मथुराक प्रत्येक मानव देवकीकेँ धन्य बुझि रहल छल जनिक गर्भमे नारायण अवतार लेल अछि।

७

कारागृहक चारू कात कड़ा पहरा छल। पहरूदार सब चिचिआ-चिचिआ पहरा दए रहल छल। एही पहरामे कतेको दिन ओ कतेको राति बिति गेल। ताबत आएल भादवक अन्हरिआ। अन्हरिआक अष्टमी तिथि। नक्षत्र छल रोहिणी। निशाभाग राति। अकस्मात् आकाशमे मेघ उमड़ि आएल। बुझि पड़ैत छल जेना आइ पृथिवी एकार्णवा भए जाएत। क्षण-क्षण पर बिजलोका चमकि रहल छल। ठनकाक ठनकबसँ जेना समस्त चराचर काँपि उठैत छल। किछु कालक पश्चात् मूसलाधार वर्षा सेहो होमए लागल। सरस शीतल बसातक झोँकासँ अलसाए पहरूदार सभ सेहो सूति रहल। मुदा ओही भयङ्कर निशा भाग रातिमे देवकी प्रसव-वेदनासँ व्याकुल भए उठलीहि। भयभीत भए परब्रह्म परमेश्वरक स्तुति करए लगलीहि—"हे ईश्वर! आब समय आबि गेल अछि जे अहाँ अपन वचनक पालन कए

हमरा लोकनिकेँ धन्य करी। अपन दर्शन दए हमरा लोकनिकेँ कृतकृत्य करू।" एतबहिमे ईश्वरीय आभासँ समस्त कारागृह आलोकित भए उठल। चित्तास्थ भए देवकी-वसुदेव देखल जे हुनका लोकनिक समक्ष भगवान् विष्णु विराजमान छथि। ओ चतुर्भुज छलाह। चारू हाथमे क्रमशः शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म धारण कएने छलाह। वनमालासँ सुशोभित भेल मन्द-मन्द बिहुँसैत कहए लगलाह जे "हे देवकी! अहाँकेँ एक गोट बालक होएत। ओहि बालककेँ अहाँ गोकुल जाए नन्दक ओतए राखि आएब। जखन अहाँ ओतए जाएब तँ यशोदाकेँ एक गोट कन्या भेल रहतैन्हि। ओहि कन्याकेँ लए अहाँ घुरि आएब।" ई कहि भगवान् चतुर्भुज अन्तर्धान भए गेलाह। मुदा ओमहर भगवान् चतुर्भुज अन्तर्धान भेलाह, एमहर देवकीकेँ आठम बालक, कंसक कालक जन्म भेल। ओहि बालकक वर्ण श्याम छल। शरीरसँ तेज छिटकि रहल छल। अत्यधिक सुन्दर एहि बालककेँ देखि देवकी-वसुदेव गद्-गद भए उठलाह। मुदा परिस्थितिक भयङ्करता देखि ओ भगवान् चतुर्भुजक आदेशक पालन कर्त्तव्य बुझि वसुदेव घबड़ाए रहल छलाह। ओ देवकीसँ कहलैन्हि जे "हे प्रिये! एखन आनन्दमे कर्त्तव्यकेँ बिसरबाक समय नहि अछि। कर्त्तव्यक समय इएह थिक। एहि नवजात शिशुकेँ हमरा दए दिअ। एखन कंसक अनुचर सभ सूतल अछि। कारागारक फाटक सभ खुजल अछि। हम एखने एहि बालककेँ

गोकुल जाए राखि अबैत छी।" ई कहैत वसुदेव ओहि सद्यः-प्रसूत शिशुकेँ एक छिट्टामे दए झाँपि-तोपि माथ पर लए बिदा भेलाह।

८

वसुदेव नवजात शिशुकेँ माथ पर नेने कारागृहसँ बाहर आबि बाट धए चल जाए रहल छलाह। भादवक अन्हरिआक अष्टमी तिथिक ओ राति मेघसँ एखनहु ओहिना अन्हारगुज्ज छल। रहि-रहि बिजलोकाक चमकब, ठनकाक ठनकब ओ मूसलाधार वर्षा एखनो ओहिना भयङ्कर बुझि पड़ि रहल छल। मुदा वसुदेव अपन प्राणकेँ तरहत्थी पर लए गोकुलक हेतु सोझे बढ़ल चल जाए रहल छलाह। ताबत आबि गेलाह यमुनाक कात। क्षणेक ठकमकएलाह; मुदा फेर यमुनामे प्रवेश कए वसुदेव अपन लक्ष्य पर बढ़ल चल जाए रहल छलाह। एमहर ई बूझि जे कमलापति भगवान् विष्णु जाए रहल छथि, हुनक चरण छूबाक लेल सूर्यपुत्री यमुना बढ़ए लगलीहि। ओमहर शेषनाग जखन ई बुझलैन्हि जे भगवान नारायण जाए रहल छथि तँ ओ अपन सहस्रो फणा पसारि, ओहि परक मणिसँ समस्त वातावरणकेँ प्रकाशित कए देल। बाट आब वसुदेवकेँ सूझए लगलैन्हि। मुदा यमुना-जल आब घुट्ठी, ठेहुन, डाँर ओ छाती होइत वसुदेवक गरदनि धरि पहुँचि गेल। नवजात शिशु डुबि ने जाए, तँ ओहि

छिट्टाकेँ वसुदेव आओरो उठाए कए धए लेल। एहिसँ यम-भगिनी यमुना परमेश्वरक चरण छूबाक लेल आओर वेसी उताहुल भए उठलीहि, आओर बढ़ए लगलीहि। मुदा भगवान् देखल जे आब वसुदेव डूबि जएताह। अतः अपन पाएर ओ छिट्टासँ नीचा लटकाए यमुनाकेँ ओकर स्पर्श कराए देल। भगवान्क चरण स्पर्श करितहिँ यमुना दू भागमे बँटि गेलीहि। बीच दए बाट बनि गेल। एहि रूपेँ यमुना पार कए वसुदेव गोकुल पहुँचि गेलाह। ओतए ओ नन्द-गृह सोझे गेलाह। योगमायाक प्रभावसँ नन्द-गृहमे सभ सूतल छल। सभ केओ अचेत छल। वसुदेव सोझे नन्दरानी यशोदाक शयन-गृह पहुँचि गेलाह। यशोदा अपन शयन-गृहमे पलङ्ग पर सुतलि छलीहि। यशोदाक सटले एक गोट नवजात कन्या पड़लि छलि। वसुदेव भगवान् चतुर्भुजक आदेनुशार अपन बालककेँ यशोदा लग सुताए ओ यशोदा लग सुतलि कन्याकेँ उठाए ओतएसँ विदा भए गेलाह। मुदा समस्त गोकुलक एकोगोट गोप ई घटना नहि देखि सकल। देखबो कोना करितए? योगमायाक प्रभाव जे छल।

एमहर नव-जात कन्या-रूपी योगमायाकेँ लए वसुदेव कारागृह पहुँचि गेलाह। हिनका गोकुलसँ घुरि कारागृह पहुँचैत देरी कारागारक फाटक सभ अपनहि बन्द भए गेल। योगमायाक प्रभाव हटि गेलासँ पहरूदार सभ आब जागि गेल छल। बिजलोकाक चमकब, ठनकाक ठनकब, ओ पानिक

पड़ब, सभ किछु बन्द भए गेल छल, आकाशसँ मेघ हटि गेल छल। वसुदेव देवकीसँ कहए लगलाह जे "हे प्रिये ! सूर्य सन तेजस्वी अहाँक पुत्रकेँ हम गोकुलमे राखि चन्द्रमुखी बालिकाकेँ अहाँक हेतु नेने अएलहुँ अछि। लिअ; एहि कन्याकेँ अहाँ अपन अङ्कसँ लगाए लिअ।" ई कहि वसुदेव ओहि कन्याकेँ देवकीक कोरमे दए देल। देवकीक कोरामे पड़लि ओ बालिका खूब जोरसँ कानि रहलि छलि। नव-जात शिशुक कानब सुनि पहरूदार सभ दौड़ल कंसक ओतए। कंसक अनुचर राजभवन जाए सूचित कएलक जे कंसक कालक जन्म भए गेल अछि। ई सूचना पबितहिँ कंस जँहि छलाह, तँहि दौड़लाह कारागृहक हेतु। वन्दी-गृह पहुँचलाह। देवकी-वसुदेव लग गेलाह। मुदा देवकीक कोरामे बालकक स्थानमे बालिका देखि कंस क्रोधसँ लाल भए उठल। थर-थर कँपैत कंस देवकी केँ गरजैत कहलक जे 'देवकी ! बाल-कक स्थानमे ई बालिका कतए सँ आबि गेल? तोँ निश्चय कोनो चलाकी कएलेँ अछि।" भयभीत भेल देवकी करुण क्रन्दन करैत कंससँ कहए लागलि जे "भैया ! हम तँ आठो पहर अहाँक कारागृहमे बन्द रहैत छी तखन हम चलाकी कोना कए सकैत छी ?" मुदा कंस ई नहि बुझैत छल जे विधिक विधान केओ नहि बदलि सकैत अछि। ओ क्रोधान्ध भए देवकीक कोरासँ ओहि चन्द्रमुखी बालिकाकेँ छीनि लेलक। पटकबाक मुद्रामे ओहि कन्याकेँ अपन हाथमे लए

कंस बाजए लागल जे "विष्णुक आकाशवाणी मिथ्या छल। ई बालिका एहि कारागारसे कतहुसँ उड़ि कए नहि आबि गेल अछि। ई विष्णुक माया थिक। अतः एकरहु हम आनहि बालक जकाँ पटकि कए मारि देब।" एतबा सुनितहिँ करुणाभिभूत भए देवकी कंससँ कहए लगलीहि जे "हे भाइ! ई तँ कन्या थिकि। ई अहाँक काल कहाँ थिकि, एकरा नहि मारिऔक।" मुदा अत्याचारी कंस ई सभ कतए सुननिहार छल? ओ कन्याकेँ लए पाथर पर पटकि देल। मुदा ओ कन्या कंसक द्वारा पटकल नहि भेल, ओकर हाथसँ छुटि आकाशमे उड़ि गेल। कंस आश्चर्य-चकित भए ऊपर तकैत छथि तँ देखैत छथि जे आकाशमे कन्याक स्थान पर अष्टभुजी भगवती दुर्गा सिंह पर बैसलि अत्यधिक सुशोभित भए रहलि छथि ओ अट्टहास करैत कंसकेँ कहलथिन्ह जे—

कथि लए कंस पटकलह मोरा।
जे जनमल से मारत तोरा॥

तोँ व्यर्थहि हमरा पटकलह। तोहर काल महाप्रभुक अवतार तँ भए गेलह अछि। तोहर काल गोकुलमे विराजमान छथुन्ह। तोहर नाश निश्चित छहु। तोँ व्यर्थहिँ देवकी वसुदेवकेँ कष्ट देत छहुन्ह" ई कहि योगमाया अन्तर्हित भए गेलीहि। कंस आश्चर्य सँ चकित भए देवकी वसुदेवकेँ कारागारसँ मुक्त कए देलक। पश्चात्ताप प्रकट करैत कंस देवकी-वसुदेवसँ क्षमा माँगए लागल। मुदा आब की? "का वर्षा जब कृषी सुखाने, बीत गये पुनि का पछताने।"

६

गोकुल ! गोकुल की छल, बुझू असंख्य गोप ओ गाइक नगरी छल। ओतए एहि असंख्य गोप ओ असंख्य गाइक राजा छलाह नन्द महर। एहि नन्द महरकेँ धन छलैन्हि, जन छलैन्हि ओ सकल ऐश्वर्य छलैन्हि। मुदा एकेगोट वस्तु नहि छलैन्हि; तेँ ई सभ सुख-सम्पत्ति हुनका काँट जकाँ गड़ैत छलैन्हि। नन्द महर आब चारिम पनमे आबि गेल छलाह, मुदा एखन धरि सन्तानक मुह नहि देखने छलाह ओ एहि लेल व्याकुल छलाह। सन्तान पएबाक लेल नन्द महर की की नहि कएलैन्हि ? दान कएलैन्हि। पुण्य कएलैन्हि। मुनि महात्माक आशिष लेलैन्हि। मुदा सन्तोषक बात एतबए जे अन्तमे सभ नन्द महरकेँ सफल भेलैन्हि। मनोरथ पूर्ण भेलैन्हि। नन्दक महरी यशोदा गर्भवती भेलीहि। ई शुभ संवाद सम्पूर्ण गोकुलमे पसरि गेल। सभ प्रसन्न छल; सभ आनन्दित छल। आओर उत्साहसँ राति-दिन दान-पुण्य ओ पूजा-पाठ होअए लागल। यशोदाकेँ पूर्ण समय भए गेल। दिन-प्रतिदिन सकल गोकुल, विशेष कए नन्द यशोदा, नवजात शिशुक अत्यन्त उत्सुकतासँ प्रतीक्षा कए रहल छलाह। भादवक मास आएल। रोहिणी नक्षत्र छल। अन्हरिआक अष्टमी तिथिकेँ सभ देखलक जे यशोदाक गर्भसँ एक अत्यन्त सुन्दर बालकक जन्म भेल अछि। शिशुक शरीरक कान्ति श्याम वर्णक छल। मुदा ओकर तेजसँ समस्त प्रसूतिका-गृह प्रकाशित भए गेल छल। नवजात शिशु सहज स्वाभाविक

रीतिसँ कानि रहल छल। कोनो अनुचरी ई सूचना गोपराज नन्द महरकेँ दए आइलि। सुनैत देरी नन्दराज गद् गद भए प्रसूतिका-गृह दौड़ल अएलाह। अलौकिक आभासँ युक्त बालकक मुख-मण्डल देखि नन्द महर ब्रह्मानन्दक अनुभव करए लगलाह। मनहि मन ई सोचैत जे "धन्य परमपिता परमेश्वर जे एहन सुन्दर बालक भेल" नन्द महर प्रसूतिका गृहसँ बाहर अएलाह। दीन-दुःखीकेँ अन्न-वस्त्र बाँटल। बच्छा सहित एक लाख गाए ब्राह्मणकेँ दान देल। बालकक नार छिलनिहारि दगरिनकेँ सोन ओ पटोर देल। एमहर यशोदा बालकक मुह देखि आनन्दसँ गद्गद भए रहलि छलीहि।

समय प्राप्त भेला पर नन्द महर बालकक जात-कर्म-संस्कार कएल। आकाशसँ फूलक वर्षा होअए लागल। आकाशमे दुन्दुभी बाजए लागल। सहस्रो गोपिका रत्न-जड़ित सोनाक थारमे आरती साजि आइलि। बालकक आरती उतारलक, उबटन लगओलक, अत्तर-गुलाल-कुंकुमसँ सुसज्जित कएलक। बालककेँ पीअर वस्त्र पहिरओलक। रत्नमय आभूषण पहिराओल गेल। तदुत्तर नन्द महर बालकक नामकरण कएल। नाम भेल कृष्ण। वन्दी जन गुण-गान करए लागल। अलक्षित रूपसँ देवगण ओहि बालक रूप परमेश्वरक दर्शन करए अएलाह। बालकक लेल सोनाक पालना आएल। रत्नजड़ित ओहि पालना पर बालक कृष्णकेँ सुताए गोपिका सभ हुनका झुलबए लागलि। यशोदा स्तन-

पान करबए लगलीहि। धन्य यशोदा जे साक्षात् त्रिभुवन-नाथकेँ स्तन-पान कराए रहलि छथि। धन्य ब्रज-ललना जे महाप्रभुकेँ पालनासे झुलाए रहलि अछि।

किछु दिनुका बाद वीणा बजबैत देवर्षि नारद नन्द राजाक ओतए अएलाह। पूर्ण आदर-सत्कार कए नन्दराज हुनकासँ ओतए अएबाक कारण पूछल। नारद बालक कृष्णकेँ देखबाक इच्छा व्यक्त कएल। लगले नन्दराज आङनसँ बालककेँ अनबाए नारद लग लए गेलाह। नारद एक टक भए बालक दिशि देखि रहल छलाह। नारदक आगाँ बालक कृष्ण जे श्याम वर्णक छलाह पीअर वस्त्र पहिरने अद्भुत लागि रहल छलाह। नन्दराजक कोरामे पड़ल बालक कृष्ण एक टकसँ नारद दिशि तकैत विहुँसि रहल छलाह। बालक कृष्णक केश औँठिआ छल। हाथ कनिऐ ट–टा छलैन्हि। कपार पर केसरि-कुंकुमक तिलक कएल छल। ओकर नीचा काजरक ठोप अद्भुत लागि रहल छल। भौँह धनुषाकार लगैत छल। आँखिमे कमलक शोभा विराजमान छल। लालिमासँ परिपूर्ण पाएरमे वज्र-अंकुश-चक्र-कमल-जवक चिह्न स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित भए रहल छल। पाएरक अङुठा हाथसँ पकड़ि मुहमे लए चाटि रहल छलाह। कृष्णक ई स्वरूप देखि नारद ब्रह्मानन्दक अनुभव कए रहल छलाह। मनहि मन सोचि रहल छलाह जे "आब धराक भार हरण होएत।" नारद व्यक्त रूपेँ नन्दराजसँ कहल जे 'हे नन्द! अहाँ धन्य छी जे एहि रूपक बालक अहाँक घरमे जन्म लेलैन्हि

अछि। ई राक्षसादिक नाश करताह। गो-ब्राह्मणक उद्धार करताह।" ई कहि नारद ओहि बालक कृष्णक पाएर छूबि प्रणाम कए ब्रह्मलोककें चल गेलाह। कृष्णावतारक ई कथा नारद सभकें कहि देल

एहि बालकक जन्मोत्सवक क्रममे गोकुलमे घरे घर वन्दनवार सजाओल गेल। कलश लगाओल गेल। गीत-नाद होअए लागल। नाच-गान होअए लागल। नन्दरानी यशोदा सभ दिन कृष्णकें सोना निहुँछि गोपिका सभकें दैत छलीहि। रोहिणी सेहो यशोदाक सदृशे मिलनसारि रानी छलीहि। ओ बलरामकें आनि श्रीकृष्णक लग पालना पर सुताए दैत छलीहि। बलराम श्रीकृष्णसँ किछु पैघ छलाह। गौर वर्णक छलाह।

प्रत्यह नन्द-गृहमे उत्सव होइत छल। याचक सभ पर्याप्त धन पाबि आब अयाचक भए गेल छल। गोकुल स्वर्गहुसँ बढ़ि-चढ़ि सुख-सुविधाक धाम भए गेल। किएक ने होइत? गोकुलमे साक्षात् परब्रह्म तँ अवतरित भेल छलाह। परब्रह्मक जन्म होइतहिँ गोकुलमे नबो निधि ओ आठो सिद्धिक निवास भए गेल छल। तखन किएक ने गोकुलक गोपग्वालिन आनन्दसँ नचैति ओ मणि-काञ्चन लुटबैति!

इएह थिक बालक श्रीकृष्णक रूपमे परमात्मा परब्रह्मक जन्म-लीलाक संक्षिप्त कथा। धन्य यशोदा ओ धन्य नन्द!

जयतु श्रीकृष्णः।
श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

—:o:—

२

श्रीकृष्ण-बाल-लीला

१

मथुराक राजमहल, खूब सजल-धजल सभा-भवन, एक कातमे रत्न-जड़ित सोनाक सिंहासन, सिंहासनक आगू काज कएल बिछाओल फर्श, फर्श पर बैसल सकल सभासद एक टकसँ ताकि रहल मथुराक राजगद्दी दिशि, राजगद्दी पर बैसल राजा कंस दिशि जकर अत्याचारसँ नेना ओ स्त्रीक कोन कथा, सकल सुरासुर डरेँ त्रस्त छल, जकर अनीतिसँ सृष्टिक अस्तित्वे सन्दिग्ध भए गेल छल; तकर आज्ञा ग्रहण करबाक लेल सकल सभासद हाथ जोड़ने बैसल छल। ओहि कामुक कंसकेँ षोड़शी सुन्दरी चओर डोलबैत छलैन्हि। सुन्दरी युवतीक एक समूह हाथमे सोनाक कटोरामे मदिरा रखने राजगद्दी पर बैसल कंसराजकेँ अर्द्धचन्द्राकार रूपसे घेरने ठाढ़ि छलि। रहि-रहि कए ओ सुर-सुन्दरी सभ कंस राजक ठोरसँ मदिरा-भरल सोनाक कटोरा सटाए दैत छलैन्हि। मदिरासँ उन्मत्त डोका सनक लाल-लाल आँखिसँ कंसराज अपना आगाँमे होइत स्वर्गीय नर्तकीक अलौकिक नाच देखि झूमि रहल छलाह! ओही कालमे हहाएल-फुहाएल ओतए

पहुँचलाह नारद। कंसराज नारदकें आदर-सत्कार पूर्वक बैसओलैन्हि। संसारक हाल समाचार पुछला पर नारद कंसकँ कहए लगलाह "हे कंसराज! अहाँ जे आकाशवाणी सुनने रही, से मिथ्या नहि भेल अछि। अहाँक कालक जन्म गोकुलमे नन्दक ओतए भए गेल अछि। बड़ सुन्दर नेना छैक। श्याम वर्णक, ईश्वरीय आभासँ युक्त।" एतबा सुनैत देरी रंगमे भंग भए गेल। रङ्ग-रभसक ओ सभा उठि गेल। तामसेँ कंस थर-थर काँपए लागल। पूतना कें बजबए पठाओल गेल।

२

पूतना कंस रायक दरबारमे उपस्थित भेलि। बालकृष्णकेँ मारबाक योजना बनबैत कंस पूतना केँ कहल "हए पूतना! तोँ अपन दूनू स्तनमे विष लगाए गोकुल जाह। गोकुल जाए नन्द महरक घरक पता लगाए लिहह। नन्दक ओहिठाम श्याम वर्णक एक गोट बालक छैक। ओकरा ताकि अपन माया पसारि आवेससँ कोरा लए अपन विषाक्त दूध पिआए ओकरा मारि तोँ भागि आबह।" "जे आज्ञा" कहि पूतना अपन मायासँ पूर्ण सुन्दरी गोकुलक गोपिकाक रूप बनाए विदा भेलि। राति भेला उत्तर अन्हारमे गोपिका-रूप-धारिणी मायाविनी पूतना पहुँचलि गोकुल। गोकुलक घरे घर श्याम वर्णक बालक तकलक मुदा ओकरा समस्त गोकुलमे एकोगोट

श्याम वर्णक बालक नहि भेटलैक। अन्तमे पहुँचल नन्द महरक घर। ओहि निशा भाग रातिमे किएक केओ जागल रहत? यशोदा सँ लए सब दासी परिचारिका सुतलि छलि। मुदा श्याम वर्णक बालक कृष्ण ओहू निशा भाग रातिमे रत्न-जड़ित पलंग पर उतान भेल पड़ल अपन दूनू हाथसँ दहिना पाएरक अंगुठाकेँ मुहमे लए चुसैत टुक टुक ताकि रहल छलाह। मायाविनी पूतना रूपवती भेलि दुलारसँ कृष्णकेँ अपना कोरा मे लए अपन विष लागल दूध पिआबए लागलि। बालक कृष्ण हँसैत विहुँसैत पूतनाक स्तन पान करए लगलाह। किछुए काल दूध घएना भेल छलैन्हि कि गोपिका-रूप-धारिणी पूतना पत्रहीन ठुट्ठ शाखा बला वृक्ष जकाँ कंकालवत् राक्षसीक रूपमे परिणत भए गेलि। आओर किछु कालक पश्चात् ओ सुखाएल गाछ जकाँ अरड़ा कए खसि पड़लि। ओकर खसबाक जे भयंकर शब्द भेल ताहिसँ सम्पूर्ण घर जागि गेल। यशोदा चेहाए उठलीहि। पलंग पर बालक कृष्णकेँ नहि देखि काँपि उठलीहि। मुदा सहसा आँखि पड़लैन्हि लगहिमे वृक्षाकार पूतना राक्षसीक उतान भेल पड़ल शरीर पर। पूतनाक छाती पर पड़ल आनन्दसँ ओकर दूध पीबि रहल छलाह कृष्ण। एक बेर फेर यशोदा काँपि उठलीहि। मुदा साहस कए पूतनाक छाती परसँ कृष्णकेँ उठाए लेल। कृष्णकेँ कुशाक लेप नहि लागल छल से देखि यशोदा आश्वस्त भेलीहि। आब पूतनाक दिशि लोकक ध्यान गेलैक। बेरा-बेरी सभ देखलक

मुदा पश्चात् एकमतसँ निश्चित भेल जे राक्षसी मरि गेलि अछि।

यशोदा एकरा कृष्णक पुनर्जन्म बुझलैन्हि। हुनक चुम्बन कएलैन्हि। हुनका अपन दूध पिअओलैन्हि। गाइक नाङरिसँ झाड़लैन्हि। अन्नदान ओ वस्त्रदान कए ब्राह्मणकेँ देलैन्हि। कृष्णक निछाउर गोपाङ्गना लोकनिकेँ देल। बच्छा सहित गाइक दान कएल। मुदा रातिमे भेल ओहि उत्पातसँ नन्द-यशोदाकेँ बुझबामे भाङठ नहि रहलैन्हि जे ओहि राक्षसीकेँ कृष्णक वध करबाक लेल कंस पठओने छल। धन्य कुलदेव गणेश, जे बालक कृष्णक प्राण बचि गेल।

३

ओमहर पूतनाक मृत्युक समाचार सूनि कंस उदास भए गेल। ओकर पहिल गोली हूसि गेलैक। मुदा अत्याचारीकेँ शान्ति कतए? ओ पुनः प्रल्वासुर नामक राक्षसकेँ बज-बओलक। कृष्णकेँ मारबाक योजना बुझबैत कंस ओकरा कहलक जे "हे मित्र। गोकुलमे एक गोट अत्यधिक बलवान् बालकक जन्म भेल अछि। ओकरा मारब आवश्यक। तेँ, हे मित्र, अहाँ गोकुल जाउ। ओतए जाए जेना-तेना ओहि बालककेँ लए अहाँ आकाशमे उड़ि जाएब। ऊपर गेलापर ओहि बालककेँ पृथ्वी पर पटकि देबैक जे ओ मरि जाए।" कंसक आदेश सूनि "जे आज्ञा" कहि प्रल्वासुर गोकुलकेँ विदा

भेल। प्रल्वासुर एक सुन्दर सुपुरुषक रूप बनाए गोकुल गेल। ओ ओहि नवजात शिशुकेँ तकैत-तकैत नन्दक घर पहुँचल। नन्दक आङ्गन-बहरी सभ शून्य छल, यशोदो कतहु गेलि छलीहि। उपयुक्त अवसर बूझि प्रल्वासुर नन्दक घरमे प्रवेश कएल। ओहि शून्य घरमे एक मासक बालक कृष्ण एकसरे पड़ल खेलाए रहल छलाह। हुनका उठाए प्रल्वासुर आकाशमे उड़ि गेल। मुदा ओ अलौकिक बालक कृष्ण अपन दूनू बाँहिसँ प्रल्वासुरक गरदनिकेँ ततेक ने कसिकेँ पकड़ि लेलैन्हि जे थोड़ेक ऊपर जाइत-जाइत ओकर कण्ठ दाबल जाए लगलैक। किछु कालक पश्चात् ओकर कण्ठ अवरुद्ध भए गेलैक; श्वास चलब बन्द भए गेलैक। अन्तमे ओ आकाशहिमे मरि अधोमुख भए पृथ्वी पर खसए लागल। प्रल्वासुरकेँ पृथ्वी पर खसैत देरी महाभयङ्कर शब्द भेल। गोकुलक गली-गलीमे ओ भयङ्कर शब्द प्रतिध्वनित भए उठल। धरती एक वेर फेर काँपि उठल। सभ केओ दौड़ल। देखलक भीड़ जकाँ पड़ल प्रल्वासुरकेँ ओ ओकर गरदनिकेँ अपन दूनू बाँहिसँ कसि कए पकड़ने कृष्णकेँ। यशोदा दौड़लीहि, ओकरा गरदनिसँ कृष्णक बाँहि छोड़ाए हुनका कोराकेँ लए लेल। गाइक नाङरिसँ कृष्णकें झरबाए राक्षसक स्पर्शजन्य अशुभ-शंकासँ निश्चिन्त भए यशोदा बच्छा सहित गाइक दान कएल, ब्राह्मणकेँ दान देल। स्नेहार्द्र भए वेर-वेर कृष्णकेँ चूमए लगलीहि। हुनका अपन दूध धराए देल, भगवानकेँ गोहराबए लगलीहि "जे हे

भगवान् ! हमर कान्हकेँ नीके ना रखिऔक।" सभक हृदयसे एतबए छल जे "धन्य यशोदा जनिका कोरामे कृष्ण सन बालक खेलाइत रहैत अछि। धन्य बालमुकुन्द ! धन्य श्रीकृष्ण !!

४

पुनः कंसक दरबारमे हाहाकार मचि गेल। प्रल्वासुरकेँ मारल जएबाक समाचार समस्त मथुरामे बिजली जकाँ पसरि गेल। कंसक चिन्ता दिन-दिन बढ़ल जाइत छल, प्रल्वासुरक दुःखद मृत्युक समाचार सूनि कंस दू गोट महाबल-शाली राक्षसकेँ बजबओलक, आदेश दैत ओ कहलक जे "हे अनुचर गण ! गोकुलसे एक गोट छओ मासक श्याम वर्णक बालक अछि जे अत्यधिक बलशाली अछि। ओकरा मारब आवश्यक अछि। तेँ अहाँ दूनू गोटे मनमोहक बड़दक रूप बनाए नाना प्रकारक खेलओनासँ भरल गाड़ी अपना पर जोतबाए गोकुल चल जाउ ओ ओहि बालककेँ अवसर पाबि मारि आउ।" आज्ञा पाबि दूनू राक्षस आकर्षक बड़दक रूप बनाए खेलओनासँ भरल गाड़ीक जूआ अपन कान्ह पर उठाए गोकुल दिशिकेँ विदा भेल। ओ बड़दक गाड़ी जाइत-जाइत पहुँचल नन्दक दरबाजा पर। नन्दक दरबाजा पर गोपालबाल सभ खेलाए रहल छल ओ लगहिसे पड़ल कृष्ण गोपाल-बालक खेल-धूप देखि देखि हाथ पाएर फेकि फेकि खिलखिला

खिलखिला हँसि रहल छलाह। खेलओनासँ भरल गाड़ी केँ देखि सभ गोपबाल आनन्दसँ चिचिआए लागल जे "केहन सुन्दर बड़द अछि! केहन सुन्दर खेलओना अछि!! ई खेल-ओना सभ कृष्ण बलराम केँ भेटि जइतैक, तँ खूब खेलइतहुँ।" सभ खेलएबामे मग्न छल। कोनो सेआन व्यक्ति सेहो ओतए नहि छल। अतः उपयुक्त अवसर बूझि ओ दूनू बड़द कनिए-कनिए ससरि बालक कृष्णक लग जाए अपन पाएर हुनक छाती पर दए हुनका मारि देबा पर उद्यत भए गेल। मुदा जावत दूनू बड़द बालक कृष्णक छाती पर पाएर राखए-राखए, ताबत कृष्ण अपन दूनू पाएरसं बड़द सहित गाड़ी केँ तेनाकेँ धकेलि देलथिन्ह जे दूनू बड़द तर पड़ि गेल ओ ओकर ऊपर मे खेलओनासँ भरल गाड़ी पड़ल छल। खसैत देरी बड़दा-कार दूनू राक्षस असुरक रूपमे परिणत भए गेल ओ खसबाक चोटसँ ठामहि मरि गेल। बड़दाकार ओहि दूनू राक्षसकेँ पृथ्वी पर खसलासँ महा भयङ्कर शब्द भेल। सभ केओ दौड़ल। नन्द अएलाह। यशोदा अइलीहि। सभकेओ पहाड़ सन मुइल पड़ल दू गोट भयङ्कर राक्षसकेँ देखलक। उनटल गाड़ी देखलक। सभकेओ एक-दोसराकेँ पूछए लागल जे "ओ दूनू सुन्दर बड़द की भेल? एहि गाड़ीकेँ के उनटाए देलक?" खेलाइत-धुपाइत ओ गोपबाल सभ भयभीत भए कहए लागल जे "हम सभ किछु नहि कएलिऐक अछि। इएह कृष्णजी अपन पाएरसँ गाड़ी केँ ठेलि देलथिन्ह अछि।

ई राक्षस हिनका मारए आएल छल। इएह राक्षस बड़दक रूप बनाए आएल छल। कृष्णजीक पाएरसँ खसल ओएह बड़द राक्षस भए गेल अछि।" गोप बालकक एहि रूपक उक्ति सूनि सभ केओ आश्चर्यचकित छल। अद्भुत कथा! सभ केओ एक-दोसरा दिशि ताकए लागल। सभक आँखिमे विस्मयक भाव स्पष्टतः परिलक्षित भए रहल छल। यशोदा दौड़ि कृष्णकेँ उठाए छातीसँ लगाए लेल। बेर-बेर कृष्णकेँ चूमए लगलीहि। सोन-रत्नादिसँ कृष्णकेँ निहुँछि दीन-दुःखीकेँ बाँटि देल। गणेशकेँ लड्डू चढ़औलेन्हि। दूबि ओ फूलसँ देवी-देवताक पूजन कए कृष्णक शुभ-कामना कएल। ओमहर डेराएल नन्द सेहो सदाव्रत आदि करए लगलाह। मुदा दिन-दिन कंसक बढ़ैत अत्याचार देखि बुढ़-बूढ़ानुस गोप लोकनि सेहो क्रमशः बेसी चिन्तित रहए लगलाह।

एमहर कृष्ण शुक्ल-पक्षक चन्द्रमा जकाँ दिन दिन बढ़ए लगलाह। घुसकैत-घुसकैत ओ आब ठेहुनिआ देबए लागल छलाह। बलरामक संग खूब खेलाए धुपाए लागल छलाह। कखनहु ई लोकनि दही बूझि चून खाए लेथि तँ कखनहु लाल देखि आगिएकेँ उठाए लेथि। जहाँ कतहु गोप-बधू दूध-दही रखैत छल, कृष्ण ओ बलराम लगले ओकरा उनटाए नष्ट कए दैत छलाह। जाहि गोप बधूक दूध हेरा-इत छलैक से दौड़ैत छलि उलहन देअए यशोदाकेँ—"हे यशोदे! अपन बेटाकेँ बरजि लिअ। आब दोसर दिन

दूध हेरओताह तँ नहि नीक होएत!" मुदा यशोदा उत्तर की देथिन्ह? यशोदा ओ रोहिणी तँ अपन-अपन बेटासँ अपनहि अकच्छ भए गेलि छलीहि। तँ गोप-वधूक उल-हनकेँ हँसि कए उड़ाए देब छोड़ि हुनका लोकनिकेँ दोसर कोनो उपाय नहि छलैन्हि।

५

एहिना एक दिनक हाल सुनू कृष्णक। कोनो पाबनि रहैक। यशोदा पाबनिक ओरिआओनमे व्यस्त छलीहि। बस, आब की छल! कृष्ण छूटि कए खेलाए लगलाह। कोनो वस्तु यथावत् नहि रहए देबाक जेना कृष्ण आइ शपथ खाए नेने छलाह! अकच्छ भए अन्तमे यशोदा कृष्णकेँ पकड़ि ऊखड़िमे बान्हए लगलीहि। खूब मजगूत डोरी अपनहिसँ ताकि अनलैन्हि। मुदा कृष्ण की कोनो मनुष्यक बच्चा छलाह! जएह डोरी यशोदा ताकि आनथि, सएह दू आङ्ुर छोट भए जान्हि। अन्तमे यशोदा डोरीक टुकड़ी सभकेँ जोड़ि कृष्णकेँ बन्हबाक विचार कएलैन्हि। मुदा तइओ दू आङ्ुर डोरी छोटे भए गेलैन्हि। तमसाए यशोदा ताकि-ताकि डोरि मङबाबए लगलीहि। मुदा तइओ दू आङ्ुर छोटे भए गेलैन्हि। अन्तमे समस्त गोकुलक डोरीक ढ़ेर लागि गेल। मुदा तइओ दू आङ्ुर छोटे भए गेलैन्हि। आब की करितथि? मुदा ताबत कृष्ण अपन भाभट समटि लेलैन्हि।

यशोदा कृष्णक डाँरमे डोरी बान्हि ऊखड़िमे डोरी फँसाए निश्चिन्त भए काज करए चल गेलीहि। मुदा कृष्ण की कतहु चेन रहथि! एमहर-ओमहर तकलैन्हि। कतहु ककरहु नहि देखि ऊखरि घिसिअबैत कृष्ण क्रमशः घुसकए लगलाह। घुसकैत-घुसकैत कृष्ण बाहरक दू गाछक मध्य होइत आगू बढ़ि गेलाह। मुदा हुनक डाँरमे बान्हल ऊखरि ओहि दूनू गाछमे ठेकि गेल। आब कृष्णकेँ आगू घुसकिए नहि होइन्हि। कछ-मछ करए लगलाह। अन्तमे कृष्ण जोर लगाए आगू बढ़बाक प्रयास करए लगलाह। एक बेर कृष्ण खूब जोर कएलैन्हि। एहिसँ आगू तँ ओ अवश्य बढ़ि गेलाह, मुदा जाहि दूनू गाछमे ऊखड़ि ठेकल छल, सेहो जड़ि-मूलसँ उपरि कए खसि पड़ल। ओहि दूनू वृक्षकेँ खसैत देरी ओकर जड़िसँ यमलार्जुन प्रकट भेलाह। दूहूक रूप दिव्य पुरुषक छल। सुन्दर-सुगठित शरीर। अलौकिक आभा। मुदा ओहो लोकनि एहि श्याम वर्णक बालक कृष्णकेँ एकटकसँ देखए लगलाह। कृष्ण ठेहुनिआ देने खसल गाछ दिशि ताकि रहल छलाह, डाँरमे रस्सी बान्हल छलैन्हि जकर दोसर छोर ऊखरिमे बान्हल छल। आब मणिमय कुण्डल, मयूर-पुच्छ, चकुठा आदिसँ सुसज्जित कमल सन आँखि, धनुष सन भौँह, सूगाक लोल सन नाक ओ तिलकोरा-फड़ सन ठोर पर बिहुँसीक कारणे दन्तावलीक आभा छिटकबैत यमलार्जुन दिशि ताकि रहल छलाह। यमलार्जुन अन्तर्दृष्टिसँ बाल

मुकुन्दकेँ चीन्हि हाथ जोड़ि स्तुति करए लागल—"हे अच्युत ! हे माधव !! हम ऋषिक शापसँ वृक्ष भए जड़वत् भए गेल छलहुँ। आब अहाँक दया ओ कृपासँ दिव्य पुरुषक रूप पाबि हम इन्द्रपुरी जाए रहल छी। धन्य बाल मुकुन्द ? अहाँ धन्य छी !! देव-कार्यक लेल अहाँ अवतार लैत छी !!!" बाल मुकुन्द श्रीकृष्णक जय-जयकार करैत ओ दूनू दिव्य पुरुष अन्तर्धान भए गेलाह।

एमहर वृक्षकेँ खसलासँ महा भयङ्कर शब्द भेल। सभ दौड़ल। छेगाएल मन। कृष्णकेँ तकैत यशोदो दौड़ि अइलीहि। मुदा ऊखड़िमे बान्हि जतए कृष्णकेँ राखि आइलि छलीहि, ततए कृष्णकेँ नहि देखि यशोदा आओरो अधिक चिन्तित भए उठलीहि। चारू दिशि ताकए लगलीहि। अन्तमे देखल कृष्णकेँ खसल यमलार्जुन वृक्ष लग। ओहिना ऊखड़िमे बान्हल छलाह। यशोदा दौड़ि कृष्णक डाँरसँ रस्सी खोलि हुनका कोरामे उठाए लेल। छातीसँ सटाए कतेको बेर मुख-चुम्बन कएल। अपन दूध धराए देल। नन्द सेहो ओतए आबि कृष्णक दुलार करए लगलाह। कोराकेँ लेल। चुम्बन कएल। एही दिनसँ कृष्ण दामोदर नामे प्रसिद्ध भए गेलाह। जनिक पेटमे रस्सी बान्हल जाए, सएह भेलाह दामोदर। मुदा धन्य यशोदा ! जे संसारक सकल बन्धनकेँ कटैत छथि, तनिका रस्सीसँ बान्हि ऊखड़िमे खुटेसि देल।

६

जखन कृष्ण डेगाडेगी दैत क्रमशः चलए लगलाह तखन यशोदा एक दिन हुनका खूब पुष्ट कए मक्खन-मिसरी खाए देलथिन्ह। मुदा कृष्ण की कएलैन्हि तँ ओहि सभटा मक्खन-मिसरीकेँ कौआ ओ बानरकेँ खोआए देल। मक्खन-मिसरीक बदलामे अपने माटि खाए लगलाह। कृष्णक एहि रूपक क्रिया देखि यशोदा डपटिकेँ कृष्णकेँ कहए लगलीहि जे "कृष्ण! दिन-दिन अहाँ उद्दण्ड भेल जाए रहल छी। ई नीक बात नहि थिक। आइ अहाँकेँ किछु खएबा ले नहि भेटत।" ई कहि यशोदा कृष्णक हाथ बान्हि ठेङा देखाए हुनका डेरबए लगलीहि। माइक उग्र रूप देखि आइ श्रीकृष्णो डेराए गेल छलाह। भयभीत भए यशोदासँ कहए लगलाह जे "माए, देखू तँ हम माटि कहाँ खएलहुँ अछि। हम तँ मक्खन-मिसरी खएलहुँ अछि।" एहि पर यशोदा कृष्णकेँ मुह बबबाक हेतु कहैत कहए लगलीहि जे "झुट्ठा कहीँके! बात बनबैत छथि। खेलैन्हि अछि माटि, कहैत छथि केहन जे मक्खन-मिसरी खएलहुँ अछि।" यशोदाक एहि रूपक तमसाएल गप सूनि कृष्ण थर थर काँपए लगलाह। धन्य यशोदा! जनिक डरसँ दशो दिक्पाल, सूर्य, चन्द्र आदि कँपैत रहैत अछि, से यशोदाक कोमल वचनसँ काँपि रहल छथि। धन्य मायापति प्रभु! मुदा करताह की? डरेँ कृष्ण अपन मुह

बावि यशोदाकेँ देखबए लगैत छथिन्ह। यशोदा हुनक मुह दिशि तकैत छथि तँ देखैत छथि जे कृष्णक मुहमे तालुक ऊपर भू-लोक, भुवर्लोक ओ स्वर्लोक अछि ओ तालुक नीचा पाताल-तल-वितल-नाग-यक्ष-किन्नर-सुरासुर-सेवित गो-लोक ओ कतेको कृष्ण-यशोदा ढ़हनाए रहल छथि। ओहि लोक सभक कतहु आदि-अन्त नहि। कृष्णक एहि विराट रूपकेँ देखि यशोदा हुनका करबद्ध भए प्रणाम करए लगलीहि। मुदा कृष्ण पुनः लगले यशोदाकेँ मायासँ आवृत कए देलैन्हि। यशोदा पुनः पूर्ववते कृष्णकेँ कोरामे उठाए लेल। दुलार करए लगलीहि। नन्द सेहो आङ्ुर पकड़ि टहलबए-बुलबए लगलथिन्ह। बलराम ओ गोप बालक सङ्ग कृष्ण आब घूरा-माटि खेलाए लागल छलाह। आब कृष्ण वेस टेल्हगर भए गेल छलाह। अवस्थो आब पाँच वर्षक भए गेल छलैन्हि। कृष्णक बाल सुलभ चंचलता तँ आब आओर चमत्कार देख-बए लागल। गोपवधू लोकनि दूध मथि मट्ठा मक्खन आदि सीक पर राखि अबैत छलीहि ओ कृष्ण गोपाल बालकेँ हाथी बनाए ओकर पीठ पर ठाढ़ भए मट्ठा-मक्खन सीक परसँ उतारि सभ मिलि खाए लैत छलाह। केओ-केओ गोप तँ कृष्णक हेतु दूध-दही ओहुना पठाए दैत छल। कृष्णक हेतु सबसँ वेसी गो-रस पठबैत छलीहि गोकुलक एक सभ्य ओ सुखो-सम्पन्न गोप वृषभानुक स्त्री। हिनका मालो-जाल बड़ छलैन्हि ओ दूधो-दही खूब होइत छलैन्हि। दोसर, वृषभानुक

स्त्री ओ यशोदामे आत्मीयता बड़ छलैन्हि। जखन कखनहु दूध-दही बेसी बुझि पड़ैत छलैन्हि, वृषभानुक स्त्री अपन चारि वर्षक बेटी राधा द्वारा यशोदाकें पठाए दैत छलथिन्ह। राधा देखबा-सुनबोमे बड़ सुन्दरि छलि ओ स्वभावहुसँ बड़ सुशील। तें जखन कखनहु राधा यशोदाक आङ्न अबैत छलि, कृष्णक सङ्ग भए खूब खेलाइत छलि। एही अवस्थासँ राधा ओ कृष्णमे स्नेह बढ़ए लागल।

७

गोकुल गामक एक कात! कल-कल बहैत यमुना नदी। यमुनाक कछेर पर एक विशाल ओ भव्य कदम्बक झमटगर गाछ। एहि कुञ्जक छायामे गोपाल बालक सङ्ग भए कृष्ण प्रत्यह खेलएबाक हेतु आएल करैत छलाह। एक दिन जखन बालक सब खेलएबाक हेतु विदा भेल तँ अपन-अपन मालो-जाल ओ सभ एम्हरहि चरएबाक हेतु नेने आएल छल। सब कृष्णक सङ्ग खेलएबामे व्यस्त छल। ओम्हर माल-जाल चरैत चरैत पानि पीबए यमुना चल गेल। पानि पिबैत देरी सभ माल-जाल मरि गेल, अपन-अपन माल-जालक ई दशा देखि सभ चिन्तित भए उठल। सभ केओ ठकुआएल ठाढ़ छल। की करए की नहि, से ककरो नहि फुरि रहल छलैक। मुदा कृष्णकें बुझबामे देरी नहि भेलैन्हि जे माल-जालक ई दशा यमुनाक विषयुक्त जल पीबाक कारणे भेल छलैक। ओहि

कदम्ब गाछक सोझे यमुनामे बहुत दिनसँ नागक एक परिवार रहि रहल छल। ओकरहि सभक विषसँ यमुनाक जल विषाक्त भए गेल छल। अन्तमे अपन सङ्गी-साथीक चिन्ता देखि कृष्ण सभ माल-जालक क्रमशः पीठ पोछए लगलाह। जकरा सभकेँ कृष्ण पीठ पोछने जाथि, से सभ क्रमशः उठि-उठि ठाढ़ होअए लागल। एहन लगैत छल जेना माल-जाल सुति कए उठल हो। अपन-अपन माल-जालकेँ एहि रूपेँ जीवित होइत देखि सब आश्चर्यित तँ अवश्य भेल मुदा बालक सब आनन्दसँ नाचए लागल। फेर, माल-जाल चरए लागल, कृष्ण-बलराम सभक सङ्ग सीलि कदम्बक छाहमे खेलाए लगलाह। कृष्ण वंशी बजाए वातावरणमे मोहकता आनि देल। राधा-विशाखा-ललिता आदिक घरसँ चोराए आनल मक्खन सभ केओ मिलि खूब खएलैन्हि। तावत साँझ भए गेल छल। सभ केओ अपन-अपन घरक हेतु विदा भेलाह। घर पहुँचि सभ केओ अपन-अपन माए लग गेलाह! कृष्ण यशोदा लग। बलराम रोहिणी लग। यशोदा ओ रोहिणी छप्पन प्रकारक वस्तुसँ युक्त भोजन कृष्ण ओ बलराम केँ कराए ठोकि-ठाकि सुताए देल।

८

एहिना दू-चारि दिन आओर बीति गेल। एक दिन पुनि कृष्ण ओ बलरामकेँ संग लए गोप-बाल सभ माल-जाल सहित

ओही कदम्ब-कुञ्ज दिशि गेल। माल-जालकेँ यमुनाक कछेरमे चरबाक हेतु छोड़ि सभ केओ कदम्ब-काननमे गेन खेलाए लागल। खेलाइत-खेलाइत गेन एक बेर कृष्णक बुते यमुनामे चल गेल। आब ओहि गेनक हेतु सभ गोपकुमार हल्ला करए लागल। गेन छलैन्हि सुदामाक। सुदामा कृष्णक बड़ प्रिय मित्र छलाह। मुदा हुनको नहि रहल गेलैन्हि। ओहो कृष्णसँ लड़ए लगलाह जे "गेन आनि दिअ। हमर गेन आनि दिअ" सभकेँ खिसिअएबाक कारण छल जे यमुनासँ गेनकेँ बाहर करब असम्भव छल। अन्तमे कृष्ण तमसएबाक भाव प्रदर्शित करैत सभकेँ कहए लगलाह जे "गेन सनक तुच्छ वस्तुक लेल अहाँ सभ हल्ला मचाए देलहुँ अछि! लिअ, हम आनि दैत छी!! आबहु चुप रहैत जाउ।" ई कहैत-कहैत कृष्ण यमुनामे कूदि गेलाह आ गेन पकड़बाक हेतु आगाँ बढ़लाह। मुदा जहाँ आगाँ बढ़ि गेन पकड़बाक प्रयास करथि, तावत् पानिक हिलकोर पर गेन आओर आगाँ भेल जाए। अन्तमे गेन दहाइत-दहाइत कालीय नागक मोनि लग पहुँचि गेल। कृष्णो गेनकेँ पछुअओने ओतहि पहुँचि गेलाह। कृष्णक कोमल शरीर, मोहक कान्ति ओ नेनपन देखि दयाशीला नागिन सभ हुनका कहए लगलैन्हि जे "हे कोमलाङ्ग अहाँ एतएसँ लगले चल जाउ। ई नागराज एखन सूतल छथि, मुदा उठैत देरी ओ अपन आगि सनक तेज विषसँ अहाँकेँ डाहि देताह।" मुदा के सुनैत अछि नागिनक गप! कृष्ण तँ

आइ बिचारिएकेँ गेल छलाह ! ओ नागिनकेँ कहलजे "हे नाग-पत्नी ! हमरा अहाँक पतिक कोनो डर नहि अछि। हम तँ अहाँक पातसँ आइ युद्ध करए अएलहुँ अछि। अहाँ शीघ्र नाग-राजकेँ जगाए दिअन्हु जाहिसँ हुनका हराए हम पुनि घुरि जाइ।" कृष्णक निर्भीकता देखि तामसेँ भेर भए नागपत्नी नागराज केँ जगाए देल। सहस्रो फणासँ फुफकार करैत कालीय जागि गेल ओ कृष्णक अंग-अंग आबद्ध कए देलक। कृष्ण ओकरा पराजित करबाक लेल अपन समस्त शक्ति लगाए देल। दूहूमे घनघोर युद्ध होअए लागल। कखनहु कृष्ण ऊपर बुझि पड़थि, तँ कखनहु नागराज।

ओमहर कृष्णक यमुनामे प्रवेशक समाचार तावत धरि समस्त गोकुलमे पसरि गेल। गोकुलक आबाल-वृद्ध-वनिता सभ कदम्ब कानन लग यमुनाक कछेरमे ठाढ़ भए ईश्वरसँ कृष्णक मङ्गलक कामना कए रहल छल। कृष्ण ओ नागराजमे होइत युद्धक क्रममे कृष्णक विजय पर आनन्द ओ नागराजक विजय पर दुःख व्यक्त कए रहल छल। गोकुलक गोप समाजक कोन कथा ! ओहि दूहूक युद्ध देखबाक हेतु समस्त आकाश पुष्प-विमानसँ भरि गेल छल। सकल देवगण, नारद ओ सुर-सुन्दरी आदि सब केओ मानव-दानवक अद्भुत युद्ध देखि रहल छलाह। मुदा कृष्णक अन्त आइ निश्चित बुझि यमुनाक कछेरमे ठाढ़ समस्त गोकुल कानि रहल छल। नन्द, यशोदा, राधा, सुदामा सभ व्याकुल छलाह। कृष्णकेँ नागराजसँ

जकड़ल देखि बलराम भगवान् विष्णुक वन्दना करए लगलाह—"हे नारायण ! जे अपन मस्तक पर बिनु प्रयासहि पृथ्वीकेँ उठओने रहैत अछि, सएह शेषनाग जाहि विष्णुक शय्या थिक तनिका तुच्छ सापसँ छानल देखि सकल गोकुल घब-ड़ाए गेल अछि। हे मायापति ! अपन ई माया आब अहाँ छोड़ि दिअ।" अन्तर्यामी श्रीकृष्ण बलरामक स्तुति सुनि अपन विकराल रूप धारण कए नागराजक सङ्ग नवीन उत्सा-हसँ युद्ध करए लगलाह। कृष्णक शरीर एतेक विशाल भए गेलैन्हि जे नागराजक छान शिथिल भए गेल। तदुत्तर कृष्ण कमलक डण्टी लए नागराजक सहस्रो फणाकेँ नाथि देल। समस्त लोकक भार अपनामे संयोगि नागराजक ओहि नाथल फणा पर चढ़ि गेलाह। नागराजक फणा पर ठाढ़ छलाह पाँच वर्षक श्याम वर्णक श्रीकृष्ण जनिक कानमे छल मकरा-कृतकुण्डल, डाँरमे किंकिणी, बाँहि पर चकुठा ओ गरामे मणिमय हार। कमलनयन श्रीकृष्ण रत्नजड़ित बाँसुरी अपन अधरसँ बजबैत नागराजक नाथल फणा पर नाचए लगलाह। ताल ओ लय पर श्रीकृष्ण सलील नाच करए लगलाह। जएह फणा नागराज कनेक उठबैत छलाह, ओही पर चरण राखि श्रीकृष्ण नाचए लागथि। कतए दू गोट छोटछीन श्रीकृष्णक चरण-कमल ओ कतए नागराजक सहस्र फणा ? मुदा विधिक विधानक आगाँ शक्तिक कोन मोल ! एहि प्रसङ्गक वर्णन मनबोध बड़ सुन्दर कएने छथि :—

मानुष भए कत पौरुष करथु
सए गोट फनि पुनु कए गोट धरथु
जिति कहुँ मझिलहि फनि हरि ठाढ़
कए देल पएर वज्र सन गाढ़
देखि हरखित भेल नन्द सभृत्य
घड़िएक कएलन्हि ओहिना नृत्य
करितहिँ नाच एहन कए मलल
फणिसँ सोनित फन फन चलल
सोनित सरित तुरत बहि गेली
जमुना छुटलि सरस्वति भेली ॥

आकाशसँ फूलक वर्षा होमए लागल। दुन्दुभी बाजए लागल। अप्सरा सभ नृत्य करए लागलि। नागपत्नीकेँ आब बुझबामे कोनो भाङ्ठ नहि रहि गेल छलैक जे श्रीकृष्ण साक्षात् परमेश्वर थिकाह। ओ सभ सपरिवार श्रीकृष्णक आरती करए लागलि; स्तुति करए लागलि जे "हे नाथ! हमर अपराध क्षमा कए दिअ। हमर पतिकेँ जीवन-दान दए दिअ।" ओमहर नागराज आब परास्त भए डरेँ थर-थर कँपैत प्रार्थना करए लागल—"हे प्रभु। हम तँ अक्षम्य अपराधी छी। हम अहाँक एक गोट तुच्छ सेवक छी। आज्ञा दिअ जे हम कतए जाउ। हम तँ गरुड़क डरसँ एतए आबि रहए लागल छलहुँ। आब हमरा अहाँक चरण-प्रहार सह्य नहि भए रहल अछि।

हम मरि जाएब। हमरा जीवन दान दिअ।"। एहि पर दयामय श्रीकृष्ण नागराजसँ कहलैन्हि जे 'हे सर्पराज! तोँ यमुना छोड़ि कतहु आन ठाम चल जाह। आब तोरा गरुड़ किछु नहि करतहु, कारण, तोहर फणा पर हम अपन पाएरक चिन्ह छोड़ि देलिअहु अछि। तोहर विषसँ यमुनाक जल विषाक्त भए गेलैक अछि। गोकुलक मानवसं लए पशु-पक्षी पर्यन्त केँ एकर पानि पिअब असम्भव भए गेलैक अछि। एहि कारणेँ आइ तोरा ई दण्ड देलिअहु अछि। तोँ लगले एतएसं चल जाह।" एही दिनसँ श्रीकृष्णक नाम श्याम ओ नटनागर पड़ल। कारण विषक कारणे श्रीकृष्ण आइसं अत्यधिक कारी भए गेलाह ओ कालीय नागक फणा पर नाचि श्रीकृष्ण आइए अपन नृत्यकुशलताक परिचय देलैन्हि।

एहि रूपेँ नागराज ओ नागपत्नीकेँ अभय वरदान दए श्रीकृष्ण कदम्ब-काननक यमुनाक कछेरमे, जतए समस्त गोकुल उत्सुकतासँ हुनक प्रतीक्षा कए रहल छल, घुरि अएलाह। गोकुलक आनन्दक कोनो ठेकाने नहि! श्रीकृष्ण यमुना-जलसँ ऊपर आबि नन्द-यशोदा-बलराम ओ राधा-सुदामा लग आबि ठाढ़ भए गेलाह। यशोदा कृष्णकेँ कोरामे उठाए आँचरसँ पोछए लगलीहि। तदुत्तर श्रीकृष्णकेँ नेने सकल गोकुल हलसैत-फुलसैत अपन-अपन घरकेँ विदा भेल। कदम्ब-काननसँ सभकेओ नाच-गान करैत अपन-अपन घर पहुँचल। श्रीकृष्णकेँ सङ्ग कएने नन्द-यशोदा

अपन घर पहुँचलीहि। कृष्णकेँ देखि हुनक शरीरकेँ गाए चाटए लगलैन्हि। कृष्णक प्राण बाँचि गेलैन्हि; तेँ यशोदा शुभकामना कए अन्न वस्त्र दान करए लगलीहि। ओहि दिनसँ यमुनाक जल स्वच्छ निर्मल पेय भए गेल। मनुष्य ओ पशु पक्षी सभ आब यमुनाक जल पिबए लागल। नागराज सेहो सपरिवार कतहु आनठाम चल गेल। धन्य कृष्ण मुरारि! भक्तभयहारी!! मुनिमनरंजक।

मुदा हे नाथ! सहस्र फणाक नागराजकेँ तँ अहाँ वश कएल; परञ्च काम-क्रोध लोभ-मोह मद ओ मात्सर्य रूपी जे छओटा फणाबला नाग हमरा लोकनिक मनमे मोक्षक शत्रु भए विराजमान अछि, तकरा वश करी तखन ने! मोक्षक शत्रुक फणा पर जखन नाच कए ओकरा वश कए लेब तखनहि वस्तुतः अहाँक नाम सार्थक होएत।

हम निरक्षरा अबला कृष्णक लीला की लिखब! जतए द्वैपायन व्यास ओ भक्त कवि सूरदास श्रीकृष्णक बाल-लीलाक वर्णन कए गेलाह अछि, ततए हम तुच्छ स्त्री की श्री-कृष्णक बाल-लीला लिखू!! धन्य श्याम श्रीकृष्ण! अपन "ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः" सँ हमर विषय-वासना रूपी सर्पक मान मर्दन कए हमरा निर्विष कए दिअ। जय श्याम श्रीकृष्ण! जय नटनागर श्रीकृष्ण!!

६

कृष्णक शक्तिक दिन-दिन अभिवृद्धिक कथा सूनि कंस ओओरो अधिक चिन्तित रहए लागल। श्रीकृष्णकेँ ओ आब कोना मारए? ओकरा आब किछु फुरिए नहि रहल छलैक। अन्तमे ओ विचारलक जे गोकुलक जंगल ओ पहाड़मे आगि लगबाए देल जाए जाहिसँ समस्त गोकुलक संग-संग कृष्णो जरि कए भस्म भए जाथि। मनहि मन इएह स्थिर कए कंस एक दिन अपन असुर अनुचर द्वारा गोकुलक जंगल ओ पहाड़मे आगि लगबाए देलक। जंगलक आगि प्रज्ज्वलित भए प्रचण्ड दावानलक रूप धारण कए लेलक। आगिक धधरा बसातक संग मीलि जंगलकेँ के कहए, समस्त गोकुलहिकेँ जरबए लागल। एहन बुझि पड़ैत छल जेना क्षण भरिमे समस्त गोकुल आब भस्म भए जाएत। चिड़इ-चुनमुनी अपन-अपन खोँता छोड़ि दहो दिशि भागए लागल। माल-जाल अपन-अपन डोरी तोरि यमुनाक कछेरकेँ भागए लागल। गोकुलक आबालवृद्ध-वनिता अपन-अपन घर छोड़ि यत्र-कुत्र विदा भए गेल। गोकुलक ई दुर्दशा देखि दयासागर करुणानिधान कृष्ण द्रवित भए उठलाह। अपन मित्र-गण गोपाल बालक ई दुर्दशा कृष्णकेँ देखल नहि गेलैन्हि। ओमहर समस्त गोकुल बालमुकुन्द कृष्णक प्रार्थना करए लागल जे "हे प्रभो! हे बालमुकुन्द !! कंसक अत्याचारसँ अहाँ अनेक बेरि हमरा

लोकनिक रक्षा कएल अछि, प्राण बचाओल अछि। हे श्रीकृष्ण! एहू बेरि हमरा लोकनिकेँ बचाए लिअ। एहि बेर हमरा लोकनिकेँ बचबाक कोनोटा भरोस नहि रहि गेल अछि।" ई कहैत-कहैत सभ केओ महाप्रभु श्रीकृष्णक पाएर पर खसि कानए लागल। अन्तमे भक्त-वत्सल श्रीकृष्ण गोकुल-वासीक त्राणार्थ दावानलक बिकराल धधराकेँ गीरए लगलाह ओ किछु कालक पश्चात् ओ सकल दावानलहिकेँ गीरि गेलाह। गोकुलक जे जीव-जन्तु दावानलक प्रचण्ड ज्वालामे जरि भस्म भए गेल छल, तकरा सभकेँ अमृत पान कराए पुनः जीवित कए देल। अपन स्पर्शसँ दावानलसँ लागल सकल गोकुलक दाहक हरण कए लेल। सभ केओ दावानलसँ पूर्वक स्थितिक अनुभव करए लागल। जे कोनो गोप-बाल ओ पशु-पक्षी दावानलसँ त्रस्त भए भागि गेल छल, से सभ घुरि-घुरि आबि पुनः अपन स्थान ग्रहण कए लेलक। गोकुलक ई दृश्य देखि सुर-ललना सभ फूल बरसाबए लागलि। आकाशमे दुन्दुभी बाजए लागल। सभ श्रीकृष्णक जय-जयकार करए लागल।

ई सभ समाचार जखन नन्दरानी यशोदा बुझलैन्हि, तखन ओ दौड़लीहि श्रीकृष्णकेँ पकड़ि अनबाक हेतु। तावत श्रीकृष्ण अपनहि ओतए पहुँचि गेलाह। यशोदा भरि पाँजकेँ पकड़ि श्रीकृष्णकेँ अपन कोरामे लए लेल। हुनका माथसँ पाएर धरि निहुँछि फेकि देल। आँचरसँ झाँपि दूध पिआबए

लगलीहि। तदुत्तर नन्दराय गाइक नाङरिसँ श्रीकृष्णक अमङ्गल नाशार्थ हुनक झार-फूक कएलैन्हि। गो-दान कएल। हिरण्य-दान कएल। कंसक अत्याचारसँ आइ सकल गोकुलकेँ कृष्ण बचाए लेल; से बुझि नन्द राय गद्गद् छलाह। त्रिभुवनपतिए बाल मुकुन्दक रूप धारण कए नन्दक घरमे अवतरित भए बाल-लीलाक चमत्कार देखाए रहल छथि से बुझि नन्द रायक आनन्दक ठेकाने नहि छल। धन्य श्रीकृष्ण! धन्य यशोदा!!

१०

एक बेरिक कथा थिक। कृष्ण प्रायः सात वर्षक छलाह। नन्द रायक नेतृत्वमे सकल गोकुलवासी व्रज जाए आनहि बेर जकाँ एहू बेर इन्द्र-पूजाक आयोजन करए लागल। इन्द्रपूजाक आयोजन होइत देखि श्रीकृष्ण मनहि मन विचारल जे एहि अवसर पर देवराज इन्द्रक मान मर्दन करबाक चाही। बस, आब की छल! कृष्ण दौड़लाह नन्दके पूछए जे "हे पिता! कोन उत्सवक आयोजन भए रहल छैक?" नन्द राय कहल—"हे पुत्र! सुनू। बहुत पूर्वसँ हमरा लोकनिक पूर्वज देवराज इन्द्रक पूजा करैत अएलाह अछि। हिनक पूजा कएलासँ लोक धन धान्यसँ पूर्ण रहैत अछि।" नन्द रायक गप सुनि श्रीकृष्ण हुनका कहलैन्हि जे "हे पिता! गोप गोपालक भए हमरा लोकनिकेँ इन्द्रक पूजा नहि करबाक थिक।

हमरा लोकनिकें तँ गोवर्द्धनक पूजा करबाक चाही जाहिसँ सकल गोकुल हरित भरित रहैत अछि। गाए-बच्छा खूब घास खाइत अछि। खूब दूध दैत अछि ओ हमरा लोकनिकें खूब गोरस भेटैत अछि। गोकुलमे कंसक उपद्रवो बड़ होइत अछि। तेँ व्रजहि जाए बसी सएह नीक। व्रजमे रहैत जाएब। गोवर्द्धनक पूजा करब। गोकुलमे माल जाल चरत। व्रजमे रहब हमरा लोकन्हिक लेल विशेष सुरक्षित अछि।" कृष्णक ई विचार नन्द राय लोकनिकें यद्यपि खूब जँचलैन्हि नहि, मुदा ओकरा त्रिभुवनपति कृष्णक आज्ञा मानि सभ केओ मानि लैत गेलाह। सभकेओ गोकुलसँ व्रज चल गेल। किछु दिनुका पश्चात् अवसर अएला पर गोवर्द्धन-पूजाक आयोजन होमए लागल। कृष्ण चतुर्भुजक रूपमे गोवर्द्धन पर्वत पर अपनहि स्थापित भए गेलाह। सभ चलल गोवर्द्धन पर्वत परक चतुर्भुजक पूजा-अर्चना करए। थारक थार फूल-चानन, मेवा-पकवान ओ फल फलहरी लए गोप ललना ओ गोपाल-बाल विदा भेल। गोवर्द्धन पर्वत पर जाइत धरोहिक धरोहि गोप बाल ओ गोप वधू लोकनि अद्भुत लागि रहलि छलीहि। गोवर्द्धन पर्वत पर लोक वेद ओ वस्तु-जातक ढेर लागि गेल। श्रीकृष्ण बलराम गोवर्द्धन भगवानक पूजा करए लगलाह।

ओमहर देवराज इन्द्र सुनलैन्हि जे हुनक पूजा छोड़ि गोकुलवासी चतुर्भुज श्री गोवर्द्धन भगवानक पूजा करए

लागल अछि। देवराज तामसेँ लाल भए गेलाह। प्रतिशोध लेबाक दृष्टिएँ देवराज इन्द्र संवर्त्तक नामक मेघराजकेँ बजाए पचासो कोटि मेघकेँ सङ्ग लए व्रजमे प्रलयंकारी वर्षा करए कहल। ओ कहल—"हे संवर्त्तक! कृष्ण हमर अपमान कएल अछि। तेँ अहाँ जाउ, प्रलयंकारी वर्षासँ समस्त व्रजकेँ डुबाए दिअ!" संवर्त्तक अपन सोड़हो कला लए व्रजकेँ विदा भेल। मेघमालासँ समस्त व्रज अन्हार भए गेल। हाथो-हाथ नहि सुझैत छल। बिजलोकाक चमकबसँ जेना आँखि आन्हर भए जाइत छल। ठनकाक ठनकब केवल कानहिक पर्दा नहि फाड़ैत छल, ओहिसँ गर्भिणीक गर्भ पर्यन्त नष्ट भए रहल छल। प्रचण्ड बिहाड़ि बहए लागल। लगैत छल जेना व्रजक एक-एकटा घर आइ उड़िआए जाएत। मूसलाधार वर्षा भए रहल छल। एहन लगैत छल जेना मेघ आइ छोड़ि काल्हि नहि बरसबाक शपथ खाए नेने छल। कोनहु जीव जन्तुक बचबाक आशा नहि रहि गेल। समस्त व्रज हाहाकार करए लागल। एहन बुझि पड़ैत छल जे आइ चतुर्भुज समेत गोवर्द्धन पहाड़ो दहाए जाएत। लगैत छल जेना आइए व्रजक लय भए जाएत। अन्तमे नाश निश्चित बुझि समस्त व्रज कृष्णक शरणमे गेल। नन्द यशोदा कृष्णकेँ कहए लगलीहि जे "हे बालमुकुन्द! देवराज इन्द्रक कोपसँ आब कोना त्राण भेटत? कहुना बचाउ, समस्त व्रज आब तबाह भए गेल अछि। प्राण बाँचब आब कठिन बुझि पड़ैत अछि"

राधा-विशाखा-ललिता सेहो सभ कहए लगलैन्हि जे "हे प्राण-वल्लभ ! अहाँक सखा सकल गोपाल बाल आब विकल अछि। हम सभ अहाँक शरणमे आइलि छी। आबहु तँ बचाउ।" बल-राम कहए लगलाह-"हे कृष्ण ! अहाँ सर्वज्ञ छी। परब्रह्म परमेश्वर छी। अहाँ सभ किछु कए सकैत छी। इन्द्रक कोपसँ ब्रजक अस्तित्व आब सन्दिग्ध भए गेलैक अछि। आब रक्षा करू।" ब्रजक गाए-बच्छा समेत कृष्णक पाएर लग डिरिआए लागल। बस, आब की छल ! दयासिन्धुकेँ दया होइत कतेक देरी !! श्रीकृष्ण अपन बामा हाथक कनगुरिआ अङ्गुरीक नहक अग्र-भाग पर गोवर्द्धन पहाड़केँ उठाए लेल ओ समस्त ब्रज केँ कहल जे सब केओ एकर नीचाँ चल अबैत जाउ। अपन चक्रकेँ पहाड़क ऊपर पानि सोखबाक लेल राखि देल। देव-राज इन्द्रक कोपक कोनो प्रभाव ब्रज पर आब नहि पड़ैत छल। कृष्ण सात दिन धरि गोवर्द्धन पहाड़केँ एहिना अपन नह पर उठाए ब्रजक रक्षा करैत रहलाह। देवराज इन्द्र अन्तमे हारि थाकि अपन भाभट समेटि लेल। आकाश स्वच्छ भए गेल। पानि बन्द भए गेलैक। ब्रजवासीकेँ कतहुसँ प्राणमे प्राण अएलैक। सुर-ललना फूल बरसाबए लागलि। आकाशमे दुन्दुभी बाजए लागल। ई सभ देखि देवराज ध्यानस्थ भए बुझि गेलाह जे श्रीकृष्ण आन केओ नहि, परमपिता परमेश्वर थिकाह। ओ लगले ब्रज आबि अपन रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट श्रीकृष्णक चरण-कमल पर राखि हुनक वन्दना करए लग-

लाह—"हे परमेश्वर ! हम नहि बुझलहुँ जे पृथ्वीक भार हरण करबाक लेल अहाँ अवतार लए लेलहुँ अछि। हमरा लोकनिक कष्टक आब अन्त भए जाएत, से बुझि हम पूर्ण आश्वस्त भए गेलहुँ अछि। हे महाप्रभु ! आइसँ अहाँकेँ लोक सभ गोवर्द्धन-धारी, गिरिधारी, गिरिधर कहल करत।" एहि रूपेँ श्रीकृष्ण-क वन्दना कए देवराज चल गेलाह। कृष्ण-भक्त मीरा एहिना गिरिधरक प्रति अपन आत्मसमर्पण कए सायुज्य मोक्ष प्राप्त कएल। धन्य गिरिधर ! ब्रजक उपद्रव शान्त होइतहिँ यशोदा बाल-मुकुन्दकेँ भरि पाँज पकड़ि हुनक माथ चूमए लगलीहि। राधा-ललिता ओ गोपाल-बाल सभ भरि-भरि कटोरा मक्खन आनि कृष्णकेँ देअए लागल। बलराम कृष्णकेँ आनन्दसँ भरि पाँज केँ पकड़ि उठाए लेल। गाए सभ अपनहिसँ आबि-आबि कृष्णकेँ अपन स्तनसं गड़ैत दूधसँ नहबए लागलि। धन्य गोपाल कृष्ण ! धन्य यशोदा जनिका कृष्णसन पुत्र भेल।

११

ओमहर जखन कंस कृष्णक द्वारा गोवर्द्धन पहाड़ नह पर उठाए ब्रजकेँ देवराज इन्द्रक कोपसँ बचाए लेबाक ओ कृष्णक आगाँ देवराजकेँ नतमस्तक होएबाक प्रसंग सुनलक, तखन आकाशवाणीक कथा ओकरा फेर मन पड़ि अएलैक। कारण, कंस बुझैत छल जे गोवर्द्धन पहाड़केँ कनगुरिआ अङ्गुरीक नहक अग्र भाग मात्र पर उठाएब सर्वसाधारण मानवसँ

सम्भव नहि। ओ बुझैत छल जे कृष्ण ओ बलराममे निश्चित रूपेँ ईश्वरीय महत्ता विद्यमान अछि। अतः कृष्णकेँ मारबाक योजना बनबैत कंस अकासुर ओ बकासुर नामक अपन दू-गोट अनुचरकेँ बजबाओल। अकासुर-बकासुर आएल। कंस आज्ञा देल—"हओ अकासुर-बकासुर! तोँ सभ व्रज जाह। ओतए नन्दक ओहिठाम कृष्ण ओ बलराम नामक दू गोट बालक अछि। जाह, ओहि दूनूकेँ मारि आबह। मारि अएला पर पूर्ण पुरस्कार देबहु।" आज्ञा लए अकासुर-बकासुर व्रजकेँ विदा भेल। व्रज पहुँचि ओ सभ कृष्णकेँ गोपबालक संग खेलाइत देखलक। जाहिबाट दए ओ सभ अबैत, ताहि बाट पर अकासुर-बड़काटा भयङ्कर अजगर भए पड़ि रहल। तावत गोपबालक संग संग ओतए पहुँचलाह कृष्ण। अन्तर्यामी श्रीकृष्ण सभ किछु बुझि गेलाह। हुनका अजगर-रूपधारी एहि अकासुरक वध करबाक छलैन्हि। तेँ बाह्यतः ओ गोप बालक संग मीलि अजगरकेँ उकठ करए लगलाह। अजगर-रूप धारी अकासुरो तं इएह चाहैत छल। तमसाए ओ कृष्णक संग-संग ओहिठाम उपस्थित सकल गोप बालकेँ गीड़ि गेल। ओमहर अजगरक पेटमे कृष्ण अपन शरीरक आकार बढ़बए लगलाह। जं-जं कृष्णक आकार बढ़ैत गेल, तँ-तँ अजगरक स्थिति बदलैत गेल। ओ अकसक करए लागल। ओकर दम निकलए लगलैक। अन्तमे कृष्ण ओकर पेट फाड़ि गोप बालक संग बहराए

अएलाह। अजगर-रूप-धारी अकासुर मरि गेल। जय-जय कार करैत देवलोकमे श्रीकृष्णक अभिनन्दन होअए लागल। देवलोकसँ सुरगण आबि स्तुति करैत श्रीकृष्णकेँ कहए लगलाह—"हे गिरिधारी! अहाँ तँ अकासुरकेँ मारि हमरा सभकेँ बहुत आश्वस्त कएल अछि; मुदा एहिना कंसकेँ मारि हमरा लोकनिक कष्टक अन्त कए दिअ।" ई कहि देवगण सुरलोक चल जाइत गेलाह। मुदा बकासुर अवसर पाबि एक गोट बड़काटा बकक आकार बनाए मन-मोहक रूप धारण कए ठाढ़ भए गेल। एक अद्‌भुत आकारक बककेँ देखि गोप बालक सभ ओकरा लगसँ देखबाक हेतु ओतए आएल। बकासुरो तँ इएह अवसर तकैत छल! चट दए ओ सकल गोप बालकेँ गीड़ि गेल। मुदा एहि बेर कृष्ण बचि गेल छलाह। कारण गोप बालक सङ्ग कृष्ण ओतए नहि आएल छलाह। परञ्च अपन सङ्गीक ई दशा देखि कृष्ण अत्यधिक दुःखी भेलाह। अपन मित्र गणक उद्धार करबाक लेल बकासुरक वध करबाक निश्चय कएल कृष्ण। आगाँ बढ़ि कृष्ण लपकि कए बकक लोल पकड़ि लेल। ओकर लोलकेँ अपन दूनू हाथसँ कृष्ण चीरि बक-रूप-धारी बकासुरकेँ दू खण्डकेँ चीरि देल। ओकर पेटसँ अपन मित्र गणकेँ बाहर कएल। मुदा ओ सभ बेहोस छल। तखन कृष्ण सभकेँ अमृत पान कराए होशमे आनल। यशोदा जखन बकासुर वधक ई कथा सुनल तँ दौड़लि आइलि कृष्णक

लग। श्रीकृष्णक लीला देखि यशोदा चकित छलीहि। ओम्हर कंसकेँ जखन ई समाचार सभ ज्ञात भेलैक तँ ओ चकित भए उठल। भगवानक पार पाएब असम्भव! देव, दानव ओ मानवमे सँ केओ नहि विधिक विधान जानि सकैत अछि!!

१२

एक बेरक कथा थिक। ब्रह्माजीकेँ सन्देह भेलैन्हि जे की गोलोकवासी योगेश्वर इएह श्रीकृष्ण थिकाह? ई जँचबाक हेतु ब्रह्माजी ब्रजक प्राणप्रिय गोपबाल ओ गाए-बच्छाक हरण कए लेल। मुदा श्रीकृष्ण तँ सर्वज्ञ थिकाह! ओ सभ किछु बुझि गेलाह। ब्रजवासीकेँ प्राणहुसँ प्रिय अपन गोप बाल ओ गाए-बच्छाक वियोगक दुःख नहि होइक, तेँ श्रीकृष्ण अपनहि ओहि गोप बालक रूप धारण कए ब्रज-निकुञ्जमे गाए-बच्छाकेँ चरबए लगलाह। एहि रूपेँ सात दिन सात राति धरि कृष्ण एहिना गाए-बच्छाक रूप धारण कएने रहलाह। एक दिन खेलाइत-धुपाइत बलराम कृष्णक ई रूप परिवर्तन लक्ष्य कए गेलाह। कृष्ण अपने ई गूढ़ विषय बलरामकेँ नहि कहने छलाह। अन्तमे अपन उत्सुकता देखबैत बलराम कृष्णसँ पूछल—"भाइ श्याम! ई कोन विषय थिक जे सभमे हम अहीँक रूप देखैत छी?" कृष्ण हँसि बलरामकेँ कहए लगलाह—"हे भाइ राम! सूनू। हमरा जँचबाक हेतु ब्रह्मा ब्रजक सकल गोप बाल ओ गाए-बच्छाकेँ

नुकाए रखलैन्हि अछि। मुदा ब्रजनारीकेँ प्राणहुसँ प्रिय अपन गोप बाल ओ गाए-बच्छाक वियोगक दुःख नहि होइन्हि, तेँ हम अपनहि ओहि सकल गोप बाल ओ गाए-बच्छाक रूप धारण कए लेलहुँ अछि।" ओमहर कृष्णजीक एहि रूपक अलौकिक कार्य देखि ब्रह्माजी बुझि गेलाह जे ई बाल मुकुन्द आन केओ नहि, साक्षात् परमपिता परमेश्वरे थिकाह। ओ श्रीकृष्णक शरणागत भए सकल गोप बाल ओ गाए-बच्छाकेँ ब्रजकेँ घुराए अपन चारू मुखसँ श्रीकृष्णजीक स्तुति करए लगलाह—"हे योगेश्वर! अपने धन्य छी! हम अहाँकेँ नहि चिन्हलहुँ, तेँ एना कएल। आब हम सकल गोप बाल ओ गाए-बच्छाकेँ घुमाए देलहुँ अछि। हमरा क्षमा कए दिअ। धन्य अपने छी! धन्य अपनेक लीला अछि!!" ई कहि ब्रह्माजीकेँ चुप भेला पर श्रीकृष्ण कहल—"हे चतुरानन! हमर माया एहिना मोहक होइत अछि। आब अहाँ ब्रह्म-लोक जाउ।" तदुत्तर ब्रह्माजी ब्रह्म-लोक चल गेलाह। कामधेनु अपन दूधसँ श्रीकृष्णकेँ अभिषिक्त करए लागल। धन्य श्रीकृष्ण! धन्य गोविन्द!!

१३

एक दिन गोप बालक सङ्ग खेलाइत-खेलाइत श्रीकृष्णजी ब्राह्मणक टोल लग पहुँचि गेलाह। ब्राह्मण लोकनि यज्ञ कए रहल छलाह। वेद-मन्त्रक पाठसँ सम्पूर्ण आलय गूँजि रहल

छल। कृष्णजी किछु दूरहि पर एक गोट गाछक नीचामे ठाढ़ भए गेलाह ओ सुदामाकेँ ओहि ब्राह्मण लोकनिसँ अपना खएबाक लेल किछु माँगि अनबाक हेतु कहलैन्हि। सुदामा बभन टोली जाए श्रीकृष्णजीक लेल ब्राह्मण लोकनिसँ किछु मँगलैन्हि। सुदा सभ केओ एके गोट उत्तर देल—"हम सभ यज्ञ करैत छी। ई यज्ञ छोड़ि गोप बालक हेतु एखन के की देत? एखन चल जाउ।" परञ्च ब्राह्मण लोकनि की जनैत छलाह जे जनिकहि हेतु ओ लोकनि यज्ञ करैत छलाह, सएह परमेश्वर गोपाल लाल भए कृष्णक रूपमे खएबाक हेतु किछु माँगि रहल छलाह! के जनैत छल जे ओएह परब्रह्म परमेश्वर थिकाह!! सुदामा घुरि कए आबि ब्राह्मण लोकनिक उक्ति कृष्णजीकेँ सुनाए देल। कृष्णजी पुनः सुदामासँ ब्राह्मणी लोकनिसँ किछु माँगि अनबाक हेतु कहल—"हे सुदामा! आब अहाँ ब्राह्मणी लोकनिकेँ कहि-अन्हु गए। ओ लोकनि हमर भक्त छथि। अवश्य किछु देतीहि।" तदुत्तर सुदामा जाए ब्राह्मणी लोकनिकेँ कहल—"हे कृष्ण-भक्त ब्राह्मणी लोकनि! कृष्ण ओहि वृक्ष लग ठाढ़ छथि ओ किछु खएबाक हेतु मँगैत छथि।" कृष्णजी आइ कृपा कएल अछि, से बुझि ब्राह्मणी लोकनि थारक थार पकवान ओ मेवा आदि लए लगले विदा होइति गेलीहि। श्रीकृष्णजीक वन्दना-अर्चना करबाक 'लेल माला ओ चानन सेहो लेल। हिनका लोकनिकेँ जाइत देखि एक गोट ब्राह्मणी, जनिक पति

बड़ खिसिआह छलथिन्ह, पुछलथिन्ह—'अए सखी लोकनि ! अहाँ लोकनि कतए जाइत छी ?" ब्राह्मणी लोकनि कहलथिन्ह—"कृष्ण अएलाह अछि। ओहिठाम ठाढ़ छथि। हुनकहि दर्शन ओ पूजन करए हमरा लोकनि जाइत छी।" एहि पर ओहो जएबाक इच्छा व्यक्त कएलैन्हि। मुदा ब्राह्मणी लोकनि हुनका मना करैत कहलथिन्ह—"अए सखी ! अहाँ जुनि जाउ। अहाँक पति बड़ तमसाह छथि। ओ अहाँकेँ नहि जाए देताह।" एहि पर ओ विप्र-पत्नी उत्तर देलथिन्ह—' कृष्णक प्रति हमर प्रेम जँ सत्य अछि तँ कृष्णक पूजन-अर्चन करए हम अवश्य जाएब। हमरा केओ नहि रोकि सकैत अछि।" ई कहि ओहो ब्राह्मणी एक थारमे फूल-चानन-माला ओ मधुर लए विदा भेलीहि। किछुए दूर गेलि छलीहि, की हुनका पति भेटि गेलथिन्ह। ब्राह्मणीकेँ लक्ष्य कए हुनक पति कहए लगलथिन्ह—"अए कुलटा ! अहाँ कतए जाइत छी ? ओ गोप बाल कृष्ण महा कपटी छथि। ओतए अहाँ नहि जाउ।" एहि पर ब्राह्मणी उत्तर दैत कहलैन्हि—"कृष्णक दर्शन करए हम अवश्य जाएब। हमरा अहाँ नहि रोकि सकैत छी।" ब्राह्मण अत्यधिक क्रोधी छलाह। ब्राह्मणीक एहि रूपक वचन सुनि ब्राह्मण हुनका मारैत-पीटैत पकड़ि लए जाए एक घरमे बन्द कए देल। मुदा लीलामयक लीला के बुझि सकैत अछि ? ब्राह्मणी लोकनि जखन कृष्णक लग पहुँचलीहि तँ ओतए सबसँ आगाँ ओही

ब्राह्मणीकेँ देखलि जनिका पति घरमे बन्द कए ताला लगाए देने छल थिन्ह। सभ आश्चर्यित छल। पूजन-अर्चन कए सभ ब्राह्मणी तँ अपन-अपन घर अइलीहि; मुदा क्रोधी ब्राह्मणक पत्नीकेँ कृष्णजी अपनामे मिलाए लेल। भक्तक प्रति भगवान्क लीला देखि सभ मुग्ध छल। ओमहर ब्राह्मण जखन घर खोललैन्हि तँ हुनक पत्नीक मृत शरीर मात्र ओतए पड़ल छल। हुनक पत्नीक प्राण शरीर छोड़ि परम पिता परमेश्वर कृष्णमे लीन भए गेल छल। ब्राह्मण क्षुब्ध छलाह। भक्तक हेतु भगवान किछु कए सकैत छथि! धन्य नटनागर! धन्य विप्र-पत्नी !!

१४

यमुनाक कल-कल-निनादिनी धारा। धाराक एक कातमे विशाल कदम्ब कानन। कदम्ब काननमे एक सघन कदम्ब-तरु। कदम्ब तरुक खूब झमटगर एक शाखा। शाखा पर बैसल कृष्ण। कृष्णजी द्वारा बजाओल जाइत बाँसुरीसँ प्रतिध्वनित व्रज-बाट। कृष्णजी व्रज-बाट पर अबैत देखल व्रजबालाकेँ। बाँसुरी बजाएब छोड़ि शाखामे सटि चुपचाप ओ देखए लगलाह। देखए लगलाह जे व्रज-बाला की करैत अछि? व्रज-बाला कदम्ब-कानन आबि अपन-अपन नूआ खोलि कदम्बक डारिपर लटकाए नाङटि भए यमुनामे पैसि चुभकि-चुभकि नहाए लागलि। कृष्णजी मनहि मन विचारल जे

स्त्री कें एहि रूपें नग्न भए स्नान नहि करबाक चाही। एहि रूपक परम्परा निन्दनीय थिक। अतः आइ से उपाय कर-बाक चाही जाहिसँ ई परम्परा बन्द भए जाए। ई विचारि कृष्णजी व्रज बाला सभक नूआ नुकाए राखल। नूआ नुकाए ओ पुनः मग्न भए वंशी बजबए लगलाह। व्रज बाला सभ स्नान करैत जखन वंशीनिनाद सुनल तँ चौंकलि ओ ऊपर होएब तँ धड़फड़ाएकें अपन-अपन नूआ ताकए लागलि। जखन नहि देखलक, तखन ओकरा सभकें बुझबामे बाधा नहि रहलैक जे ओकरा सभक नूआ आन केओ नहि, कृष्णे नुकाए रखलथिन्ह अछि। यमुनाक कछेरमे भरि छाती पानिमे ठाढ़ि नग्न व्रज-बाला ओ कदम्ब-शाखा पर बैसल श्रीकृष्ण। व्रज-बाला आब करए तँ, करए की? अन्तमे लागलि ओ सभ करए कृष्णजीक विनती। बहुतो काल विनती कएलाक पश्चात् कृष्णजी कहल—" हे व्रजबाला! एतए आबि अपन-अपन नूआ लए जाउ। हम ओतए आबि अहाँ लोकनिकें नूआ नहि देब। कारण अहाँ सभ नङ्टे नहाए अधलाह कएल अछि।" अन्तसे बाध्य भए व्रज-बाला लोकनि बामा हाथसँ गुप्ताङ्ग झाँपि दाहिना हाथें नूआ ले ओहि कदम्ब-शाखाक नीचा ठाढ़ि भेलीह जाहि पर कृष्ण बैसल छलाह। घंटो धरि ओ सभ नूआ मङैत रहलि; मुदा नूआ के दैत अछि! ओ तँ हँसैत-विहुँसैत बाँसुरी बजबैत छलाह। अन्तमे बहुतो काल धरि मिनती कएला

पर कृष्णजी कहल — " हे व्रज-बाला ! जाबतधरि अहाँ लोक-निक मनमे विकार रहत, ताबत धरि हम अहाँ सभकेँ नूआ नहि देब।" फेर ओ लोकनि महा झंझटिमे पड़ि गेलि। आब की करओ। अन्तमे कृष्णजीकेँ सर्वस्व मानि आत्म-समर्पण कए दूनू हाथ ऊपर उठाए कृष्णजीसँ अपन-अपन नूआ माङए लागलि। व्रज-बाला विकार-रहित निश्छल भावेँ कृष्णक आगाँ ठाढ़ि छलि। श्रीकृष्णजी व्रज-बालाकेँ नख-शिख देखैत विहुँसि रहल छलाह। " हे व्रज-बाला ! नग्न भए नहएबाक ई परिपाटी छोड़ि दैत जाउ। हम इएह सिखएबाक हेतु अहाँ लोकनिक नूआ नुकाए रखने छलहुँ। अस्तु; आइ जाउ। फेर कहिओ भेँट होएत।"—ई कहैत कृष्णजी व्रज-बाला लोकनिकेँ नूआ दए देल। धन्य श्रीकृष्ण ओ धन्य व्रज-बाला !

१५

उक्त चीर-हरण रहस्यमय थिक। मुदा सांसारिक मानव एहि रहस्यमय चीर-हरणक आशय नहि बुझैत अछि। ओ एहि चीर-हरणसँ कृष्णक विलासिता ओ कामुकता प्रतिपादित बुझैत अछि। मुदा एहन भावनो करब पाप थिक। परब्रह्म परमात्मामे जहिआ एहि रूपक वासना जगतैन्हि, तहिआ तँ पृथ्वी रसातल चलि जइतीहि। चौदहो भुवनक लय भए

जाएत। कृष्णजी अपन भक्तकेँ कतहु वासनाक दृष्टिएँ देखथि! ओ तँ दोष-पूर्ण नग्न-स्नानक परम्पराक अन्त करबाक दृष्टिएँ चीर-हरण कएने छलाह्। दोसर, व्रज-बालाकेँ गुप्ताङ्ग पूर्णतः उघारि लेबाक हेतु एहि रूपेँ बाध्य करबाक आशय जीवात्माकेँ परमात्मामे अभेद बुझबाक शिक्षा देब थिक, जीवात्माकेँ परमात्माक प्रति कोनहु स्थितिमे विकार नहि कर्त्तव्य थिक। साधक अपन साध्यकेँ तखनहि प्राप्त कए सकैत अछि, जखन ओ साध्यक प्रति पूर्णतः आत्म-समर्पण कए दैत अछि। साधककेँ साध्यक प्रति अन्यथा भाव नहि रखबाक थिकैक। एहि सभ विषयक शिक्षा चीर-हरणक माध्यमेँ कृष्णजी व्रज-बालाकेँ देलैन्हि अछि। व्रज-बाला मात्र किएक, सकल साधककेँ देल अछि। हे बाल मुकुन्द! हमरहु एहिना शिक्षा दिअ जाहिसँ अहाँक चरण-कमलमे हमर भक्ति बढ़ए। हमरा ने शुद्ध-शुद्ध वाणी अछि ओ ने ध्यानक हेतु एकाग्र-चित्तता। तखन हमरा सन वासना-रता स्त्रीक कोन गति? मात्र प्रभुक कृपा! धन्य व्रजाङ्गना जकरा शिक्षा देबाक हेतु प्रभुओकेँ लीला करए पड़लैन्हि!

१६

एक दिनक कथा सुनू! कृष्णजी अपन मित्र सुदामाजी-सँ कहलैन्हि—"हे मित्र! अहाँ सभ चुपचाप राधिकाक घर चल जाउ। राधिकाक माए घरमे सीक पर माखन रखने

होइति ! अहाँ सभ चुपचाप लए आनू।" मुदा सुदामा कहल-थिन्ह—"हे मित्र ! माखन चोरएबामे तँ सबसँ चतुर अहाँ अपनहि छी। तँ हमरा लोकनिक संग अहूँ चलू।" अन्तमे कृष्णजी रत्नजड़ित बाँसुरी हाथमे लए गोपाल बालक संग राधिकाक घर विदा भेलाह माखन चोरबए। निशा भाग रातिमे एक झुण्ड गोपाल बालक संग कृष्णजी पहुँचलाह राधिकाक घर। घरमे रत्नखचित सोनाक पलंग पर राधिका गाढ़ निद्रामे सूतलि छलीहि। गौर वर्ण दोहरा शरीरमे रेशमीक नील रंगक सारी, लाल रंगक कञ्चुकी ओ मणिमय आभूषण अद्भुत लागि रहल छल। अवर्णनीय सौन्दर्य ! रतिअहुकेँ मातु करैत रहथि। जेना पूर्णिमाक चन्द्रमा आइ साकार भए ब्रजबाला बनि गेल होथि। शैशव-आङनसँ यौवन-देहरि पर सद्यः पाएर रखनिहारि राधिकाकेँ देखि कृष्ण जी सहसा चौंकि उठलाह। कामदेव जेना सहस्त्र बाणसँ वेधित कए देने होथिन्ह। कामाभिभूत भए एकटकसँ राधिकाकेँ देखए लगलाह धन्य राधिका जनिक भक्ति पर प्रसन्न भए कृष्णजी रूप-सौन्दर्यक पान कए रहल छलाह ! मुदा पुनः सचेत भए गोपाल बालकेँ माखन बला घर अएबाक संकेत कएलथिन्ह। पाछाँ अपनहु ओहि घर जाए सीक परसँ माखन-मिसरी ओ दही-दूध सभ किछु उतारि लेलैन्हि। सीक परसँ उतारबो करथि ओ घुरि-घुरि राधिकाक घर दिशि तकबो करथि जे राधिका उठि ने जाथि, देखि ने लेथि ! इएह

डर रहैन्हि कृष्णजी केँ। धन्य राधिका! जनिक डरसँ तीनू लोक, समस्त चराचर डेराइत अछि, से आइ राधिकासँ डेराइत छथि। अस्तु! जेना-तेना माखन चोराए सभ केओ अपनामे बाँटए लगलाह। पहिने कृष्णजी गोप बाल सभकेँ खूब खोअओलैन्हि। तखन बलरामक हेतु वस्त्रमे बान्हि रखलैन्हि। अन्तमे अपने खाए लगलाह। खाइत खाइत बिनोदक हेतु मटकुड़ी सभ पटकि-पटकि फोड़ए लगलाह। सीक सभकेँ तोड़ि-तोड़ि फेँकए लगलाह। एवं क्रमे ततबा ऊधम मचओलैन्हि जे राधिका उठि गेलीहि। "चोर! चोर!!" चिचिआए लगलीहि। राधिकाक चिचिआएब सुनि ललिता, बिशाखा, चन्द्रावली, चन्द्रभागा सभ दौड़लि। चोरकेँ तकैत-तकैत सभ केओ जखन भनसा घर पहुँचैत छथि तँ कृष्णक संग गोप बाल केँ माखन खाइत देखैत छथि। राधा कृष्ण दिशि तकैत छथि ओ कृष्ण राधा दिशि। मुदा दूनू चुप। दूनू ठाढ़। जनिका डरसँ सूर्य-चन्द्र-इन्द्र, दिक्पाल ओ ब्रह्मादि गण थर-थर कँपैत रहैत छथि, से आगाँमे राधिकाकेँ देखि डरेँ काँपि जाइत छथि। मुदा कृष्णक स्थितिक ओ भावक अनुमान कए राधिका हँसि दैत छथि। धन्य राधिका! धन्य माखन-चोर!!

१७

इजोरिआ राति। इजोरिआक प्रकाशसँ चमकैत यमुनाक जल। चमकैत जल-धारा पर दहाइत मणिमय सोनाक नाओ। नाओ पर बैसल कृष्ण। आइ जेना तीनू भुवनकेँ मोहबाक

हेतु कृष्ण अपन वेशभूषा सुसज्जित कएने छलाह। माथमे मयूर-पुच्छ। कपार पर केशर-तिलक। कानमे मकराकृत कुण्डल। डाँरमे पीताम्बर। विहुँसैत अधर पर रत्नखचित वंशी बजबैत कृष्णजी आइ अद्भुत लगैत छलाह। इजोरिआसँ चमकैत जलधारा पर झिलहेरि खेलाइत कृष्णजीक द्वारा निनादित वंशीक ध्वनिसँ समस्त व्रज गूँजि रहल छल। आइ कृष्णजी दू हाथसँ जँ वंशी बजबैत छलाह तँ दू हाथसँ नाओ खेबइत छलाह। परमेश्वरक चारू भुजा आइ सक्रिय छल। वंशीक धुनि कानमे पड़ितहिँ गोप बालक सब, राधिका, विशाखा, ललिता आदि गोप बालिका सभ ओ सुर-सुन्दरीक कोन कथा, गाए-बच्छा पर्यन्त यमुनाक कूल धरि दौड़ल-दौड़ल पहुँचल। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल, तीनू लोक आइ कृष्णजीक वंशी-ध्वनिसँ जेना विमोहित छल! जेना हतचेत भए गेल छल !! एकेटा ज्ञान छलैक—कृष्णक वंशी-ध्वनिक ज्ञान।

१८

एहिना एक दिन यमुनाक कातक स्फटिक शिला पर बैसल कृष्णजी वंशी बजाए रहल छलाह। स्फटिकक शिला उज्जर दप-दप! ओहि उज्जर दप-दप स्फटिक-शिलापर बैसल श्याम वर्णक कृष्ण जनिक औँठिआ केश कपोलपर लटकि अलौकिक सौन्दर्यक सृष्टि कए रहल छल। आकाशक नीलिमा, यमुनाक श्यामलता ओ प्रकृतिक हरीतिमाक त्रिवेणी–

संगसमे डब-डुब करैत कृष्ण। एहि त्रिवेणी-संगसक आनन्दकेँ जेना कृष्ण आइ वंशीसँ व्यक्त करए चाहैत छलाह। ताबत ओतए पहुँचलाह ब्रह्माकपुत्र देवर्षि नारद। आइ नारदहुक रूप अद्भुत छल! माथमे विशाल जटा। भाल पर भव्य प्रतिभा। गौर वर्णक शरीरमे गेरुआ वस्त्र, हाथमे झंकृत वीणा। मुखसँ चारू वेद, अठारहो पुराण, ओ श्रीमन्नारायणक अनन्त गुणगान करैत। कृष्णजीक आगाँ ठाढ़ भए कर जोड़ने नारदजी कहए लगलाह—"हे भक्तवत्सल! सकल गाए-ब्राह्मण त्राहि-त्राहि कए रहल अछि ओ अपने वंशी बजाए रहल छी! हे देव! अहीँ तँ वामन भए बलिक घमण्डकेँ चूड़ल, इन्द्रकेँ राजत्व देल, मत्स्य रूप धए वेद आनि ब्रह्माकेँ देल। हे श्याम! अहाँ तँ दीनबन्धु छी। तखन एतेक देरी किएक कए रहल छी! की अहाँ बिसरि गेलहुँ जे राम भए अहाँ राक्षस-राज रावणक नाश कएने छलहुँ! अहाँक तँ अवतारे भक्त पर अनुग्रहसँ होइत अछि! हे मुरली-मनोहर! कंसक अत्याचारसँ सकल प्राणी त्राहि-त्राहि कए रहल अछि ओ तइओ अहाँ निश्चिन्त भए वंशी बजाए रहल छी!" एहि पर हँसैत कृष्णजी नारदजीकेँ कहलैन्हि—"हे देवर्षि! अहाँ चिन्ता जुनि करू। हम जखन क्षीर-सागरमे शयन करैत छलहुँ तखन पृथ्वी गाइक रूप धारण कए ओतए गेलि रहथि। अहूँ ओतए रही। हम हुनका वचन दए चुकल छिऐन्हि जे हुनक भार हम शीघ्र हल्लुक कए देबैन्हि। हम, शेष, लक्ष्मी

सहित देवकीक गर्भमे आएब। अहाँ दुःख नहि करू। अतः हे नारद! हमर वचन मिथ्या नहि भए सकैत अछि। हम गाए-ब्राह्मणक रक्षाहिक लेल अवतार लेल अछि। दुष्टक दमन करब हमर कर्त्तव्य थिक। आब कंसक पापक घैल भरि गेलैक अछि। आब अपन वचनक अनुसार हम पृथ्वीक भार शीघ्रातिशीघ्र हल्लुक करब। अहाँ चिन्ता जुनि करू।" कृष्णजीक एहि रूपक कथा सुनि प्रसन्न भए हरि-गुण गबैत नारदजी ओतएसँ विदा भए गेलाह।

१६

एक दिनक लीला सुनू। कृष्णजीकेँ बड़ जोर भूख लगलैन्हि। ओ दौड़ल-दौड़ल गेलाह यशोदा लग। कहलथिन्ह—"हे माए! किछु खाए दिअ। हमरा बड़ जोर भूख लागल अछि।" अपन बालमुकुन्दक एहि रूपक गप सुनि यशोदा लगले सोनाक थारमे षट्रस भोजन परसलैन्हि। माखन-मिसरी रखलैन्हि। फल-फलहरी रखलैन्हि। एहि रूपेँ छप्पन प्रकारसँ सोनाक थार सजाए कृष्णजीकेँ खए-बाक हेतु बजाओल। कृष्णजी हाथ-पाएर धोए खएबाक लेल बैसलाह। खाए लगलाह। हुनका आगाँ यशोदा बैसलि छलीहि ओ आवेससँ कृष्णकेँ खोअबैत छलीहि। कृष्ण कहलथिन्ह—"हे माए! आइ सन स्वादिष्ट भोजन पूर्वमे हमरा कहिओ नहि लागल छल। एहन रुचिसँ हम कहिओ नहि

खएने छलहुँ।" कृष्णकेँ खोअबितहिँ यशोदा अद्भुत दृश्य देखए लगलीहि। अपन चारू दिशि, जेम्हरहि ताकथि तेम्हरहि, कृष्णजीकेँ खाइत देखथि। अद्भुत दृश्य छल! आइ जेना एक कृष्ण अनेक रूप धारण कए नेने छलाह। सभठाम ओएह कृष्ण, ओएह थार। एहन दृश्य यशोदा पूर्वमे कहिओ नहि देखने छलीहि। एहि रूपक ईश्वरीय लीला देखि यशोदा ऊठि कृष्णजीकेँ साष्टाङ्ग प्रणाम कएल। एहि रूपक लीलाक प्रयोजन ईश्वरक व्यापकता देखाएब छल। सकल चराचर ईश्वरमय अछि, सएह भाव एहि लीलामे निहित छल। अपन व्यापकताक लीला देखाए कृष्णजी यशोदाक हृदयमे अनपायिनी भक्तिक सञ्चार कए देल। मुदा जखन ओ देखलैन्हि जे ओहि भक्तिसँ यशोदाक हृदयमे अलौकिक ज्ञानक आविर्भाव होअए लगलैन्हि अछि, तखन पुनः ओ हुनका मायाक आवरणकेँ आवृत कए देलैन्हि। फेर यशोदा स्नेहपूर्ण गप-सप कहैत कृष्णजीकेँ खोअबए लग-लीहि। जे सम्पूर्ण संसारकेँ खोअबेत छथि, तनिका आइ यशोदा खोआए रहलि छथि। धन्य श्याम ओ धन्य यशोदा!

२०

अगहनक मास! कदम्ब-काननक अभूतपूर्व छवि-छटा! आइ एतए कात्यायनी गौरीक पूजा होएबाक छलैक। कृष्ण-जीकेँ प्राप्त करबाक लालसासँ राधिका आइ कात्यायनीक

पूजा करबाक लेल कदम्ब-कानन जाए रहलि छलीहि। हुनक संग-संग व्रजक सोलह हजार एक सए सात गोप-बाला सेहो ओही लालसासँ जाए रहलि छलीहि। सभक माथ पर मणि-मय सोनाक थार छल। ककरहु थारमे जूही-चमेली-चम्पाक कली—दनूफ-अपराजिता-कनैल-कमल ओ गुलाबक फूल छल तँ ककरहु थारमे नैवेद्यक हेतु पकवान। मुदा सबसँ आगाँ माथ पर रत्नजड़ित स्वर्ण थार नेने ओ ओहिमे ओढुलक फूल, ललका चानन, सिन्दूर आदि रखने राधिका जाए रहलि छलीहि। आनन्दमग्न व्रज-बाला पहुँचलि कदम्ब-कानन। अपन-अपन माथ परसँ थार उतारैत गेलि। कदम्ब-तरुक नीचा सोनाक कलशमे घटस्थापन कएल गेल। तन्मय भए सकल व्रजांगना षोड़शोपचार पूजा करए लागलि। मृदंग-ढोलक--पखाउजि—वीणा—वंशी आदिक स्वरसँ समस्त कदम्ब-कानन गुञ्जित छल। सम्पूर्ण चराचर ओकरा सभक स्वर-ताल पर नाचि रहल छल। सहस्रमुख दीप प्रज्वलित कए वाद्यक ताल पर नचैत राधिका कात्यायनीक आरती उतारल। खाएब-पीअब, सूतब-ऊठब आदि सभ किछु छोड़ि सकल व्रजांगनाक संग एक मास धरि कदम्ब-काननमे रहि कठोर व्रतक पालन करैत रहलीहि राधिका। सूर्योदयसँ पूर्व उठब, प्रातःस्नान करब, फूल तोड़ब, चानन घसब ओ तल्लीन भए पूजा करब हुनका लोकनिक साधारण नित्य कृत्य छल। एक मास धरि एहिना करैत रहलाक पश्चात् अगहनक पूर्णिमा

भेल। आइ गोप बाला लोकनिकेँ खूब धूम-धामसँ पूजा करबाक छलैन्हि। खूब सबेरे उठि ओ लोकनि पूजाक ओरि-आओन कएलैन्हि। आइ सोड़हो शृङ्गार कए ओ सभ पूजा करए लगलीहि। पूजा-आरती कए सोड़हो हजार गोपिका ठाढ़ि भए कर जोड़ि कहए लागलि—"हे भक्त-वत्सले! हे शिव-प्रिये!! अहाँक आराधना करबाक हमरा सभकेँ सामर्थ्य कहाँ? जे जूड़ल ताहि लए अहाँक शरणमे आइलि छी। कृपा करू।" एहि रूपेँ आत्म-निवेदन करैत-करैत सोड़हो हजार गोप-बाला जखन भाव-विभोर भए गेलि, संज्ञा-हीन भए गेलि, आराध्याक आगाँ आँखि तकबाक सामर्थ्य नहि रहलैक, लालसासँ विह्वल भए जएबाक कारणे आँखिसँ दहो बहो नोर खसए लगलैक, अन्तमे ओ सभ जखन कात्यायनीमे पूर्णतः अनुरक्त भए गेलि, तखन गौरी प्रकट भेलीहि। गोपिका लोकनिकेँ वर माँगए कहलथिन्हि। गद्-गद् स्वरेँ राधिकाक संग-संग सोड़हो हजार ब्रजबाला वर माँगए लागलि—"हे महागौरी! कात्यायनी!! हमरा सभ पर जँ अहाँ वस्तुतः प्रसन्न छी, तँ कृष्णकेँ हमरा लोकनिक पति होएबाक वर दिअ।" "एवमस्तु" कहि गौरी अन्तर्हित भए गेलीहि। वृन्दावन-विहारीक अनुरक्ता गोप-बाला सभ आनन्दसँ नचैति अपन-अपन घर अइलीहि।

जाहि कृष्णक महिमाक वर्णन वेदो नहि कए सकल, जनिक गुण-वर्णन करैत सनक-सनन्दनो नहि अन्त पाओल,

जनिक गुण-गानमे वीणा पर सामवेदक धुनि बजबैत-बजबैत श्रीशारदो नहि पार पाओल, देवर्षि नारद नारायण-नारायण करैत रहि गेलाह, मुदा जाहि नारायणक अन्त नहि पाओल; सहस्र फणा दू सहस्र जिह्वासँ कोटिओ वर्ष धरि गुणगान करैत जनिक अन्त शेष नहि पाओल; ओहि कृष्णजीक गुण-वर्णन हमरा सन तुच्छ ओ अबला नारीसँ कतए सम्भव ? जनिका पएबाक लेल मूल प्रकृति राधिकहुकेँ कठोर तपस्या करए पड़लैन्हि, तनिक आराधनाक हेतु हमर की अस्तित्व ? हमरा तँ ने ज्ञान अछि ओ ने शुद्ध वाणी। तखन हम आराधना करी, तँ करी कोना ! मुदा धन्य कात्यायनी गौरी जनिक कृपासँ हमरहु सनक हतभागी कृष्णजीक भक्त भए सकैत अछि।

२१

एक दिनु का गप थिक। इजोरिआसँ चमकैत यमुनाक कूल। वृषभानुनन्दिनी राधिका ओहि राति उठि गेलीहि यमुना-कातक कदम्ब काननमे जतए कृष्णजी हुनक बाट तकैत छलाह। दूहू मिलि ओहि कदम्ब-काननमे क्रीड़ा करए लगलाह। ओतए ने राग छल, ने द्वेष छल ओ ने वासना छल। ओतए मात्र आराध्य ओ आराधिका छलीहि। मुदा व्रजवासी एहि भगवद्भक्तिकेँ नहि बुझि सकल। सभ मिलि विचार करए लागल जे राधिका केँ एहि रूपेँ रातिमे यमुना-कात जाए एकान्तमे कृष्णसँ मिलन करब उचित नहि। व्रज-वासी केँ ई पसिन्द नहि छलैन्हि जे राधिका एहि रूपेँ अधिक काल कृष्णसँ भेंट करैत रहथि। अन्तमे निश्चित भेल जे

यमुना-कात जाए चुप-चाप पता लगाओल जाए जे ओ दूनू गोटे की करैत रहैत छथि। ई विचारि सभ केओ यमुना-कातक कदम्ब काननक तरु पर नुकाए देखए लागल जे राधा-कृष्ण की करैत छथि। मुदा बाल मुकुन्द कृष्ण तँ अपनहि अन्तर्यामी थिकाह। ओ व्रजवासीक सोचल-विचारल सभ किछु बुझि गेलाह। बस; आब की छल! कृष्णजी अपन लीला प्रारम्भ कए देल। कृष्णजी अपने १०८ श्रीकालिका ओ राधिका केँ ब्रह्माक पूज्याक रूप मे परिवर्तित कए लेल। कृष्णजी कालिका भए तीन गोट आँखिसँ युक्त भए भय-अभयक खड्ग-मुण्ड धारण कएने, गरामे मुण्डमाला पहिरने छलाह। मन्द-मन्द हँसैत हुनक मुख-मण्डलसँ कोटिओ सूयक आभा छिटकि रहल छल। मणिमय आभूषणसँ आभूषित राधिकाक चरण-कमल ब्रह्मा फूल लए पूजि रहल छलाह। कदम्ब-काननक ओहि कुञ्जमे संगहि संग मयूर नाचए लागल ओ कोकिल कुहुकए लागल। एहन बुझि पड़ैत छल जे शुक्ल पक्षक चन्द्रमा श्यामकेँ श्यामा बनैत देखि हँसि मेघ-मालामे नुकाए गेल होथि। ओमहर राधा कृष्णक लीलाक स्थान पर एहि रूपक दृश्य देखि व्रजवासी क्षुब्ध छल। राधिका पर लगाओल कलङ्कक कारणेँ ओ सभ मनहि मन अत्यधिक लज्जित छल। ग्लानिसँ गड़ल जाइत ओ सभ अपन-अपन घर गेल। धन्य श्रीकृष्ण जे अपन भक्तक हेतु नाना प्रकारक रूप धारण करैत छथि! धन्य राधिका जनिका लेल श्रीकृष्णजी एहि रूपक लीला कएलैन्हि।

—:※:—

३

रास-लीला

१

शरद्‌ऋतु आएल। बेली, चमेली, आन-आन सुगंधित फूलक सौरभसँ सौंसे वन महमह करए लागल। चोर-हरणक दिन कृष्णचन्द्र गोपीसभकेँ कहने रहथिन्ह जे शरदक इजोरिआमे अहाँ लोकनिक कामना हम पूर्ण कए देब—कृष्ण देखलन्हि जे सभटा उद्दीपन एकठाम मीलि रहल अछि। अपना मन नहिओ रहन्हि तइओ अपन प्रेमक वश मे उताहुल गोपी सभक हेतु कृष्ण मनमे कएल जे इएह समय थिक जे अपन प्रेमक परवशा गोपी सभकेँ मन भरि दिऐक। बस, पूव दिशामे चन्द्रमा उदय भेल, बूझि पड़लैक जे पूव दिशाक मुखमण्डल पर अपन शीतल किरणरूपी करकमलसँ लालिमाक रोरी, कुङ्कुम, केसरि मलि देने होथिन्ह। पूर्णिमाक राति छल। समस्त चराचर शीतल छल, समस्त वन अनुरागक रंगमे रंगल छल, वनक कोन-कोनमे चन्द्रकला जेना अमृतक समुद्र उमलैत हो। अपन दिव्य उज्ज्वल रसक उद्दीपनक सबटा सामग्री संयुत देखि कृष्णचन्द्र अपना वंशी पर व्रज सुन्दरीक मनकेँ हरण कए ली तेँ कामबीज 'क्लीं' ई तान फूकि देलैन्हि।

ई ध्वनि प्रेमकें उत्तेजित कएनिहार, व्रजसुन्दरीक मिलन-लालसाकेँ बढ़ओनिहार छल। सब गोपीक मन तँ कृष्णमे लगले छल, ई ध्वनि सूनि ओकरा सभक मनमे जे किछु आन भाव छलैक—भय, संकोच, धैर्य, मर्यादा-सब किछु बिलाए गेलैक, ओकरा सभक विचित्र गति भए गेलैक, सब जहिँ छल तहिँ दौड़लि—जे लोकनि एक संग साधना कएने छलि जे कृष्णकेँ पति रूपमे पाबी, सेहो सब बिनु एक दोसराकेँ पुछने, बिनु कहने, नुकाएकेँ, चोराएकेँ, ततेक जोरसँ घर छोड़ि दौड़लि जे सभक कानक कुण्डल डोलैत गेलैक।

जे दूध दुहैत छलि से दूध दूहब छोड़ि देलक। जे चुल्हि पर दूध औँटैत छलि से दूध उधिआइते छोड़ि देलि। जे भोजन परसि रहलि छलि से थारी ओहिना छोड़ि देलक। जे बच्चाकेँ दूध पिअबैत छलि से ठामहि बच्चाकेँ भूमि पर पाड़ि दौड़लि। जे पतिक शुश्रूषा करैत छलि से बीचहिमे छोड़ि पड़ाइलि। केओ गोपी देहमे उबटन लगबैत छलि, केओ चानन मलैत छलि, केओ काजर करैत छलि, सब जहिना छलि तहिना, उनटले ओढ़नी लेने, बताहि जकाँ, कृष्णक समीप पहुँचबाक उत्सुकता सँ, धड़फड़ाइलि दौड़लि। बाप ओ भाए, संग ओ समाज आओर की पति ससेत रोकलकैक जे एतेक रातिकेँ कतए जाइत छें, परन्तु रोक के मानैत अछि? ओकरा सभक प्राण, मन, आत्मा सब किछु तँ कृष्ण हरि लेने छलथिन्ह, केओ रोकलि नहि भेलि, केओ नहि रुकलि।

किछु गोपी एहनो छलि जकरा घरसँ बहरएबाक उपाय नहि भेलैक, बाट नहि सुझलैक। ओ सब ठामहि आँखि मूनि कृष्णक सुन्दरता, कृष्णाक मधुरता, कृष्णाक विलास-लीलाक ध्यान तन्मय भएकेँ करए लागलि। परम प्रियतमक असह्य विरहक तीव्र वेदनासँ ओकरा सभक हृदयमे एतेक व्यथा भेलैक, हृदय एतेक जरए लगलैक, जे जँ कोना अशुभ संस्कारक लेशमात्रो बाँचल छलैक तँ से ओही आगिमे भस्म भए गेलैक। सब कृष्णमय भए गेलि ओ सबहिक आँखिक सोझाँमे मोहन उपस्थित छलथिन्ह, सबकेँ प्रेमसँ, आवेशसँ अपन छातीसँ लगबैत छलथिन्ह। ओकरा सभकेँ एतेक सुख भेटलैक। एतेक शान्ति भेटलैक, जे सब धन्य भए गेलि।

एहिमे सन्देह नहि जे गोपी सभक हृदयमे जार-भाव छलैक, सबकेँ कामवासना रहैक, परन्तु कृष्णसँ तँ कोनहु भावमे तन्मय होएब मुक्ति थिक। शिशुपाल द्वेष-भावसँ भगवानमे तन्मय छल, ओकरहु तँ भगवान तारिए देलथिन्ह। तखन जे कृष्णकेँ प्रेम करैत छलि तकर कथा कोन! भगवान अपनाकेँ प्रकट करैत छथि, लीला देखबैत छथि, से तँ एही प्रयोजनसँ जे जीव ओहि द्वारा अपन कल्याण करए तेँ सम्बन्ध केहनो हो, कामक हो, क्रोधक हो, भयक हो, मित्रताक हो, कोनहु भावसँ हुनका संग अपन सकल वृत्ति नित्य ओ निरन्तर जोड़ि देल जाए तँ भगवन्मय भए गेलहुँ।

२

कृष्ण जखन देखलेन्हि जे ब्रज-सुन्दरी लोकनि सभ केओ दौड़लि-दौड़लि आबि गेलीहि, केओ बाँकी नहि छथि, तखन ओ विनोदसँ भरल वाक्चातुरीसँ सभकेँ मोहित करैत कहए लगलाह—"हे, हे; भाग्यवती गोपाङ्गना-गण! हे, हे, ब्रज-सुन्दरी!! सभक स्वागत। कहू, हम अहाँ लोकनिकेँ प्रसन्न करबाक हेतु की करू? ब्रजमे सब कुशल छैक कि ने? एहि रातिकेँ एतए अएबाक कोन प्रयोजन पड़ल? रातिक समय स्वयं भयावह होइत छैक, ताहि पर जंगलमे भयानक जीव-जन्तु रहैत छैक। एतेक रातिकेँ जंगलमे स्त्रीगणकेँ नहि रहबाक चाही। अहाँ लोकनिक माए-बाप, पति-पुत्र, भाए बन्धु, सभ अहाँ लोकनिकेँ तकैत होएताह। वनक शोभा देखल, पूर्ण चन्द्रक कोमल किरणसं रञ्जित वनकँ देखल, यमुनाजलक स्पर्शसँ शीतल समीरक मन्द-मन्द गतिसं डोलैत वनक अनुपम शोभा देखल। आब देरी जनु करी। घुरि जाउ। अहाँ लोकनि कुलीन स्त्री छी! जाइत जाउ। अपन अपन पतिक शुश्रूषा करैत जाउ। देखू! अहाँ लोकनिक घरमे बच्चा कनैत होएत। बच्छा सब डिरिआइत होएत। जाउ, बच्चाकेँ दूध पिआउ। गाइकेँ दुहाउ।

अथवा यदि हमर प्रेमक परवश भए आइलि छी, तँ से कोनो अनुचित नहि। समस्त चेतन जगत हमरासँ प्रेम

करैत अछि। मुदा हे व्रजसुन्दरी-गण! स्त्रीक परम धर्म तँ ई ने थिक जे निश्छल भावसँ पतिक सेवा करए ओ सन्तानक पालन-पोषण करए। पातकीक कथा नहि हो, नहि तँ दुःशील अथवा भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी अथवा निर्धन, केहनो पति हो, स्त्रीक धर्म तँ थिकैक जे ओकर त्याग नहि करए, ओकर सेवा करए। परपुरुषक सेवा तँ कुलीन नारीक हेतु निन्दनीय थिक। हे गोपी! हमर लीला ओ गुणकेँ सुनलासँ, हमर रूपक दर्शनसँ, ओकर कीर्त्तन ओ ध्यानसँ हमरा प्रति जतेक अनन्य प्रीति होइत छैक, ततेक हमर लग रहलासँ नहि होएतैक। तेँ कहैत छी जे अहाँलोकनि घुरि जाउ। अपन-अपन घर जाइत जाउ।"

कृष्णक एहन अप्रिय भाषण सूनि कए सभ गोपी उदास भए गेलीहि। सभक आशा टुटि गेलैन्हि। बिम्बफल सन-सन लाल ठोरसँ फुफरी पड़ि गेलैन्हि। सभक मुह लटकि गेलैन्हि! पाएरक नहसँ सभ माटि खोधए लगलीहि। आँखि-सँ दहो-बहो नोर बहए लगलैन्हि जे काजरसँ कारी छाती धरि टघरए लगलैन्हि! अनन्य अनुराग ओ परम प्रेमसँ सभ केओ अपन समस्त कामना, समस्त भोग छोड़ि आइलि छलीहि। तेँ ओही प्रियतमसँ जखन ओ लोकनि एहन निष्ठुर कथा सुनलैन्हि तँ हुनका लोकनिकेँ बड़ दुःख गेलैन्हि। कनैत-कनैत आँखि लाल छलैन्हि। कण्ठ रुद्ध छलैन्हि। बड़ी काल धरि ओहिना चुप चाप ठाढ़ि ओलोकनि पछाति बड़ यत्नसँ धैर्य धारण कएलैन्हि। आँखि पोछलैन्हि। कण्ठ साफ

कएलैन्हि। ओ प्रणय-कोपक कारणेँ गद्-गद स्वरमे कहए लगलीहि !

"हे नाथ ! हमरा लोकनिक हृदयक कोन बात अहाँसँ नुकाएल अछि ? एहन निष्ठुर वचन अहाँकेँ नहि कहबाक चाही। हमरालोकनि सभ किछु छोड़ि अपनाकेँ अहाँक चरणक प्रेममे समर्पण कए देने छी। हमरा लोकनि जनैत छी जे अहाँ स्वतन्त्र छी, जिद्दी छी। अहाँ पर हमरा लोकनिक कोनो वश नहि अछि। हमरहि लोकनि परवश छी। तइओ जेना भगवान अपन भक्तकेँ नहि छोड़ैत छथिन्ह, तहिना अहाँ हमरा लोकनिकेँ नहि छोड़ू। हमरा लोकनिकेँ स्वीकार करू।

हे मनमोहन ! अहाँ स्त्रीक धर्मक ठीके शिक्षा देल अछि। मुदा पतिकेँ तँ देवता-समान बुझि ने सेवा कर्त्तव्य थिक। मुदा जँ भगवान् स्वयं भेटि जाथि, तँ भगवान्क सेवा करी, की भगवान्क समान पतिक सेवा करी ? अहाँ नित्य प्रिय छी। पति वा पुत्र, भाए वा बन्धु अनित्य ओ दुःखद, थिकाह। अहाँ जँ भेटि जाइ तँ अनकासँ कोन प्रयोजन ? तँ हे कमलनयन ! चिरकालसँ अहाँक हेतु पालल-पोसल आशा-अभिलाषाक लहलहाइत लताकेँ उपारि कए फेकि जनु दिअ। एतेक दिन हमरा लोकनिक मन अपन घरक काज-धन्धामे लागल रहैत छल। मुदा अहाँ हमरा लोकनिक चित्त लूटि लेल अछि। हमरा लोकनिक गति-मति एकदम बदलि

गेल अछि। हमरा लोकनि एक डेग अहाँक 'चरण-कमलसँ फराक नहि होएब। व्रजसे कोना जाउ ? किएक जाउ ? अहाँक मधुर हास, प्रेमसँ भरल अहाँक ताकब, अहाँक मनोहर संगीत, हमरा लोकनिक हृदयमे अहाँक मिलनक आगि लगाए देलक अछि। अपन अधरक रस-धारासँ से मिझाएदिअ। नहि तँ, हमरा लोकनि सत्य कहैत छी जे एहि विरहक ज्वालामे हमरा लोकनिक अपन शरीर डाहि देब ओ ध्यानसँ अहाँक चरण-कमलकेँ प्राप्त कए लेब।

हे नाथ ! समस्त वनवासी अहाँसँ प्रेम करैत अछि। भाग्यसँ ई सौभाग्य हमरहु लोकनिकेँ भेटल अछि। अहाँ जहिआ हमरा लोकनिक प्रेम स्वीकार कएल, तहिआसँ हमरा लोकनि ककरो दोसरक सोझाँ ठाढ़ि नहि भए सकलि छी। सभ अहीँक चरण-रज चाहैत अछि। हमरहु से भेटए। अपन दासीक रूपमे हमरा स्वीकार करू। सेवाक अवसर दिअ। अहाँक ई सुन्दर मुख-कमल, अहाँक ई औँठिआ केश, अहाँक ई सुन्दर गाल ओ ताहि पर डोलैत ई मकराकृत कुण्डल, अहाँक ई मधुर अधर जकर सुधा सुधाकेँ मातु करैत अछि, अहाँक नयन, अहाँक मनोहारी आँखिक कटाक्ष, अहाँक ई मन्द मधुर मुसकान, अहाँक ई भुजदण्ड जे शरणागतकेँ अभयदान दैत छैक, अहाँक ई छाती जे लक्ष्मीक क्रीड़ास्थल थिकैन्हि, कतेक कहू, अहाँक ई मनमोहन रूप हमरा लोकनिकेँ मोहि लेने अछि। हमरा लोकनि सभ अहाँक

दासी छी। तीनू लोकमे के ओ नारी होइति जे अहाँक वंशीक ध्वनि सुनि ओ अहाँक मोहिनी मूर्त्ति देखि आत्म-मर्य्यादासँ विचलित नहि भए जाएत, लोक-लज्जाकँ त्यागि अहाँमे अनुरक्त नहि भए जाएत। ककरा नहि बुझल छैक जे अहाँक अवतार भेल अछि व्रज-मण्डलक भय ओ दुःखकेँ मेटएबाक हेतु। दीन-दुःखी पर अहाँक असीम कृपा अछि। हमरहु लोकनि दुःखिनी छी। अहाँक मिलनक अभिलाषासँ हमरा लोकनिक छाती धधकि रहल अछि। अहाँ हमरा लोकनिक छाती पर, हमरा लोकनिक माथ पर अपन कोमल कर-कमल राखि हमरा लोकनिकेँ अपनाए लिअ। हमरा लोकनिकेँ जीवनदान दिअ।"

३

व्रजाङ्गनाक व्यथा देखिकेँ ओ व्याकुलताक वाणी सुनिकेँ कृष्णकेँ हँसी लगलैन्हि, हृदय दयासँ भरि गेलैन्हि। प्रेमसँ भरल अपन कमलनयनसँ ओ सभक दिशि तकलन्हि ओ हुनक तकलहिसँ समस्त गोपाङ्गनाक सकल विषाद ठामहि विलाए गेलैक। कृष्ण छलाह आत्माराम, अपनहिँमे रमण कएनिहार, जनिका आनन्दक हेतु अपनासँ बाहरक कोनहु वस्तुक अपेक्षा नहि रहैन्हि। तथापि अपनामे अनुरक्ता एहि व्रजरमणी-गणक तोषार्थ ओ रमण आरम्भ कए देल। अपन भावभङ्गी, अपन चेष्टा, अपन कायिक व्यापार ओ गोपीसभक इच्छाक

अनुकूल करए लगलाह। प्रसन्न भए हँसलाह तँ कुन्दकलीक सन-सन हुनक दाँत समस्त मण्डलीकेँ मुग्ध कए देलक। हुनक ताकब, हुनक हँसब, गोपी सभक मुहकेँ प्रफुल्लित कए देलक। सभ हुनका चारूकातसँ घेरिकेँ ठाढ़ि भए गेलि, बूझि पड़ल जेना तारागणसँ घेरल स्वयं चन्द्रमा विराजमान रहथि। ठेहुनधरि लटकल वैजयन्ती माला पहिरने कृष्ण घूमए लगलाह ओ प्रत्येक रमणीक सङ्ग प्रेम करए लगलाह। कतहु गोपी कृष्णक गुण गबैत छलि; कतहु कृष्ण गोपीक प्रेम ओ सुन्दरताक गीत गबैत छलाह। एहिना समस्त यूथकेँ आनन्दित, पुलकित, करैत, घुमैत फिरैत कृष्ण सभकेँ लेने यमुनाक किनार पर लए अनलैन्हि जतए पूर्ण शारद चन्द्रक किरणसँ बालुक कण बुझि पड़ैत छल जे कर्पूरक बुकनी हो। ओ स्थान यमुनाक तरल तरंगसँ शीतल ओ कुमुदिनीक सौरभ सँ सुवासित छल।

काञ्चन मणिगण जनु निरमाओल रमणी मण्डल साँझ।
माँझहि माँझ महामरकत सन श्रीश्यामल नटराज॥
धन धन अपरुप रास विहार।
थिर विजुरीसँ चञ्चल जलधर रस वरिसए अनिवार।
कत कत चान तिमिर पर विलसए तिमिरहि कत कत चाँद।
कनकलता इ तमालहु कतकत दुहू दुहू तन बाँध॥

कृष्ण अपन दूहू हाथ पसारैत, गोपी सबकेँ छातीसँ लगबैत, आकर हाथ दबबैत, ओकर वेणी, जाँघ, कोँचा ओ छातीकेँ

दुलारसँ छुबैत, पोछैत, मलैत, नाना प्रकारक विनोद करैत, कटाक्षसँ सब दिशि तकैत, हँसैत, समस्त व्रजाङ्गना-यूथक दिव्य कामरसकेँ, ओकरप रसोज्वल प्रेमभावकेँ, उत्तेजित करैत, अपन विलासकलासँ सबकेँ आनन्दित करए लगलाह। मुदा कृष्ण जखन एहिरूपेँ ओहि गोपीक यूथक प्रत्येक रमणीकेँ अपन प्रेमसँ सम्मानित कएलथिन्ह तँ प्रत्येकक मनमे एहन सन भाव उदित भेलैक जे संसारक समस्त नारी-समाजमे हमहीँ सबसँ श्रेष्ठ छी, हमरा सनि दोसर केओ नहि अछि। सभक मनमे कनेक कनेक मानक भावना जागए लगलैक। कृष्ण देखलन्हि जे एकरालोकनिकेँ तँ अपन सोहागक गर्व भेल जाइत छैक, ई सब तँ आब मानो करए लागलि तँ ओहि गर्वकेँ शान्त करबाक निमित्त, मानकेँ हटाए प्रसन्न करबाक निमित्त, ओहिठाम लगले विलाए गेलाह, अन्तर्धान भए गेलाह। सब तकैत अछि तँ कृष्णकेँ नहि देखैत अछि, ओ तँ ओहि मण्डलीसँ एकाएक जेना विलीन भए गेल छलाह।

४

विलासलीलामे मग्न गोपीलोकनि देखैत छथि तँ कृष्णक कतहु पता नहि। सभकेओ सहसा विक्षिप्त जकाँ ताकए लगलीह। वनमे विनु गजराजेँ जे दशा हथिनी सभक होइत छैक सएह दशा सभक भए गेलैन्हि। विलासक ओहि उन्मत्ता-वस्थामे कृष्णक विरह हुनकालोकनिकेँ आगिक ज्वाला जकाँ

जरबए लगलैन्हि। कृष्णक भावभङ्गी, हुनक चेष्टा, हुनक रसिकता सभक हृदय चोराए लेने छल। प्रेममे पागलि सब व्रजाङ्गना कृष्णमय भए गेलि छलि, ओ सब लागलि किछु काल धरि कृष्णक चेष्टा करए; ओहिना चलब, ओहिना हँसब, ओहिना ताकब, ओहिना बाजब, ओहिना चेष्टा करब, ओहिना गोपी सबसँ प्रेम करब। सब अपनहिकेँ कृष्ण बुझए लागलि, परस्पर मिलि सब उच्चस्वरसँ कृष्णक गुणगान करैत दौड़ए लागलि, एहि वनसँ ओहि वन, एहि कुञ्जसँ ओहि कुञ्ज, कृष्णकेँ तकैत। ओ तकैत-तकैत जखन थाकि गेलि तखन लागलि पुछारी करए, पूछए लोकसँ नहि, लोक तँ ओतए छलैक नहि; वृक्षसँ, गुल्मसँ लतासँ जीव-जन्तुसँ आ' पृथ्वीसँ। पहिने बड़का-बड़का वृक्षसँ पूछलि—हे पीपड़, हे पाकड़ि, हे वट, नन्दनन्दन श्यामसुन्दर हमर मन चोराएकेँ चल गेलाह अछि। कोम्हर गेलाह? अहाँ नहि देखलिअन्हि? तखन लागलि स्त्रीजातिक वृक्षसँ पूछए—बहिनि तुलसी! अहाँक हृदय तँ बड़ कोमल अछि, अहाँकेँ तँ अपनहुँ कृष्णसँ बड़ प्रेम अछि। कतबओ भमरा मरराइत रहओ अहाँक माला कृष्ण कहिओ गरासँ उतारैत नहि छथि, हरदम पहिरने रहैत छथि—की अहाँ नहि कहि सकैत छी जे अहाँक प्रियतम, जे हमरो प्रियतम छथि, से कोम्हर देने कतए जाए नुकाए रहलाह।" अहिना मालती, मल्लिका, जाती, जूही पुनः रसाल, कटहर, कचनार, जामु, आक, बेल, भालसरी, कदम्ब, नीम जएह गाछ भेटैन्हि

जएह लती भेटैन्हि, जएह कुञ्ज भेटैन्हि, सबकेँ पुछैत, बौआइत रहलीह। पृथ्वीकेँ पुछथिन्ह, हरिणीकेँ पुछथिन्ह—कहथिन्ह केओ मनमोहन श्यामकेँ नहि देखलिअन्हि? हुनक गरामे तुलसीक माला पर भमरा मरराइत होएतन्हि, हुनक एक हाथमे लीलाकमल होएतैन्हि, दोसर हाथ अपन प्रियतमाक कान्ह पर होएतैन्हि, एम्हरहि देने टहलैत ओ गेल होएताह।

एना बताहि भेलि, प्रलाप करैत, गोपी सब तकैत-तकैत कातर भए गेलि। विरहमे प्रेमक प्रगाढ़ता बढ़ैत गेलैक। भावावेशमे कृष्णमय भएकेँ लागलि सब केओ कृष्णक अनुकरण करए। एक गोटे पूतना बनलि, दोसर कृष्ण भए ओकर स्तनपान करए लागलि। केओ शकट बनलि, दोसर कृष्ण बनि पाएरसँ ओकरा ठेलि देलि। केओ गोपी बकासुर बनि पाएर घसैत-घसैत चलए लागलि जाहिसँ ओकर पाँजेब रुनझुन-रुनझुन बाजए लागलि। तहिना कृष्णक नाना लीलाक अनुकरण होअए लागल जेना कृष्ण बनमे करथि। केओ गोपी कृष्ण बनि वंशी टेरए लागलि, केओ गोपी कृष्ण जकाँ दोसर गोपीक गरामे अपन दूहू बाहु लटकाए चलए लागलि, केओ गोवर्धन धारणक अनुकरण करैत अपन ओढ़नी उपरकेँ पसारि लेल। एक गोपी बनलि कालीय, दोसर कृष्ण बनि ओकर माथ पर चढ़बाक उपक्रम करए लागलि। एक बनलि यशोदा दोसर कृष्ण बनि ऊखरिमे बान्हल जएबाक भय देखबए लागलि।

पुनः आवेशमे गोपी सब उठलि, दौड़लि, प्रलाप करए

लागलि। तावत एक ठाम बालु पर कृष्णक पाएरक चिन्ह देखि पड़लैक। ध्वजा, कमल, वज्र, अङ्कुश ओ जव इत्यादिक चिन्हसँ स्पष्ट भए गेलैक जे ई नन्दनन्दन श्यामसुन्दरक चरण-चिन्ह थिक। ओही चरणचिन्हक अनुसरण करैत सभ व्रजाङ्गना आगाँ बढ़ए लागलि, तावत कृष्णक चरणचिन्हक संग-संग कोनहु युवतीक सेहो चरणचिन्ह देखि पड़लैक। से देखि तँ समस्त मण्डली व्याकुल भए उठलि। सब कहए लागलि, "जेना हथिनी गजराजक संग गेलि हो, नन्दनन्दनक संग हुनक कान्ह पर हाथ राखिकेँ चलैत कोन सौभाग्यवतीक ई चरण-चिन्ह थिक? हो न हो ई ओएह "आराधिका" होइति जकरा पर एतेक मोहित भए व्रजमोहन हमरा लोकनिकेँ छोड़ि ओकरा संग कए एकान्तमे लए गेलाह अछि। आ' एकसरे ओ हमरा लोकनिक सर्वस्व श्यामक अधर-रसपान करैत होइति।" आगाँ देखैत अछि जे पदचिन्ह गाढ़ छैक गोपी सब बाजए लागलि। "देखह, सखी लोकनि, पाएरक चिन्ह, जेना कोनो भार उठोओने श्यामक होइन्हि। मने एहिठाम मनमोहन ओकरा कोरामे लए फूल तोरओलन्हि।" आगाँ देखैत अछि तरवाक गहीँड़ चिन्ह, एँड़ीक चिन्ह नहि। गोपी कहैत अछि "बुझि पड़ैत अछि एहिठाम श्याम अपनहि एँड़ी अलगाए फूलक गुच्छा तोड़ि राधिकाक केशमे खोँसने छथि।" एहिना प्रलाप करैत करैत, ईर्ष्यासँ जरैत, पाएरक चिन्हक अनुसरण करैत गोपी सब आगाँ बढ़ैत गेलि। ई सब खेड़ि कृष्ण

देखओने छलाह कामीजनक दीनता ओ स्त्री-परवशता तथा नारी-स्वभावक कुटिलता देखएबाक हेतु।

ओमहर जाहि व्रजाङ्गनाकेँ कृष्ण एकान्तमे लए गेल छलाह आ' अपन विलाससँ ओकरा परितृप्त कएने छलाह तकरा मनमे अहंकार जागि गेलैक जे सब गोपीमे हमहीँ श्रेष्ठ छी, तेँहि ने नन्दनन्दन सबकेँ छोड़ि हमरहि एकान्त प्रेम करैत छथि। तेँ अपन प्रेम ओ अपन सौभाग्यक गर्वसँ मातलि गोपी कृष्णकेँ कहए लागलि—"प्रियतम ! हमर पाएर आब नहि चलैत अछि। हम थाकि गेलि छी। आब जँ आगाँ चली तँ हमरा कन्हा पर लए चलू।" विहुँसैत कृष्ण कहल—"प्रिये, आउ, हमरा कान्ह पर चढ़ि जाउ" आ'जएह ओ कृष्णक कन्हा पर चढ़ए लागलि, कृष्ण बिलाए गेलाह। ओ तँ क्षोभ ओ विषादसँ कानए लागलि, विलाप करए लागलि ओ अचेत भए खसि पड़लि। ताबत सब गोपी पाएरक चिन्ह तकैत-तकैत ओम्हरहि आइलि, दूरहिसँ ओ सब अचेत पड़लि अपन सखीकेँ देखलक। सबकेओ मीलिकेँ ओकरा होसमे अनलक, ओकरा "की भेलहु" से पूछए लागलि। ओहो गोपी सबटा गप्प सबकेँ कहए लागलि जे कोना ओकरा कृष्णक प्रेम ओ सम्मान भेटलैक, मुदा कोना ओ अपन गर्व मे कुटिलतासँ हुनक अपमान कएलक। जकर परिणाम भेलैक जे प्रियतम ओकरा छोड़िकेँ कतहु चल गेलथिन्ह, बिलाए गेलथिन्ह। आब सब गोपी कृष्णकेँ तकैत-तकैत थाकि

गेलि छलि। जतए धरि इजोरिया छलैक, गेलि। आगाँ अन्हार छलैक। कृष्णमे तन्मय तँ सब भइए गेलि छलि। सबहक रोम-रोमसे एकेटा प्रतीक्षा रहैक, एकेटा आकांक्षा रहैक जे शीघ्रसँ शीघ्र कृष्ण आबथु। हुनके भावनामे डुबलि सब गोपी यमुनाक कछेरमे बालुक रेत पर आबिकेँ बैसि रहलि ओ संग मीलि कृष्णक गुणगान करैत विलाप करए लागलि।

ई गोपिका-गीत साहित्यक चरम उत्कर्ष थिक, बड़-बड़ कवि ओ महात्मालोकनि विरहिणी ब्रजाङ्गनाक एहि विलापकेँ नानारूपसँ भिन्न-भिन्न भाषामे अत्यन्त सरस, मधुर, ललित पदमे वर्णन कएने छथि। हम निरक्षर, अबला एकर की वर्णन कए सकब। एतबए कहब जे ओ सब अपन विरह, अपन अनुराग, अपन मनोरथ, नाना भावभङ्गीसँ बड़ करुण शब्दमे व्यक्त करैत रहलि। कहए जे "हे प्रियतम! हमरालोकनि अहाँक बिनु दामक दासी छी। अपन आँखिसँ अहाँ हमरा-लोकनिक हृदयकेँ बेधि, नुकाए रहलहुँ अछि। की हमरा-लोकनिकेँ मरए देब? बड़-बड़ विपत्तिसँ अहाँ समस्त व्रजक रक्षा कएने छी। इन्द्रक दर्पकेँ तोड़ि अहाँ गोवर्धन धारण कएल। अस्त्रसँ नहि, अपन आँखिक बाणसँ अहाँ हमरा-लोकनिकेँ की मारि देब? कमलहुसँ कोमल चरण लेने अहाँ एहि रातिमे कतए बौआइत फिरैत छी। अपना प्रेमसँ हमरा-लोकनिक हृदयमे मिलन-लालसाक आगि लगाए हमरा-लोकनकेँ जरैत जनु छोड़ल जाए। हे श्यामसुन्दर! हे प्राण-

नाथ! अपन कपटी स्वभाव छोड़ू, खेड़िमे हमरालोकनिक प्राण जनु ली। हमरालोकनिक जीवन अहीँक हेतु अछि, हमरालोकनि अहीँक हेतु जीबि रहल छी, हमरालोकनि अहीँक छी। हे दयासागर! हमरालोकनि पर दया करू।

कहाँ गेलहुँ मनमोहन हे अँचरा झकझोरिकेँ॥
दधि हरि छिनलहुँ, बाँहि मड़ोरलोहुँ
गागर शिर पर फोड़लहुँ हे नथिआ मोर तोड़िकेँ॥
माखन लुटलहुँ, गोप खोऔलहुँ
घर घर वेणु बजओलहुँ हे कारी कमरी ओढ़िकेँ॥
मुरली टेरलहुँ, मोहिनी गहलहुँ
मायामे नृत्य करओलहुँ, हे परब्रह्म बनिकेँ॥
अरजि सुनओलहुँ, भक्ति प्रभु देलहुँ
"राजलक्ष्मी" सभकेँ मोहलहुँ हे राधाकृष्ण बनिकेँ॥

५

सब गोपी विरहक तापमे प्रलाप करैत छलि, कनैत छलि, बजैत छलि, कानि-कानि गबैत छलि, ताबत श्यामसुन्दर एका-एक हुनकालोकनिक मध्यमे हँसैत-बिहुँसैत प्रकट भए गेलाह। हुनक मुख प्रसन्न छल। गरामे वनमाला छलन्हि। पीताम्बर धारण कएने छलाह। कोटि मनमथक मनकेँ मथनिहार श्यामसुन्दरक रूप देखितहिँ सब गोपीक मुह ओ आँखि आनन्दसँ फुलाए गेलैन्हि, सबकेओ एकहि बेरि उठिकेँ ठाढ़ि

भए गेलि। देहमे जेना नव प्राणक सञ्चार भेल हो, नूतन चेतना आबि गेल हो, नवीन स्फूर्तिक सञ्चार भेल हो। एक गोटे दौड़िकेँ कृष्णक दूनू पाएर पकड़ि अपना कोरामे लए छातीसँ जाँतए लागलि; दोसर हुनक चानन लेपल दून बाँहिकेँ अपना कान्ह पर लए लेलक; तेसरि कृष्णक मुहक चिबाओल पान अपना हाथमे लेलक; चारिम जकरा हृदयमे विरहक ज्वाला तीव्र छलैक बैसि गेलि ओ कृष्णक पाएरकेँ अपना हृदयमे लगाए राखलि; पाँचम प्रणय-कोपमे आँखि टेढ़कए कृष्णकेँ कटाक्षसँ वेधए लागलि; छठम बिनु पिपनी खसओने एक टकसँ कृष्णक रूप-सुधाक पान करए लागलि; सातम अपना आँखिसँ कृष्णकेँ अपना हृदयमे लए जाए आँखि मूनि ठाढ़ि रहलि। परम उत्साह छल, सर्वत्र आनन्द छल, अपूर्व शान्ति छल। सभकेँ संग कए कृष्ण ओही यमुनाक कछेरमे बैसि गेलाह। गोपीसब अपन-अपन ओढ़नी उतारि बालु पर बिछाए देलक जाहि पर कृष्ण बैसलाह ओ चारू कातसँ घेरि सबगोटे हुनका देहमे लटकलि, सटलि, पसरिकेँ बैसि गेलि।

तखन एक गोपी नटनागरसँ प्रश्न कएलक जे "हे मन-मोहन! कतेक गोटे होइत छथि जे जे प्रेम करैत छैन्हि तकरासँ प्रेम करैत छथि; कतेक गोटे होइत छथि जे जे प्रेम नहि करैत छैन्हि तकरहुसँ प्रेम करैत छथि; कतेक गोटे छथि जे जे प्रेम करैत छैन्हि तकरहुसँ प्रेम नहि करैत छथि;—एहिमे सबसँ नीक के? अहाँकेँ के पसिन्द?" कृष्ण उत्तर देल जे "हे सुन्दरी गोप-

ललना ! प्रेम कएला पर जे प्रेम करैत छथि ओ तँ स्वार्थ करैत छथि। ई तँ भेल लेन ओ देन। एहिमे ने मित्रता छैक, ने प्रेम छैक। जे प्रेम नहि कएलहु पर प्रेम करैत छथि ओ थिकाह करुणाशील सज्जन, माए ओ बाप। हिनकालोकनि यथार्थ हितैषी थिकाह आ' सत्ये निश्छल प्रेम करैत छथि, धर्म कमाइत छथि। किछु गोटे एहन छथि जे प्रेम कएनिहारहुसँ प्रेम नहि करैत छथि, प्रेम नहि कएनिहारक त' कथे कोन। एहन लोक चारि प्रकारक होइत अछि—एक तँ ओ जे अपनहि स्वरूपमे मग्न रहैत छथि ओ तनिका दृष्टिमे दोसरक भासे नहि होइत छैन्हि; दोसर ओ जे दोसरकेँ चिन्हैत तँ छथि मुदा जे कृतकृत्य रहैत छथि, जनिका आनसँ कोनो प्रयोजने नहि रहैत छैन्हि; तेसर ओ जनिका ज्ञाने नहि छैन्हि जे के हमरासँ प्रेम करैत अछि आ' चारिम ओ थिकाह जे जानि बूझिकेँ अपन प्रेमी, हित, उपकारी, गुरुतुल्य व्यक्तिअहुसँ द्रोह करैत छथि।

मुदा हे गोपी ! हमरासँ जे प्रेम करैत छथि तनिकहु सङ्ग हम से प्रेम नहि करैत छिऐन्हि जे हमरा करबाक चाही आ' से हम करैत छी ई जानि जे जे हमरा प्रेम करैत छथि हुनक चित्तवृत्ति हमरामे आओर लगैन्हि, निरन्तर लगले रहैन्हि। निर्धनकेँ जँ धन भेटैक मुदा हेराए जाइक तकर मन जेना धनक चिन्तामे लागल रहतैक तहिना हमहुँ भेटैत तँ छिअन्हि प्रेमीकेँ मुदा मिलन दएकेँ नुकाए रहैत छिऐन्हि। अहाँलोकनि हमरा हेतु लोक-वेद, प्रियजन-परिजन सबकेँ छोड़ि अपन मन हमरामे

लगाओल। एहना स्थितिमे अहाँलोकनिक मन आनठाम नहि जाए, हमरहिमे लागल रहए, अपन रूप वा सोहागक चिन्तासँ विचलित ने भए जाए, तेँ हम प्रेम करितहुँ अहाँलोकनिसँ नुकाए-नुकाए रहल करैत छी। अहाँलोकनि सब केओ हमर प्रेयसी छी, हम अहाँलोकनि सबहिक प्रियतम छी। घर-आङ्नक बन्धनकेँ तोड़ि जेना अहाँलोकनि हमरामे रमल छी तेना तँ बड़का-बड़का योगी सेहो नहि कए सकैत छथि। हमर-अहाँक ई मिलन, आतमाक ई संयोग, निर्मल अछि, निर्दोष अछि। अनन्त काल धरि अहाँक प्रेम, अहाँक सेवा, अहाँक त्यागक यदि हम बदला चुकबए चाही तइओ नहि सधाए सकैत छी। जन्म जन्मक हेतु हम अहाँलोकनिक ऋणी छी, अपन शीलसँ, अपन प्रेमसँ अहाँलोकनि हमरा उऋण बनाए सकैत छी, मुदा हम तँ सबदिनक हेतु अहाँक ऋणी रहब।"

६

नन्दनन्दनक एहन प्रेमसँ भरल, सुमधुर वाणी सुनि सब ब्रजाङ्गना आनन्दसँ पुलकित भए गेलीह। विरहक जे ताप छलैन्हि से निःशेष भए गेलैन्हि। मधुरताक सागर अपन प्राणप्रिय कृष्णक अङ्ग-सङ्गसँ सफल मनोरथ भए गेलीह। सभ बाँहिमे बाँहिमे जोड़ि गोलाकार बनाए ठाढ़ि भए गेलीह। सभक संग कृष्ण रासक लीला आरम्भ कए देल। मनबोधक शब्दमे—

दुइ गोपी बिच एक मुरारि
दुइ कृष्णक बिच एकएक नारि
ऐं परि रासक मण्डल भेल
केओ कह निसि युग बिति गेल।

दू-दू गोपीक बीचमे एक कृष्ण प्रकट भए गेलाह। सभ गोपी अनुभव करैत छलि जे हमर प्रियतम हमरहि सङ्ग छथि, हमरहि सङ्ग क्रीड़ा करैत छथि।

नाचत नटिनि गाब नाटशेखर, गाबति नटिनि नाच व्रजराज।
श्यामल गौर गौरिसों श्यामल नवजलधर जनु विजुरि विराज॥
हेरि हेरि रास कलारस मनमथ, लागल मनमथ धन्ध।
ऊगल गगन सगन रजनीकर चौदिस फिरत दीप धरि चन्द॥

ओहि समय समस्त आकाश विमानसँ भरि गेल, देवता-लोकनि अपन-अपन स्त्रीक सङ्ग ई दिव्य रास देखि-देखि मुग्ध होइत छलाह।

नाचति श्याम संग व्रजनारी।
जलज-पुञ्ज जनु तड़ित लतावलि अंग-अंग कत रंग बिथारि।
नटन हिलोल लोल मणिकुंडल श्रमजल ढल-ढल वदन सुछन्द॥
रस-भर-गलित ललित-कुच-कंचुक नीवि खसत अरु कवरीक बन्ध।

एहि समयक नवनागर श्यामक रूप-वर्णन कवि गोविन्ददासक शब्दमे सुनू—

आवत रे नव नागर श्याम
भामिनि भाव विभावित अन्तर दिन रजनी नहि जानत आन।
कुवलय नोलरतन दलितांजन मेघपुंज जनि बरन सुछांद।
कुंचित केश खचित शिखि चंद्रक अलक तिलक ललितानन चांद।
मधुराधर पर हसि अति मनहर तहि अति सुमधुर मुरलि विराज।
भौँह विभंगिम कुटिल निहारए कुलवत उमति दूर रहु लाज॥
गजपति भाँति गमन अति मंथर मणि मंजिर बाजत रुनझुनिया।
हेरइत कतेक मनोभव मुरुछए गोविन्द दास कहए धनधनिया॥

आ' गोपीक रूप-वर्णनक एकटा वर्णन पुनि गोविन्द-दासहिक शब्दमे देखू—

आजु बनि श्याम विनोदिनि राहि
तनु तनु अतनू युत शत सेवित लावनि वरनि न जाइ।
शरद सुधाकर मंडल मंडन खंडन वदन विकास।
अधर मिलायित श्याम मनोहर चित्त चोरायलि हास॥
कवरी वकुल फुल आकुल अलिकुल मधु पिबि पिबि उतरोल।
सकल अलंकृत कनकक झंकृत किंकिणि रणरण बोल॥
पद पंकज परि मणिमय नूपुर रुनु झुनु खंजन भास।
मदनमुकुर जनु नखमणि दरपण निछनि गोविन्ददास॥

जेना छोट बच्चा निर्विकार भावसँ अपने छायाक संग खेलाइत अछि तहिना रमारमण कृष्ण गोपी सबहिक संग स्वच्छन्द भए विहार कएल, रमण कएल, सबकेँ अपन विलास

क्रीड़ासँ तृप्त कए देल। बहुत काल धरि गान, नाच, केलि-लीलासँ जखन गोपी सब थाकि गेलि तखन कृष्ण अपनहि हाथेँ सबहक मुहपरक घाम पोछि, थकनी दूर करबाक निमित्त, सबहक संग मीलि यमुनाक जलमे प्रवेश कएल ओ भरि पोष जलक्रीड़ा कएल। तदुत्तर कृष्ण सबकेँ लए यमुनाक किनार परक उपवनमे गेलाह ओ ओतहु सबहक संग नाना प्रकारक केलि कएल। शरदक पूर्णिमाक ई राति अपन अनुरक्ता गोपी सबहिक संग दिव्य लीलासँ बिताए भोर होइत सब गोपीकेँ अपन-अपन घर पठाए देल।

७

ई रास दिव्य छल जकरा अप्राकृतिक कहब, तेँ प्राकृतिक दृष्टिसँ देखला उत्तर एहिमे दोष बुझि पड़ए परन्तु से अज्ञानता थिक। रास शब्द रससँ बनल अछि। ओ रस तँ स्वयं भगवान थिकाह। जाहि दिव्य क्रीड़ामे एकटा रस अनेक रसक रूपमे परिणत हो, अनन्त रसक आस्वाद कराबए, ओकरहि रास कहैत छैक। इएह कथा गोविन्ददासक पदसँ ध्वनित होइत अछि। थिर विजुरीसँ चंचल जलधर रस वरिसए अनिवार।

दोसर, स्मरण रहए जे जे ईश्वर छथि, समर्थ छथि तनिका

मे साधारण दोष नहि लागए ! आगि सब किछु डाहि दैत अछि, कोनो दोष ओकरा नहि लगैत छैक। शङ्कर विष पीबि गेलाह आन केओ पीअत ?

गीतामे भगवान कहने छथिन्ह जे सब धर्मकेँ त्यागि एकटा हमरहि शरणमे आउ। गोपी लोकनि साधनाक एही उच्च आदर्शक पालन कएल। देह-गेह, पति-पुत्र लोक-परलोक, कर्त्तव्य-धर्म सब कथूक त्याग कए ओ लोकनि भगवानक शरणमे अइलीहि। ओ सूर्यक प्रखर किरणमे तेलक दीपसँ लए बिजली वत्ती धरि जेना विलीन भए जाइत अछि तहिना भगवानक भक्तिक सोझाँ आओर सभ धर्म विलीन बुझबाक थिक।

ओ भगवान तँ घट-घटमे व्याप्त छथि। हुनका हेतु केओ परकीया कोना, सब गोपी हुनका हेतु स्वकीया। तथापि परकीया भावसे तीन गोट विषय बड़ महत्वक छैक-प्रियतमक निरंतर चिन्तन, मिलनक उत्कट उत्कण्ठा ओ दोष दृष्टिक सर्वथा अभाव। स्वकीया मे सकाम भाव किछु ने किछु रहितहिँ छैक ! परकीया भावमे आत्म समर्पण सम्पूर्ण छैक। भक्तिक जे लक्षण थिकैक—"अविच्छिन्नानुराग" सएह व्रजाङ्गणाकेँ छलैक। तेँ एहि दिव्य लीलाक वर्णनक प्रयोजन एतबे जे सकल जीव व्रजङ्गनाक अहैतुक प्रेमक, अविच्छिन्न अनु-

रागक, निश्शेष आत्म-समर्पणक स्मरण करए ओ एहि दिव्य-लीलालोकमे भगवानक अनन्त प्रेमक अनुभव करए। मुदा ई सब लीला तँ प्रभु योगमायाक बलसँ कएल। जाहि योग-मायाक बलसँ देवकीक गर्भसँ उत्पन्न भए यशोदाक लाल बनलाह ओ भरलि यमुना वसुदेवकेँ पार कराओल, जाहि योगमायाक बलसँ यशोदाक लाल व्रज-बाल गोपाल भेल रहलाह ओ अद्भुत लीला देखाओल, ताही योगमायाक बल सँ व्रजललनाक संग ई प्रेम-लीला सेहो प्रकटाओल। धन्य थिकाह ई लीलानागर !

जय नटवरशेखर !

जय रासबिहारी !

जय व्रजचन्द्र !



४

कंस-वध

१

आइ पुनः मथुराक शोभा अवर्णनीय छल। मथुराक राजा कंस सेहो खूब प्रसन्न छल। मणिमय राजसिंहासन पर बैसल कंसराज अपन दरबार लगओने छल। आइओ सकल सुरासुर कंसराजसँ ओहिना त्रस्त छल। राजसिंहासनक चारू कात ठाढ़ि अप्सरा सभ सोनाक कटोरामे मदिरा नेने क्षण-क्षण पर कंसकेँ पिआए रहलि छलीहि। आगूमे वाराङ्गना लोकनि मदमत्त भए नाचि रहलि छलीहि। रहि-रहि कए कंसराज नृत्यपरा वारांगना सभक अधरपान कए लैत छलाह। मुदा बारह बाजि गेला पर कंसराज दरबारसँ उठि शयनागार चल गेल। मणिमय सोनाक पलंग पर ओ सूति रहल। मुदा आइ ओकरा निश्चिन्त भए निन्द नहि होइत छलैक। आइ रहि-रहि कए ओ सपना देखि उठैत छल। सपनामे पहिने तँ ओ गाए ओ ब्राह्मणकेँ देखल। मुदा पश्चात् ओ सपना मे गौर वर्णक लक्ष्मीक आकारवाली एकटा स्त्रीकेँ देखलक जे नील रंगक सारी पहिरने अलंकारसँ अलंकृत त्रिशूल लए आबि रहलि छलीहि। संगहि एक गोट

देव पुरुषकें सेहो अबैत देखलक जे श्याम वर्णक छलाह ओ जे पीताम्बर पहिरने हाथमे चक्र नेने मन्द-मन्द बिहुँसैत आबि रहल छलाह। सपनामे एहि रूपक प्रकृति-पुरुषकें देखि कंस चौंकि उठल। जकर डरें आठो सिद्धि, नबो निधि, दशो दिशा इन्द्र, कुबेर, वरुण ओ सकल सुरासुर थर-थर कपैंत रहैत छलाह, से आइ सपनामे देखल देव-आकार सँ भयभीत छलाह। सूर्य ओ चन्द्रमा जनिक पहरूदार छलाह सेहो आइ चौंकि डेराए गेल छल। कंसराज लगले पलंगसँ उतरि बाहर आएल ओ द्वारपालकें अक्रूरकें बजाए अनबाक आज्ञा देलक। अक्रूरकें अएला पर कंस हुनका कहलक—"हे कार्यपटु संवाहक! तों नन्दगाम गोकुल जाह। ओतए हमर काल अछि। कोनहुना ओकरा ठकि-फुसिआए एतए लावह। ओकरा कहिहक जें मथुरामे काल्हि धनुष-यज्ञ थिकैक ओ उत्सव सेहो होएतैक। तें त्रिभुवन-विजयी कंसराज कृष्ण ओ बलरामकें बजओलथिन्ह अछि। एहि रूपें विश्वास दिआए तों ओकरा सभ कें एतए लए आनह। अएला पर हम ओकरा सभकें हम मारि देबैक। ई कार्य जँ तों कए दएह तँ तोरा हम पूर्ण पारितोषिक देबहु।" अक्रूरकें एहि रूपक आज्ञा दए कंसराज पुनः शयनागर जाए पलंग पर पड़ि रहल। मुदा ओकरा निन्द नहि भेलैक। भरि राति ओ ओही प्रकृति-पुरुषक गुन-धूनमे लागल रहल। धन्य कृष्ण जे अत्याचारी कंसकें एहि रूपें त्रस्त कए देल अछि!

२

कंसराजक आज्ञा पाबि अक्रूर जेना हर्ष-विषादक अथाह सागरमे उब डुब करए लगलाह। हर्ष एहि लेल भेलैन्हि जे बिनु परिश्रमें हुनका अपन प्रभु श्रीकृष्णक दर्शन होएतैन्हि। विषाद एहि कारणेँ जे ओहि दूनू देवबालककेँ हमरहि द्वारा बजबाए कंस वध करत।

कंसराजक राजमे रहैत मथुराक ई अक्रूर एक गोट साधु पुरुष छलाह। ई उग्रसेनहिक समयक छलाह। उग्रसेनहिक विश्वासपात्र अनुचर। सम्प्रति ओ अनुखण कृष्णजीक ध्यान मे मग्न रहैत छलाह। जहिना जीह मुहमे दाँतक मध्यमे दाँतसं बचि कए रहैत अछि, तहिना अक्रूर मथुरामे कंसराजक अत्याचारी अनुचरसँ हटल-हटल बचि कए रहैत छलाह। अतः कृष्णजीक दर्शन हुनका होएतैन्हि, से बुझि ओ खूब प्रसन्न छलाह। ओ आङन जाए कंसराजक आज्ञाक कथा अपन परिवारक आन व्यक्तिसं कहलैन्हि। साधारण किछु सामान लए नन्दगामकेँ विदा भेलाह। गोकुल पहुँचि अंकुश-ध्वजा-वज्र-जव-कमलसँ युक्त कृष्णक चरणक छापक दर्शन होएत तेँ ओ अपनाकेँ धन्य बुझैत छलाह। एहि रूपेँ ओ गद्-गद होइत नन्दरायक घर पहुँचलाह। ओतए देखल जे कृष्ण एक दिशिसँ गाए दुहितहुँ छलाह ओ दूध पिबितहुँ जाइत छलाह। ई देखि अक्रूर मुग्ध भए गेलाह। मथुरासँ एक

गोट दूत आएल अछि से बुझि नन्दराय आदर सत्कार पूर्वक अक्रूरकें बैसाए हुनकासँ मथुरा ओ कंसराजक कुशल-क्षेम पुछए लगलथिन्ह। अक्रूर अपन व्यावहारिकताक परिचय दैत नन्दकें मथुरा ओ कंसराजक कुशल-क्षेम कहैत कहलैन्हि—"हे नन्दराय! मथुरामे धनुष-यज्ञ भए रहल छैक। तें कंसराज हमरा कृष्ण ओ बलरामकेँ बजाए अनबाक हेतु कहलैन्हि अछि।" मुदा कात लए अक्रूर कृष्ण ओ बलराम कँ ई कहि देल जे कंसराज हुनका दूनू गोटाकेँ छलसँ बजाए अनबाक हेतु कहलथिन्ह अछि। कृष्णजी तँ अपनहि सर्वज्ञ थिकाह। ओ बुझि गेलाह जे कंस अपनहिसँ अपन काल केँ बजओलक अछि। विहुँसैत ओ अक्रूरसँ पुछलैन्हि—"हे अक्रूरजी! हमर माम कंस कोना छथि?" "निकेँ छथि"—अक्रूर कहलैन्हि। ओमहर जखन यशोदाकेँ पता लगलैन्हि जे कृष्ण मथुरा जाए रहल छथि तखन ओ व्याकुल भए उठलीहि। व्याकुल भए ओ कृष्णसँ पुछलैन्हि—"हे कन्हैया! की कंस अहाँकेँ बजबए पठओलक अछि?" कृष्ण उत्तर देलथिन्ह "हँ माए! हम मामाक ओतए जाएब।" कृष्णजीक ई विचार बुझि सकल गोपबाल दौड़ल आएल कृष्ण लग ओ कहए लागल—"हे मित्र! अहाँ मथुरा जाइत छी? हमहूँ सभ जाएब।" "वेस! तोहूँ सभ चलिहह"—कृष्णसँ ई कहलाक बादे गोपबाल निश्चिन्त भेल।

३

अक्रूर कृष्ण ओ बलरामकेँ मथुरा लए जएबाक आयोजन करए लगलाह ई समाचार समस्त व्रजमे बिजली जकाँ पसरि गेल। राधिका, विशाखा, ललिता आदि सकल गोप-बाला दौड़लि आइलि। सुदामा आदि सकल गोपबाल कृष्ण-बलरामक संग जएबाक लेल आबि गेल। दही-दूध आदि गो-रस कंसक हेतु सनेस लए जएबाक हेतु सेहो तैयार कए लेल। नन्दराय सेहो कतेको बहुमूल्य वस्तु ओरिआ देल। मुदा ओमहर यशोदा, रोहिणी ओ आन-आन गोपवधूक स्थिति विचित्र छल। सभ केओ कृष्ण-बलरामकेँ भरि पाँजकेँ पकड़ि कहए लागलि—"हम सभ अहाँकेँ नहि जाए देब। अहाँक बिना हमरा लोकनि कोना रहब। एहिना प्रेमक कथा कहि-कहि राधिका, चन्द्रभामा, विशाखा, ललिता, चन्द्रावली आदि गोप-बाला सब विलाप करए लागलि। समस्त व्रज उदास भए गेल। पशु-पच्ची सभ मौन छल। मुदा कृष्ण मथुरा जएबाक हेतु पूर्ण उत्सुक छलाह। कंसक वधमे आओरो विलम्ब हुनका इष्ट नहि छल। गाए-बच्छा आइ उदास भावेँ कृष्ण दिशि ताकि रहल छल। यमुनाक प्रवाह आइ शान्त भावेँ बहि रहल छल। कदम्ब-काननक एक-एकटा पात आइ मौलाए गेल छल। एहन बुझि पड़ैत छल जेना कृष्णक वियोगक आशंकासँ कदम्ब-कानन कानि रहल हो।

बरिसय हा दिन रइनि ई नयना श्याम कतय चल गेल ॥
हुनकहि संग हम खेलि गमाओल वृन्दावन भल भेल ।
ई सब कोन विधि विसरब ऊधो माधव मति फेरि गेल ॥
एक समय यमुना तट चललहुँ वाटहि कर धय लेल ।
नहि नहि करितहुँ रोकल झट दय सदन मुग्ध कय देल ॥
हमरहि संग हरि रास रचाओल यमुना तट वन गेल ।
वंशि बजाय बजाय युवति जन सुधि बुधि सब हरिलेल ।
'राजलक्ष्मी' छथि विनति परायण चरण पकड़ि जगदीश ।
भव सँ पार करिअ मनमोहन जय मधुपुर अवनीश ॥

४

व्रजवासीक स्नेह ओ प्रेम देखि कृष्ण किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए गेलाह। मथुरा जाएब सेहो आवश्यक छलैन्हि ओ व्रजवासीक मनो नहि तोड़ए चाहैत छलाह। अन्तमे कृष्णजी योगमायासँ सकल व्रजवासीकेँ मोह मे रखबाए देल। यशोदा-राधिका आदि सभ केओ कहए लगलैन्हि—"हे कन्हैआ! अहाँ जाएब तँ जाउ मुदा घुरि कए धरि जल्दी चल आएब।" हृदयमे किछु आने बात रखने बाह्यतः कृष्ण कहलैन्हि—"हे माए यशोदे! हे सुन्दरी राधिका!! हम जल्दीसँ जल्दी ओतएसँ घुरि आबि अहाँ सभक भेँट करब।" ई कहि रत्नजड़ित रथ पर अक्रूरक संग भए कृष्ण-बलराम मथुराकेँ विदा भेलाह। पीत वर्णक सोनाक रथमे जोतल उज्जर वर्णक घोरा अद्भुत

लगैत छल। आइ आठ वर्ष पर कृष्णजी अपन जन्मस्थान जाए रहल छलाह। मुदा व्रज आइ उदास अछि। जतए कृष्ण अपन नेनपन बितओलन्हि, जतए गाए चरओलैन्हि, जतए यशोदाक कोरामे बैसि दूध पिउलैन्हि, जतए गोप-बालाक सङ्ग नाच कएलैन्हि, रास रचलैन्हि, ताहि गोकुल कें छोड़ैत आइ कृष्ण कें सेहो कम मोह नहि घेरि लेलकैन्हि। मुदा सर्वज्ञ कृष्ण यशोदा, रोहिणी ओ नन्दराय कें प्रणाम कए डब-डबाएल आँखिएँ रथ पर चढ़ि हँकबाक आज्ञा देने छलाह। जाइत रथकें देखि एहन बुझि पड़ैत छल जेना सकल व्रज-वासीक छाती पर दए रथ चल जाइत हो। सभक मनोरथ जेना रथक पहिआसँ पिचाए रहल छल। यशोदा मूर्च्छित भए पृथ्वी पर खसि पड़लीहि। गोकुलक सकल पशु आइ खढ़ खाएब छोड़ि देने छल। सकल पक्षी आइ अपन-अपन खोँता मे चुप-चाप मौन छल। मुदा सब व्रजाङ्गना आगू बढ़ि रथक आगू बाट छेकि पड़ि रहलि ओ कहए लागलि—"हे अक्रूर! अहाँक नाम तँ क्रूर होएबाक चाहैत छल। आइ सम्पूर्ण व्रजक प्राणकें अहाँ फुसिअओने चल जाइत छी। अहाँ हमरा सभक देह परसँ रथ चलाए देब तँ चलाए दिअ। कृष्णक वियोगसँ नीक हमरा लोकनि मरबे बुझैत छी।" व्रजबालाक एहि रूपक निश्चय देखि कृष्णजी पुनः आबि हुनका लोकनिकें भेँट देबाक वचन देलथिन्ह। भग-वान कतहु मिथ्या बाजथि! अपन वचन रखबहिक हेतु कृष्णजी

सूर्य-ग्रहणक समय कुरुक्षेत्र मे यशोदा, रोहिणी ओ नन्दराय तथा सकल व्रजबालाकेँ अपन दर्शन दए तारि देल। जय बाल मुकुन्द! जय लीलाकर! जय श्रीकृष्णजी !!!

५

एमहर कंस अपन प्रिय अनुचर केशीकेँ व्रज पठाओल जे बलराम ओ कृष्णकेँ मारए ओ चाणूर मुष्टिक प्रभृति केँ बजा-ओल ओ कहल जे "सुनैत जाह। वसुदेवक दू गोट पुत्र बलराम ओ कृष्ण नन्दक व्रज मे रहैत छथि, हम हुनका बजबए पठौ-लिअन्हि अछि। ओ लोकनि जखन आबथि तखन कुस्ती लड़-बाक छलसँ अखाड़ा पर लए जाए तोरा लोकनि हुनका दूहू गोटाकेँ मारि दिहह। ताबत अखाड़ा केँ सजाबह। अखाड़ाक चारू कात गोल-गोल मञ्च बनाबह जाहि पर बैसि लोक तमासा देखए।" तखन कंस अपन महाउथक सरदारकेँ बजाओल, ओकरा कहल जे "तोँ चतुर छह, देखह जखन कुश्ती आरम्भ होअए लगैक तखन तोँ फाटक पर हमर दन्तार हाथी कुवलयापीड़केँ रखने रहिहह। हमर शत्रु वसुदेवक दूनू बेटा जखन अखाड़ामे जाए लागए तँ कुवलयापीड़ सँ तोँ ओकरा पिचबाए मारि दिहक।" ई सब प्रबन्ध कए कंस अक्रूरकेँ व्रज पठओने छल, बलराम ओ कृष्णकेँ फुसिआएकेँ आनए।

केशी घोड़ा बनि व्रज गेल छल; वायुवेगसँ दौड़ैत, अपन टापसँ पृथ्वीकेँ कँपबैत; मुदा कृष्ण तँ ओकरा चीन्हि गेलथिन्ह।

ओ वज्र सन अपन दूनू पाएरसँ लथार मारलक जे कृष्णकेँ ठामहि मारि दी मुदा कृष्ण ओकर लथारसँ अपनाकेँ बचाए लेल तथा ओकर दूनू पछिला पाएर पकड़ि घुमाएकेँ ओकरा तेना केँ फेकलैन्हि जे ओ चारि सए हाथ दूर जाए खसल। फेर होश कए ओ उठल ओ मुह बाबि कृष्णकेँ गीरए दौड़ल। कृष्ण अपन बामा हाथ ओकरा मुह मे दए हाथ केँ बज्रसन कठोर बनाए लेल ओ क्रमशः हाथकेँ मोट बनबए लगलाह जाहिसँ ओकर पेट फाटि गेलैक। तत्पश्चात् व्योमासुर गोप-बाल बनि कृष्णक मण्डलीमे आबि खेलाए लागल। कृष्ण अपन मित्र सबहक सङ्ग चोरानुक्की खेलाइत रहथि। व्योमासुर कृष्णक सङ्गी सबकेँ पहाड़क गुफामे जाए बन्द कए दैन्हि ओ गुफाक मुह पर पाथरक बड़का टा खंड राखि दैन्हि। कृष्ण ओकरा चीन्हि गेलाह, चोरकेँ पकड़लैन्हि, ठामहि ओकरा पटकि ओकर गरदनि मरोड़ि ओकरा मारि देलैन्हि आ' पर्वतक गुफासँ अपना सङ्गी-साथीकेँ छोड़ाए अनलैन्हि।

६

ओमहर बलराम ओ कृष्णकेँ रथ पर लेने अक्रूर यमुनाक तट पर पहुँचलाह। दूनू भाइकेँ रथ पर छोड़ि हुनक आज्ञा लए यमुनामे स्नान करए गेलाह। जएह पानि मे डुबैत छथि, देखैत छथि जे जलक मध्यमे बलराम ओ कृष्ण दूनू भाइ बैसल छथि। अक्रूरकेँ भेलैन्हि जे भ्रम होइत अछि; ओ मूड़ी अल-

गाए तट दिसि तकलैन्हि; देखैत छथि जे बलराम ओ कृष्ण तँ ओहिना रथ पर बैसल छथि। भ्रमे छल ई जानि अक्रूर पुनः डूब देल। एहि बेर ओ देखैत छथि जे जलमे शेषनाग अपन सहस्र फणा लए पड़ल छथि। हुनक कोरामे श्यामसेघक सदृश घनश्याम विराजमान छथि; ओ पीताम्बर धारण कएने छथि; शान्त छथि, चतुर्भुज छथि; सब शक्ति, सब सिद्धि, सब निधि, पार्षद, परमर्षि ओ भक्त लोकनिसँ घेरल छथि। अक्रूर कँ त' नारायणक दर्शनसँ परमानन्द भेल ओ कर जोड़ि भगवानक स्तुति करए लगलाह। कहल जे 'हे पद्मनाभ! संसारक एहि घोर जंगलमे बौआइत-बौआइत अपनेक चरण-कमलक छत्र-च्छायामे आबि गेल छी, ई अपनेक कृपाप्रसाद थिक। जीवकँ जखन मुक्ति होएबाक समय अबैत छैक तँ सत्पुरुषक चित्तवृत्ति अपनेमे लागि जाइत छैक।"

अपन दिव्य रूप देखाए भगवान अन्तर्धान भए गेलाह, ओहिना जेना केओ नट कोनो भूमिका देखाए पर्दाक अढ़मे चल जाए। अक्रूरजी ऊपर भेलाह; रथ पर पुनः सवार भेलाह। परन्तु हुनक मुह विस्मित छल। कृष्ण पुछलथिन्ह— "बड़ विस्मित देखैत छी काकाजी, जलमे किछु देखलिऐक अछि की?" अक्रूर कहल—"हे प्रभो! अपने विश्वरूप छी, जखन अपनहि कँ देखि रहल छी, तखन संसारमे कोन अद्भुत वस्तु छैक जे बिनु देखल रहल।" ताबत ओ लोकनि मथुरा पहुँचलाह। नन्द रायलोकनि पहिनहिँ पहुँचि गेल छलाह ओ मथुराक

कातमे उपवनमे डेरा कएने छलाह। कृष्ण अक्रूरकेँ कहल "हमरालोकनि आब एहिठाम उतरैत छी, डेरा पर जाइत छी, अपने मथुरा गेल जाओ, हमरालोकनि सङ्ग मीलि नगर देखए जाएब।" अक्रूर बड़ बिनती कएलथिन्ह, बड़ आग्रह कएलथिन्ह जे "अपने हमरा ओहिठाम चलल जाओ, हम अपनेक भक्त छी" परन्तु कृष्ण हुनका बुझओलथिन्ह जे जाहि कार्यें आएल छी से जखन सम्पन्न होएत, कंसक उद्धार कएल भए जाएत, तखन हम सब स्वजनक ओतए जाएब। उदास भए अक्रूर बिदा भेलाह ओ कंसकेँ ई सूचना दए जे सकल गोपगणक मण्डलीक सङ्ग बलराम ओ कृष्ण मथुरा आबि गेल छथि, नगरक कातमे गाछीमे डेरा कएने छथि, ओ तखन अपना ओहिठाम चल गेलाह।

७

दोसरा दिन बेरू पहर बलराम ओ कृष्ण अपन मण्डलीक सङ्ग मथुरानगरीमे प्रवेश कएल। नगरक वैभव, ऐश्वर्य ओ सौन्दर्य देखि सब मुग्ध छल। समस्त नगर सजाओल छल। एमहर मथुराक सब लोक कृष्णक दर्शनक हेतु लालायित छल। विशेषतः स्त्रीगण तँ कृष्णक लीलाक गप्प सब सूनि-सूनि पहिनहिसँ मुग्ध छलि। कृष्ण राजपथ होइत आबि रहल छथि ई समाचार समस्त नगरमे पसरि गेल। जे जँहि छल से तँहि दौड़लि। राजपथक दूनू कात कोठाक छत घरि लोकसँ

विशेषतः मथुराक ललनागण सँ भरल छल। ठाम-ठाम पर कृष्णक आरती होइत गेल। लोक सब हुनक स्तुति करैत गेल। ललनागण बजैत छलीहि-"धन्य गोकुलक गोपी गण जे नित्य एहि मनोहर किशोर कृष्णकें देखैत रहैत छथि।"

तावत कंसक रजकक घर लग पहुँचलाह। कृष्ण कहलथिन्ह जे नीक वस्त्र सब दएह जे देहमे अँटए मुदा रजक आक्षेप करैत हुनकालोकनिकें गमार गोआर कहि बड़ बिगड़ल। कृष्ण एक थापर ओकरा मारल। ओ तँ ठामहि मरि गेल ओ कृष्ण ओहि ठाम जे कोनो वस्त्र छलैक सब अपने दूहू भाइ पहीरि सकल गोप-मण्डलीकें पहिराए देल। आगाँ बढ़ला उत्तर मथुराक एक गोट तन्तुवाय ओ एक गोट मालिक घर पर सेहो ई लोकनि गेलाह ओ ई दूनू गोटे, ओ दरजी तथा ओ मालि, हिनका लोकनिक बड़ स्वागत कएलक तथा कृष्णक प्रेम पाबि तरि गेल।

किछु दूर आगाँ बढ़ला पर कृष्ण देखैत छथि जे एक गोट स्त्री हाथमे सुन्दर चाननक पात्र लेने जाए रहलि अछि। छलि तँ ओ स्त्री परम-सुन्दरी युवती किन्तु ओकरा पीठ पर कुब्बड़ रहैक। ओहि कुब्जा पर कृपा कए प्रेम-रसक दाता कृष्ण हँसिकें ओकरा पुछलथिन्ह—"हे सुन्दरी! अहाँ के छी, ककरा हेतु चन्दन लेने जाइत छिऐक? थोड़ेक ई सुन्दर चानन हमरहु नहि देब?" ओ स्त्री उत्तर देलकैन्हि जे "हे मनमोहन! हम राजा कंसक प्रिय सैरन्ध्री छी। हमर नाम

थिक त्रिवक्रा, कुब्जा। हमर बनाओल चन्दन ओ उबटन कंसकें बड़ प्रिय छैन्हि, परन्तु अहाँ दूनू किशोरसँ उत्तम पात्र दोसर के होएत जकरा हम अपन बनाओल ई अङ्गराग देबैक।" कुब्जाक मन तँ कृष्णक रूपसँ मोहित भइए गेल छलैक। ओ कँपैत हाथसँ चाननक बासन कृष्णक सोझाँ समर्पण कए देलक। कृष्ण अपन श्याम शरीर पर पीअर रङ्गक ओ बलराम अपन गौर शरीर पर लाल रङ्गक अङ्गराग लगाए बड़ प्रसन्न भेलाह। अपन दर्शनक प्रत्यक्ष फल देबाक निमित्त अपन दूनू पाएरसँ कुब्जाक पाएरक दूनू औंठा दाबि हाथक दू आङ्गुरसँ ओकर दाढ़ी पकड़ि ओकरा ऊपर उठाए देलथिन्ह। तीन ठाम जे ओ टेढ़ि छलि से सोझ भए गेलि तथा मुक्ति ओ भुक्ति दूहूक दाताक करस्पर्श सँ ओ अत्यन्त सुन्दरी, नितम्बिनी रमणीक रूपमे परिणत भए गेलि। रूप, गुण ओ उदारतासँ सम्पन्न कुब्जा प्रफुल्ल-वदन ओ लजाएल आँखिसँ कृष्णक दोपटा पकड़ि कहए लागलि—"नाथ! चलल जाओ, हमरा गृहमे जाए पवित्र करल जाओ। हम अपनेकें नहि छोड़ि सकैत छी। अपने हमर चित्त चोराए लेल अछि। एहि दासी पर कृपा करू।" जेठ भाए बलरामक समक्ष कुब्जाक ई आत्मसमर्पणक कथा सूनि कृष्ण हँसए लगलाह ओ अपन सङ्गी-साथी दिसि ताकि कुब्जाकें कहए लगलथिन्ह—"सुन्दरी! संसारी लोकक मानसिक क्लेश कें दूर करबाक निमित्त अहाँक सनि-सनि सुन्दरीक गृह साधन थिकैक। मथुरामे जे काज अछि से

सम्पन्न कए हम अवश्य अहाँक ओहिठाम आएब। हमरा सन-सन परदेशीक हेतु तँ अहीँक घर आश्रय होएत।" एहि रूपेँ मथुराक ललनागणक हृदयमे प्रेम जगबैत, मिलनक आकांक्षा उत्पन्न करैत, एवं मथुराक सेठ-साहूकार, धनी-मानी सज्जन पुरुषसँ रङ्ग-बिरङ्गक बहुमूल्य उपहार प्रेम सँ ग्रहण करैत, कृष्ण अपन मण्डलीक सङ्ग आगाँ बढ़ैत गेलाह।

पुरवासीकेँ पुछैत कृष्ण अपन मण्डलीक सङ्ग रङ्गशाला पहुँचलाह। इन्द्रधनुष सन रत्नजड़ित विशाल एकटा धनुष ओतए सजाओल राखल छलैक। बहुत रास सैनिक ओहि धनुषक रक्षा करैत छलैक। कृष्ण सोझे रङ्गशालामे जाए बिनु ककरहु किछु कहनहि धनुषकेँ उठाए लेल तथा कसिकेँ ओहि पर डोरी चढ़बए लगलाह, ताबत ओ धनुष दू खण्ड भए टूटि गेल। सैनिक सब दौड़ल। कृष्ण, बलराम दूनू भाइ सबकेँ ठामहि मारि देल। धनुष टुटबाक शब्द सूनि कंसक सेना पहुँचल। कृष्ण ओ बलराम ओही धनुषक एक-एकटा खण्ड लए समस्त सेनाक संहार कए देल।

ताबत सूर्यास्त होइत छलैक। निर्विकार भावेँ ई लोकनि अपना डेरा पर चल गेलाह। मथुराक सब लोक मुग्ध छल परन्तु ई लोकनि अपनहिँ डेरा पर राति भोजन कए विश्राम कएल।

८

एमहर कंसकें ई सब सूनि राति निन्द नहि भेलैक। प्रातःकाल ओ अखाड़ा पर कुश्तीक आयोजन आरम्भ कए देल। रङ्गभूमि खूब सजाओल छल। तुरही, नगाड़ा बाजि रहल छल। सब नागरिक अपन-अपन स्थान पर बैसि गेल। राजालोकनि पाँती जोरसँ उच्च आसन पर बैसि गेलाह। कंस अपन दरबारी सबहिक सङ्ग आबि सबसँ उच्च सिंहासन पर बैसि गेलाह। परन्तु बारंबार हुनका अपशकुन भए रहल छल, चित्त शंकित छल, डेराएल छलाह। ओतहि ओ नन्दरायकें बजाओल। ओ लोकनि सब अपन उपहार कंस रायकें समर्पित कएल ओ एक कात भए बैसि गेलाह।

ओमहर कृष्ण, बलराम गोपबालक सङ्ग नगाड़ाक शब्द सुनितहिं बिदा भेलाह। फाटक पर पहुँचैत छथि तँ देखैत छथि जे पहाड़ सन कुवलयापीड़ बाटहि पर ठाढ़ अछि। कृष्ण महाउथकें कहल जे हाथीकें हटाबह, मुदा महाउथ आँकुससँ मारि हाथीकें कृष्णक दिसि बढ़ाए देल। कुवलयापीड़ कृष्णकें अपन सूँढ़मे लपेटि लेल मुदा कृष्ण ससरिकें एक मुक्का हाथीक मस्तक पर मारल ओ ओकर अगिला दूनू पाएरक बीचमे आबि ठाढ़ भए गेलाह। हाथी हुनका सूँढ़सँ पकड़ए चाहए; ओ पकड़ए नहि देथिन्ह। चट ओ हाथीक पाछाँ जाए ओकर नाङरि पकड़ि ओकरा घिसिआबए लगलाह। हाथी दहिना दिसि घूमए तँ ओ बामा दिसि भए जाथि आ' बामा दिसि घूमए

तँ दहिना भए जाथि। एवं क्रमेँ हाथीकेँ घुमबैत, घिसिअबैत ओ क्रीड़ा देखबए लगलाह। तखन ओ बड़े वेगसँ हाथीक आगाँ जाए खसबाक नाटक कएल। हुनका खसैत देखि हाथी झपटल ओ अपन दाँतसँ हुनका पर आक्रमण कएलक। कृष्ण तँ ससरिकेँ आगाँ चल गेलाह, हाथीक दूनू दाँत पृथ्वीमे गड़ि गेलैक। बस, कृष्ण एक हाथसँ हाथीक सूँढ़ पकड़ि आ' दोसर हाथसँ ओकर दाँत उपाड़ि एकटा दाँत अपने लेल दोसर दाँत बलरामकेँ देल। ओही दाँतसँ हाथी ओ महाउथ दूनूकेँ मारि खसाओल।

कृष्ण आ बलराम हाथीक दाँत कान्ह पर रखने शोणितसँ रङ्गल, मुहसँ टपटप घाम चुबैत रंगभूमिमे पहुँचलाह। एहि रूपमे हुनका देखैत पहलमानकेँ ओ वज्रसन कठोर रुद्र रूप, साधारण लोककेँ नररत्न, स्त्रीगणकेँ साक्षात् कामदेव, गोप-जनकेँ स्वजन, दुष्ट राजाकेँ दण्ड देनिहार शासक माता-पिताक समान बूढ़ लोककेँ शिशु, कंसकेँ साक्षात् काल, अज्ञानीकेँ विराट रूप, योगीकेँ परमतत्त्व ओ भक्त लोकनिकेँ अपन इष्टदेव बूझि पड़ैत छलाह। कंस छल तँ बड़ वीर मुदा हिनका दूहू गोटाकेँ देखि ओ घबड़ाए गेल। मुदा ओहिठाम जतेक लोक छल सब-हिक आँखि जखन कृष्ण पर पड़लैक तँ ओतहि गड़ल रहि गेलैक। सब गप्प करए "इएह दूनू पृथ्वीक भार हरण करबाक हेतु अवतार नेने छथि। देखैत छिअन्हि ओ जे श्याम छथि से देवकीक गर्भसँ उत्पन्न भेल छथि। हिनकहि वसुदेवजी गोकुलमे

नन्दराजक ओहिठाम नुकाएकेँ राखि आएल छलथिन्ह। पूतना, केशी सबहिक बध इएह कएलैन्हि, इएह यमलार्जुनकेँ ताड़लैन्हि, गोकुलकेँ आगिसँ बचओलैन्हि, इन्द्रक मानमर्दन कएलैन्हि, गोवर्धनकेँ उठाए समस्त व्रजक रक्षा कएलैन्हि। हिनकहि प्रेममे सब गोपबाला, सब गोपललना, मोहित रहैत अछि। इएह व्रजमे रास रचलैन्हि। हिनक वंशीक ध्वनि सूनि सकल चराचर मोहित भए जाइत अछि। आ' दोसर जे देखैत छिऐन्हि गोर किशोर से थिकाह हिनक जेठ भाए, रोहिणीक गभसँ उत्पन्न, बलरामजी, ओहने वीर मुदा कनेक तमसाह, ओहन मधुर नहि।"

एमहर ई गप्प-सप्प होइत छल, ओमहर चाणूर आ' मुष्टिक आगाँ बढ़ि कृष्ण ओ बलरामकेँ कहए लागल "आएल जाओ। राजाकेँ कुश्ती बड़ प्रिय छैन्हि, हमरालोकनि कुश्ती लड़ी, राजाकेँ प्रसन्न करी। अहाँलोकनिक बड़ नाम सुनल अछि, बड़ मनोरथ अछि जे अपनेक सङ्ग दू हाथ लड़ी।" कृष्ण कहल "कतए अहाँलोकनि वीर ओ नामी पहलमान आ' कतए हमरालोकनि गोपबाल, हमरा अहाँकेँ कतहु जोड़ा लागए।" मुदा चाणूर कहए लागल जे "से जनु कहल जाए, एखनहि तँ कुवलयापीड़ सन हाथीकेँ अपने परास्त कएल अछि। आएल जाओ, अखाड़ा पर उतरल जाओ। अपने हमरा सङ्ग लड़ल जाओ, बलरामजी मुष्टिकसँ लड़ताह।"

कृष्ण इएह तँ चाहैत छलाह, सब वस्त्र-आभूषण उतारि, फाँड़ बाँधि, कृष्ण चाणूरसँ ओ मुष्टिक बलरामसँ लड़ए अखाड़ा पर उतरि गेलाह।

९

आब आरम्भ भेल कुश्ती। हाथसँ हाथ मिलाए, पाएरसँ पाएर अड़ाए, एक दोसराकेँ अपना दिस खीँचए लगलाह। भिन्न भिन्न दाव लगबैत अपन जोड़ीदारकेँ पञ्जासँ पञ्जा, ठेहुनसँ ठेहुन, माथसँ माथ, छातीसँ छाती भिड़ाए घुमबैत, दूर ठेलैत, जोरसँ पकड़ैत, पटकैत, फेर बहराएकेँ भगैत, लड़ैत छलाह। तखनहि केओ नीचाँ होथि ओ तखनहि उपर, एहि तरहँ बड़ी काल धरि कुश्ती होइत रहल।

एमहर मथुराक जे महिलालोकनि आइलि छलीहि सब अपन-अपन छोट-छोट गोल बनाए फुसुर-फुसुर गप्प करए लगलीहि जे "हे सखी! एहिठाम अन्याय भए रहल अछि! कतए पहाड़ सन-सन ई पहलमान आ' कतए कमल सन सन कोमल सुकुमार ई दूनू किशोर, एहन कतहु जोड़ी होइक। ई अधर्म की देखब? मुदा हे सखी! केहन मनोहर रूप हिनका दूहू भाइक छैन्हि! धन्य व्रजभूमि, जतए ई लोकनि लीला करैत छथि! धन्य गोपीलोकनिक तपस्या जे नित्य हिनक रूप-माधु-रीक पान करैत रहैत अछि! धन्य व्रजक युवतीलोकनि जे हिनक वंशीक तान सुनैत रहैत छथि!"

ताबत कृष्णक वज्र सन कठोर अङ्गक पीड़नसँ चाणूरक शरीरक समस्त नाड़ी जेना शिथिल होअए लगलैक। ओयसँ ओ झपटल, दूनू हाथसँ मुक्का बाँधि कृष्णक छाती पर मारलक। कृष्ण चट ओकर दूहू हाथ पकड़ि उठाए ऊपरमे बड़ वेगसँ घुमाए पृथ्वी पर पटकि देल। ओकर प्राण उपरहिमे बहराए गेल छलैक। ओकर वेष-भूषा सब अस्त-व्यस्त भए गेलैक, प्राणहीन ओ पृथ्वी पर खसि पड़ल। एहिना बलराम मुष्टिककेँ धराशायी कएल। तदुत्तर दोसर पहलमानकेँ बलराम एकहि थापरमे पृथ्वी पर पाड़ि देल। कृष्ण पाएरक ठोकरसँ एक गोट पहलमानकेँ मारि देल, दोसरकेँ दूनू पाएर पकड़ि दू खण्डकेँ चीरि देल। एना कंसक पाँचो पहलवानकेँ खेलाइत-खेलाइत संहारकए कृष्ण ओ बलराम अपन बाल-सखा सबहिक सङ्ग कुश्ती लड़ए लगलाह ओ नाचि-नाचि भेरीक ध्वनिक सङ्ग सङ्ग अपन नूपुरक झङ्कारकेँ मिलबैत खेलाए लगलाह। आओर जे कंसक पहलमान अखाड़ामे छल सब लंक लएकेँ पड़ाए गेल।

१०

कृष्णक विजयसँ समस्त सभामे हर्षक लहरि पसरि गेल मुदा कंसक प्राण ऊड़ि गेलैक। कण्ठ सुखाए लगलैक, आँखिक सोझाँ अन्हार होअए लगलैक। सब बाजा वन्द कराए देलक, कण्ठसँ बोल नहि वहराइक। अवरुद्ध कण्ठसँ ओ गरजए लागल जे "निकाल वसुदेवक एहि दूनू कुपुत्रकेँ, गोप सबकेँ बेला; एहिठामसँ, दुष्ट वसुदेवक गरदनि काटि ले, उग्रसेनकेँ मार गए, नन्दकेँ कारागारमे बन्द कर, ई सब हमर शत्रु

थिक।" ई प्रलाप करितहिँ छल तावत कृष्ण फानिकेँ ओकर सिंहासन पर चढ़ि गेलाह। कंस देखलक जेना ओकर मृत्यु ओकर समीप आबि गेल रहैक। ओकर मुँहक चेष्टा विकृत भए गेलैक। आँखि, पलकहीन, पथराए गेलैक। देह काँपए लगलैक। कपार परसँ टप-टप घाम चूबए लगलैक। तथापि कँपैत हाथेँ ओ मियानमे सँ तरुआरि बहार करए लागल ओ उठबाक चेष्टा कएलक। जेना गरुड़ साँप के पकड़ैत छैक तहिना बलपूर्वक कृष्ण ओकरा पकड़लैन्हि। ओकरा माथ परक मुकुट एही लट्टा-पट्टीमे खसि पड़लैक, चट कृष्ण ओकर केश पकड़ि उठाए उच्च सिंहासन परसँ नीचा पृथ्वी पर पटकि देल-थिन्ह ओ स्वयं ओहि सङ्ग कूदिकेँ नीचा खसलाह। तावत तँ कंसक प्राण चल गेल छलैक तथापि जेना सिंह हाथीकेँ घिसि-अबैत छैक तहिना कृष्ण कंसक प्राणहीन मुर्दाकेँ रङ्गभूमिमे घिसिआबए लगलाह। चारूकातसँ सभक मुहसँ हाय-हाय शब्द बहराए लगलैक। आकाशसँ धन्य-धन्यक शब्द होअए लागल। स्वर्गक दुन्दुभि बाजए लागल। पुष्प-वृष्टि होअए लागल। समस्त संसार जेना स्वास्थ्य लाभ कएने हो। आकाश निर्मल भए गेल। पृथिवीक भार टरि गेल। देवता लोकनि स्वस्थ भेलाह।

कंस नित्य निरंतर केवल कृष्णक भावनासँ व्याकुल रहैत छल। सुतल वा जागल, खाइत वा सुतैत, चलैत वा बैसल, अनुक्षण कंसक हृदयमे कृष्ण विराजमान रहथिन्ह। ओ भयक रूपमे रहथिन्ह अवश्य परन्तु सब समय ओकरा आँखिक सोझाँ चक्र नेने कृष्णे देखि पड़थिन्ह। एहि नित्य-

चिन्तनक फल ई भेलैक जे द्वेष-भावहिसँ किएक ने हो, जँ ओ कृष्णक 'तन्मय' छल तँ ओकरा ओ रूप प्राप्त भेलैक जकरा 'सारूप्य'-मुक्ति कहैत छैक, जे बड़-बड़ तपस्वी योगिअहुकेँ दुर्लभ होइत छैन्हि।

कंसकेँ मरैत देरी ओकर आठ टा भाइ, ताहि सङ्ग ओकर अनुचर असुर, सब दौड़ल, मुदा बलराम सबकेँ ठामहि मारैत गेलाह। जे बचल से सब मथुरा छोड़ि पड़ाए गेल।

तखन कंस ओ ओकर भाइ सबहिक स्त्री माथ पीटैत, विलाप करैत पहुँचलि ओ वीर-शय्या पर पड़ल अपन पतिक शरीरकेँ भरि पाँज कँ पकड़ि कानए लागलि। कृष्ण अएलाह, सबकेँ सान्त्वना देल ओ लोक-रीतिक अनुसार मुइनिहारक जे क्रिया-कर्म होइत छैक सब सम्पन्न कएल। मथुरामे सर्वत्र शान्ति ओ हर्ष व्याप्त छल।

११

कंसक उद्धार कए बलरामक सङ्ग कृष्णजी कारागार पहुँचलाह। माए-बाप, देवकी ओ वसुदेवकेँ बन्धनसँ मुक्त कए दूनूक पाएर पर माथ राखि, प्रणाम कएल। कृष्ण छलथिन्ह तँ हुनक बेटा मुदा दूनूकेँ विश्वास भए गेल छलैन्हि जे ई तँ जगदीश्वर थिकाह ओ तेँ ठकुआएल ठाढ़ भेल बेटाकेँ जेना छातीसँ लगाए लेबाक चाही तेना नहि लगाए सकलाह। कृष्ण बुझलैन्हि जे हमरा माए-बापकेँ हमर ऐश्वर्यक भान भए गेल छैन्हि; से उचित नहि तेँ अपन योगमायाकेँ पसारि ओ बड़े स्नेहसँ विनयपूर्वक कहल; 'हे पिता, हे माए! हम अहाँक पुत्र छी, हमरा

हेतु अहाँ सब सतत उत्कण्ठित रहैत छलहुँ मुदा हमरासँ अहाँ-लोकनिकेँ कोनो सुख नहि भेटल। पिता-माता एहि शरीरक जन्म दैत छथि। पालन-पोषण कए एकरा समर्थ बनबैत छथि। तखन जाएकेँ ई शरीर धर्म, अर्थ, काम ओ मोक्षक साधन बनैत अछि। सइओ वर्ष धरि यदि पुत्र सेवा करैत रहत तथापि माता-पिताक ऋणसँ ओ मुक्त भए सकैत अछि? हमरालोकनिक एतेक दिन व्यर्थ चल गेल। कंसक डरसँ सब केओ उद्विग्न छलहुँ से क्षमा करब। आब कंस मुइल, आब हम सेवाक हेतु तत्पर छी।" दूहू गोटेक आँखिसँ नोर बहए लगलैन्हि ओ दूनू गोटे सङ्गहि बलराम ओ कृष्ण दूहू भाइकेँ हृदयसँ लगाए लेल।

तखन सबकेओ मीलि उग्रसेनक ओहिठाम गेलाह। हुनकहु बन्धनसँ मुक्त कए, सङ्ग लए, जाए मथुराक राज सिंहासन पर बैसाओल। तखन कृष्ण हुनका करजोड़ि निवेदन कएल-"महाराज हम अपनेक प्रजा छी। ओना तँ ययातिक शापक कारणे यदुवंशी सिंहासन पर नहि बैसथि परन्तु अपने बैसल जाओ। हम जखन अपनेक प्रजा भए सेवामे तत्पर रहब तखन अपनेकेँ छोट-छोट राजाक कोन कथा बड़का-बड़का देवताहुक डर नहि।"

तदुत्तर यदुवंशीक सङ्ग-सङ्ग आओर जे लोकनि वृष्णि, अन्धक सकल सजातीय बान्धव कंसक डरसँ मथुरा छोड़िकेँ पड़ाए गेल छलाह, सबकेँ कृष्ण ताकि-ताकिकेँ मङाओल, सबहिक सत्कार कए सबकेँ सान्त्वना देल, सबकेँ धन-सम्पत्तिसँ परिपूर्ण कए मथुरामे बसाओल।

तदुत्तर कृष्ण ओ बलराम नन्दराजक ओहिठाम अएलाह, कहए लगलाह जे "हे पिता! माए-बापक स्नेह ओ दुलार तँ हमरा अहीँ सँ ओ माए यशोदासँ भेटल अछि। अहाँ लोकनि आब व्रज जाउ। वात्सल्य स्नेहक कारणेँ अहाँ लोकनिकेँ दुःख होएत अवश्य परन्तु हमहुँ तँ लगहिमे छी।" ई कहि बहुत उपहार हुनकालोकनिकेँ दए सकल गोपगणक सङ्ग व्रजक हेतु विदा कए देल। विदाक काल सबकेँओ घाड़मे घाड़ जोड़ि खूब कनलाह।

तदुत्तर वसुदेव अपन पुरोहित गर्गाचार्यसँ बलराम ओ कृष्णक उपनयन करबाओल। ब्रह्मचारी भए दूनू भाए उज्जैन नगरीमे रहैत सान्दीपनि मुनिक ओहिठाम विद्या पढ़ए गेलाह। साङ्गवेद, सब उपवेद, तर्क मीमांसा तथा छओ भेदक सङ्ग राजनीतिक अध्ययन कएल। ओना तँ कृष्ण सर्वज्ञ छलाह, सब विद्या हुनकहि सँ वहराएल अछि, किन्तु मनुष्य जकाँ लीला कएकेँ कृष्ण सबटा नुकओने छलाह जे गुरुक आश्रममे प्रस्फुटित भए गेल। अध्ययन सम्पन्न कए कृष्ण गुरुकेँ कहल जे "हे गुरु, अपनेक जे इच्छा हो से गुरु-दक्षिणा माङ्ल जाओ।" कृष्णक अद्भुत महिमा गुरुकेँ बुझल भए गेल छलैन्हि। अपन पत्नीसँ विचार कए गुरु कहलथिन्ह जे "हे कृष्ण! प्रभास क्षेत्रमे स्नान करैत काल हमर वेटा समुद्रमे डुबिकेँ मरि गेलाह। हुनकहि हमरा आनि दिअ।" कृष्ण तथास्तु कहि सुदर्शन चक्र लए बलरामक सङ्ग

रथ पर चढ़ि प्रभास क्षेत्र गेलाह। समुद्र ई बूझि जे परमेश्वर आएल छथि, पूजाक सामग्री लए, हुनक सत्कारार्थ, हुनका समक्ष उपस्थित भेलाह। कृष्ण समुद्रकेँ कहलथिन्ह—"हमर जाहि गुरुपुत्रकेँ अहाँ लए गेल छी तनिका दए जाउ।" समुद्र कहल—"हे नारायण, हम ओहि बालककेँ नहि लए गेल छी। हमरा जलमे पञ्चजन नामक दैत्य जातिक एकटा असुर शङ्खक रूपमे रहैत अछि, ओएह अपनेक गुरुपुत्रकेँ लए गेल अछि।" कृष्ण तुरन्त जल मे प्रवेश कएल ओ अपन चक्रसँ शङ्खासुरकेँ मारि देल। ओकर शरीरक ओ शङ्ख "पाञ्चजन्य" लए ओ यमपुरीक द्वार पर जाए ओकरा फूकल ओ यमराजसँ अपन गुरुपुत्र आपस लेल। तखन ओहि बालककेँ लेने रथ पर चढि गुरुक समीप आबि ओहि बालककेँ गुरुकेँ सुनझाए देल। ओतए आनन्दक ठेकान नहि रहल। कृष्ण पुनः कहल—"हे गुरु! आओर यदि किछु इच्छा हो तँ माङ्ल जाए।" गुरु हर्षसँ गद्गद दूनू हाथ दूहू शिष्य बलराम ओ कृष्णक माथ पर राखि कहल—"हे यदुवंशमणि! आब आओर की चाही? अपनेक सन-सन पुरुषोत्तमक गुरु भए हमर कोन मनोरथ अपूर्ण रहि सकैत अछि।"

गुरुसँ आज्ञा लए दूनू भाइ रथ पर चढ़ि पुनः मथुरा अएलाह ओ स्वजन-परिजनक सङ्ग मिलि रहए लगलाह।

●

५

परिणय



१

कंसकेँ दू गोट स्त्री रहथिन्ह। दूनू मगधक पराक्रमी राजा जरासन्धक कन्या रहथिन्ह। कंसक बध भेला उत्तर ओ दूनू रानी, विधवा, अपन पिताक ओतए पहुँचलीहि। जरासन्ध शोक ओ क्रोधसँ जरए लगलाह। ओ अपन दूनू विधवा कन्याकेँ भरोस दैत संकल्प कएलैन्हि जे हम एहि पृथ्वीकेँ यादवसँ शून्य कए देब आ' अपन विशाल सेना लए मथुरा पर चढ़ाइ कए देल। कृष्ण ओ बलराम सेनाक सङ्ग चढ़ाइकेँ रोकल ओ जरासन्धकेँ हारिकेँ घूरि जाए पड़लैन्हि। परन्तु ओ वारंवार चढ़ाइ करितहिँ रहलाह। ओ सत्रह बेरि मथुरा पर चढ़ाइ कएल।

अठारहम बेर जखन जरासन्ध चढ़ाइक उद्योग करए लागल तखन ओ कालयवनक सहायता लेलक। कृष्ण ओ बलराम बुझैत छलाह जे लड़ाइमे जरासन्धकेँ हरएबो करबैक तथापि ओकर आक्रमणसँ देश केँ बड़ क्षति भए रहलैक अछि। मथुरा वारंवार ध्वस्त होइत जाइत अछि। व्रजमे हाहाकार मचि जाइत अछि। समस्त व्रज विशेषतः मथुरा हुनका-

लोकनिकेँ बड़ प्रिय, तेँ दूनू भाइ विचार कए मथुरा छोड़ि कतहु अन्यत्र दूर चल जाइ, तेँ दक्षिणदिशि समुद्रक मध्यमे एकटा बड़ सुन्दर नगरीक निर्माण कराओल, जकर नाम रहल 'द्वारका'। सकल यादवगण मथुरा छोड़ि ओतए जाए सुरक्षित रहि सकैत छलाह।

मुदा तावत् जरासन्धक अठारहम आक्रमण भेल। एहि बेरि ओ कालयवनक सङ्ग मीलि मथुरा पर चढ़ाइ कएलक। कृष्ण बलरामक सङ्ग विचार कए, एकसरे, बिनु कोनो अस्त्र लेने, नगर सँ बहरएलाह ओ कालयवनक सोझाँ पहुँचलाह। हुनका निरस्त्र देखि कालयवन सेहो अपन अस्त्र राखि देलक ओ कृष्णकेँ पछुअओलक। कृष्ण तेना जाथि जे कालयवनकेँ होइक जे आब हिनका पकड़ल मुदा कृष्ण बढ़ले जाथि, पकड़ए देथिन्ह नहि। एवं क्रमेँ कालयवनकेँ परतारैत कृष्ण दूरमे एक गोट पर्वत रहैक तकर गुफामे चल गेलाह आ' ओहि अन्हार गुफाक एक गोट कोनमे नुकाए रहलाह।

ओहि गुफामे एक जन सुनिद्र सुतल छलाह। कालयवन कृष्णकेँ पछुअओने ओहि गुफामे पैसल। सुतल व्यक्तिकेँ ओ कृष्ण बुझलक, ओकरा भेलैक जे ई कृष्ण थाकिकेँ पड़ल छथि। ओ लागल पाएरसँ हुनका लतिआबए। ओ सुतल व्यक्ति अकचकाए केँ उठलाह। क्रोधसँ हुनक आँखिसँ, ओ पदाघातक कारणे हुनका देहसँ, तेहन आगिक धधरा बहराएल जे काल-यवन ओतहि जरिकेँ भस्म भए गेल।

ई सुतल पुरुष छलाह मुचकुन्द, राजा मान्धाताक बेटा। मुचकुन्द ब्रह्मज्ञ छलाह, सत्यप्रतिज्ञ छलाह। कोनहु समयमे असुरक उपद्रवसँ ओ देवलोकक बहुत दिन धरि रक्षा कएल। पश्चात् देवतालोकनि जखन अपन सेनानी कार्तिकेयकेँ पाओल तखन मुचकुन्द न्यस्तभार भए गेलाह। देवता लोकनि वर माँगए कहलथिन्ह। मुचकुन्द मँगलथिन्ह मुक्ति। मुदा देवतालोकनि कहलथिन्ह जे मुक्ति तँ देताह विष्णु तेँ हुनक अवतारक प्रतीक्षा करू। ताहि पर मुचकुन्द कहलथिन्ह जे तावत् हमरा विश्राम करबाक वरदान देल जाए। देवतालोकनि पर्वतक इएह गुफा देखाए हुनका कहल जे जाउ सुतू गए। तेँ जखन कालयवन हुनक विश्रामकेँ भंग कएलक तखन देवतालोकनिक वरदानक प्रतापसँ जरिकेँ भस्म भए गेल।

तखन कृष्ण ओहि कोनसँ बहराए अपन दिव्य रूपक दर्शन मुचकुन्द केँ देल। मुचकुन्द हुनका देखि कृतकृत्य भए गेलाह। कर जोड़ि स्तुति करए लगलाह—हे भगवन्! एहि कर्मभूमिमे जे जन दैवयोगसँ विना यत्न सब अङ्गसँ संयुक्त जन्म लैत अछि आ' तखन पुनि अहाँक भजन नहि कए विषय-वासनामे डूबल रहैत अछि; तकर स्थिति ओहने छैक जेना कोनो पशु अन्धकूपमे खसि पड़ल रहए।

भगवान् मुचकुन्दकेँ उपदेश देल जे बदरिकाश्रम जाए मुक्ति लाभ करू गए ओ अपने जाए मथुराकेँ घेड़ने जे सेना छल तकरा भगाए ओकर सबटा धन-सम्पत्ति लए समस्त

यादवगणकेँ सङ्ग कए द्वारका आबि अपनालोकनिक वास स्थिर कएल।

धन्य कृष्ण जे अनायास कालयवनक संहार कएल ओ मुचकुन्दकेँ तारल !

२

एही मध्यमे विदर्भ देशक राजकुमारी रुक्मिणीक विवाहक तैआरी होइत छल। विदर्भक राजा छलाह भीष्मक, हुनक राजधानी छल कुण्डिनपुर। भीष्मककेँ पाँच पुत्र, सबसँ जेठ बेटाक नाम छलन्हि रुक्मी ओ कन्याक नाम छल रुक्मिणी। ओ परम सुन्दरी छलीहि। राज दरबारमे भिन्न-भिन्न ठामसँ आएल लोकसबहिक मुहसँ कृष्णक सौन्दर्य, पराक्रम, गुण ओ वैभवक गप्प सब सुनि-सुनि रुक्मी तँ हुनक द्रोही, विरोधी भए गेलाह मुदा रुक्मिणी हुनका पर मुग्ध भए गेलीहि ओ मनहि मन अपन अनुरूप पति हुनकहि मानलैन्हि, पतिरूपसँ हुनका वरण कए लेल। ओमहर कृष्ण सेहो रुक्मिणीक सौन्दर्य, शील आदि गुण सुनि-सुनि हुनका शुभलक्षणा जानि हुनका पत्नीक रूपमे पएबाक इच्छा करैत छलाह। रुक्मिणीक गुरुजन सेहो चाहैत छलाह जे रुक्मिणीक विवाह कृष्णसँ हो। परन्तु रुक्मी एकर घोर विरोध कएल ओ चेदि देशक राजा दमघोषक पुत्र शिशुपालसँ हुनक विवाहक स्थिरता कएल।

रुक्मिणीकेँ जखन ई वार्त्ता भेल तँ ओ परम दुःखी भए गेलीहि। बहुत सोचि-विचारि ओ कृष्णक ओतए अपन मनोरथ निवेदन करबाक निश्चय कएलैन्हि ओ तेँ हेतु एक गोट ब्राह्मणकेँ जनिका पर हुनका पूर्ण विश्वास छलैन्हि बजाए हुनकासँ निवेदन कएल जे "अपने कृपाकए चुपचाप द्वारका गेल जाओ; हमर स्थिति कृष्णकेँ कहि आएल जाए। हमरा पर कृपा कएल जाए।" ब्राह्मण स्वीकार कएल। लगले ओ विदा भए द्वारका पहुँचलाह। द्वारपाल हुनका राजमहलक भीतर लए गेल। ब्राह्मणक परम भक्त कृष्ण हुनक पूर्ण सत्कार कएल, पूजा कएल, प्रणाम कएल। आदर-सत्कार ओ कुशल प्रश्नक अनन्तर जखन ब्राह्मण भोजन कएल, भोजन कए विश्राम कएल, तखन एकान्तमे हुनका बजाए कृष्ण पहिने तँ हुनक अपन, तखन विदर्भ देशक ब्राह्मणक, तखन विदर्भ राजक कुशल समाचार पूछि अन्तमे पूछल जे "हे ब्राह्मण! अपने कतए सँ, कोन हेतुएँ, कोन अभिलाषासँ एहन कठिन मार्ग पार कए एतेक दूर हमरा ओतए आएल छी? यदि कहबाक योग्य हो तँ से हमरा कहल जाओ। हमरासँ अपनेक कोन सेवा भए सकैत अछि? यदि गोपनीय विषय रहत तँ हम से गुप्ते राखब।"

ब्राह्मण करजोड़ि कहए लगलाह-"हे त्रिभुवन-सुन्दर! अपनेक गुणक गाथा कानक मार्गसँ जखन सुननिहारक हृदयमे प्रवेश करैत छैक तँ सब अङ्गक ताप, जन्म जन्मक पापक ताप, नष्ट भए जाइत छैक। अपनेक रूपक जखन दर्शन होइत छैक

तखन देखनिहारक हृदयसँ सब भाव जाए अहीँमे प्रवेश कए जाइत छैक। जाही दृष्टिसँ देखू, कुल, शील, स्वभाव, सौन्दर्य, विद्या, अवस्था, धन, धाम सबमे अपने अद्वितीय छी। कोन एहन कुलवती, गुणवती, धैर्यवती कन्या होइति जे अपनेक गुणसँ मुग्ध भए पतिरूपमे अपनेकेँ वरण नहि करति। से हे श्यामसुन्दर! विदर्भक राजकुमारी रुक्मिणी समस्त शुभ-लक्षणसँ सम्पन्न, परम सुन्दरी, परम बुद्धिमती, शील, स्वभाव, उदारता, लावण्य सब गुणसँ संयुक्त, अपनेक गुणसँ मुग्ध, हमरा अपनेक ओहिठाम पठओलैन्हि अछि ई संवाद कहए जे "हे नाथ! हम अपनेकेँ पतिरूपमे वरण कएने छी। हम अपनेक चरणमे आत्मसमर्पण कएने छी। अपने अन्तर्यामी छी, हमर हृदयक कोनो भाव अपनेसँ नुकाएल नहि होएत। अपने एतए आबि हमरा अपन पत्नी बनाओल जाए। अपनेक सदृश वीरकेँ अपनाकेँ समर्पित कए हम अपनेक छी तखन जेना सिंहक अंश कोनो गीदर छूबि लैक, तेना कतहु शिशुपाल आबि हमर स्पर्श ने कए जाए। तेँ हे प्रभु! अपने अजित छी, विवाहक दिनसँ एक दिन पहिने अपने गुप्त रूपसँ कुण्डिनपुर अएबाक कृपा कएल जाए। बड़-बड़ वीरक संग शिशुपाल, जरासन्ध सबहिक सेनाकेँ मथिकेँ राक्षस-विधिसँ बलपूर्वक, वीरताक मूल्य दए, हमर पाणिग्रहण कएल जाओ। यदि अपनेकेँ सन्देह हो जे हम अन्तःपुरमे रहैत छी, पहराक भीतर रहैत छी, हमर रक्षक भाए, बन्धु इत्यादिसँ बिना युद्ध

कएने अपने हमरा कोना लए जाए सकैत छी तँ तकरो उपाय हम अपनेकेँ सुझाए दैत छी। हमरा कुलक एहन नियम अछि जे विवाहसँ एक दिन पूर्व कन्याकेँ जलूसक संग यात्रा करए पड़ैत छैक, नगरक बाहर गिरिजादेवीक पूजा करए जाए पड़ैत छैक। ओही यात्राक मध्यसँ अपने हमर हरण कए लेल जाए। हम प्रस्तुत रहब। हमरा छोड़ि नहि देल जाए। बड़ पैघ-पैघ महापुरुष अपनेक चरणकमलक रजसँ आत्मशुद्धि करैत छथि, हम यदि ओ चरणरज, अपनेक प्रसाद, नहि पाबि सकलहुँ त' व्रत द्वारा शरीरकेँ सुखाए हम प्राण त्यागि देब। सहस्रों जन्म एहि हेतुक हमरा जन्म लिअए पड़ए, तपस्या करए पड़ए, परन्तु हम संकल्प कएने छी। अपनेक प्रसाद हम अवश्य प्राप्त करब। तखन अपनेक जेहन कृपा हो"

से हे यदुवंश शिरोमणि! इएह थिक रुक्मिणी कुमरिक अत्यन्त गोपनीय संवाद जे लए हम अपनेक सेवामे आएल छी। परसू राति रुक्मिणीक विवाहक लग्न छैन्हि। जे आज्ञा हो से कहल जाओ। हम तुरन्ते आपस होएब। रुक्मिणीजीक प्राण हमरा उत्तरक हेतु टाङल होएतैन्हि।"

ई सुनि कृष्ण ब्राह्मणक हाथ अपना हाथमे लैत, हँसैत कहल जे "हे ब्राह्मण! जहिना विदर्भ-राजकुमारी हमरामे अनुरक्ता छथि हमहूँ तहिना हुनकामे अनुरक्त छी। हमर चित्त सतत हुनकहिमे लागल रहैत अछि। कहाँ धरि कहू, रातिकेँ निन्द नहि होइत अछि। हमरा बुझल अछि जे रुक्मी द्वेषसँ

हमर विवाहक कथा रोकि देलैन्हि अछि। मुदा हम प्रस्तुत छी। अपने देखब जे एहि क्षत्रिय कुलकलङ्कक सेनाक नाश कए हम अपनामे अनुरक्ता परम सुन्दरी राजकुमारीकेँ हरण कए लए आनब।"

ई कहि कृष्ण अपन सारथीकेँ बजाओल ओ कहल जे हमर चारू बिछलाहा घोड़ाकेँ जोति रथ तुरन्त लए आउ। ओ रथ अएला पर पहिने ब्राह्मणकेँ बैसाए ओ तखन स्वयं रथ पर चढ़ि विदर्भक हेतु विदा भए गेलाह ओ एकहि दिनमे, दोसरा दिन प्रातःकाल, कुण्डिनपुर पहुँचि गेलाह।

३

ओमहर विदर्भराज अपन जेठ बालक रुक्मीक अनुरोधसँ शिशुपालकेँ अपन कन्या देबाक हेतु विवाहोत्सवक तैआरी कए रहल छलाह। समस्त नगर सजाओल जाइत छल। राज-पथ साफ कएल गेल, ओहि पर जल छीटल गेल, सर्वत्र छोट पैघ भण्डी, पताका, तोरण, वन्दवार लगाओल जाए रहल छल। सब पुरजन सुन्दर वेश-भूपामे छलाह, समस्त नगर धूपसँ सुवासित छल। राजा देवता ओ पितरक पूजा कए ब्राह्मण भोजन कराओल। राजकुमारीक स्नान कराओल गेल, कोबर बनाओल गेल।

ओमहर चेदिराज अपन बेटा शिशुपालक विवाहक निमित्त सब मङ्गल कृत्य कए चतुरङ्गिणी सेना लए कुण्डिनपुर

पहुँचलाह। बरिआतीक स्वागत-सत्कार, अर्चन-पूजा सब किछु भेल। ओहि बरिआतीमे शिशुपालक मित्र राजालोकनि छलाह, ओ लोकनि सब कृष्णक विरोधी छलाह, ओ चाहथि जे रुक्मिणीक विवाह शिशुपालहिसँ हो। ओ लोकनि सन्नद्ध भए आएल छलाह जे कृष्ण ओ बलराम यदि उपद्रव करताह तँ युद्ध करब।

द्वारकामे बलरामकेँ जखन ई सब वार्त्ता भेलैन्हि ओ जखन ओ ई बुझलैन्हि जे कृष्ण एकसरे कुण्डिनपुरक हेतु प्रस्थान भए गेलाह, तखन कृष्णक बल ओ बुद्धि दूहूक हुनका पूर्ण भरोस छलैन्हि तथापि शङ्कित-चित्त ओ यदुवंशीक समस्त चतुरङ्गिणी सेना लए विदर्भक हेतु प्रस्थान कए देलैन्हि।

एमहर रुक्मिणी कृष्णक प्रतीक्षामे व्याकुल छलीह, परन्तु कृष्णक कोन कथा एखन पर्यन्त ब्राह्मणदेवता पर्यन्त नहि फिरलाह अछि। क्षण-क्षण हुनक चिन्ता बढ़ल जाए, नाना प्रकारक वितर्क हो। विवाहमे एक राति मात्रक विलम्ब छल परन्तु कृष्ण नहि अएलाह अछि। की हुनका हमरामे कनो दोष बुझि पड़लैन्हि अथवा की पार्वतीजी हमरा पर अप्रसन्न छथि? पुनः मनमे होन्हि जे एखनहु समय छैक, एही प्रतीक्षामे हुनका आँखि सँ नोर झहरए लगलैन्हि। कृष्णक ध्यान करैत ओ आँखि मुनि बैसि रहलीहि। क्रमशः हुनक बामा जाँघ, वाम भुजा, बामा आँखि फड़कए लगलैन्हि। ताबत ओ संवाद लए गेनिहार ब्राह्मण पहुँचि गेलाह। ओ देखैत छथि जे

रुक्मिणी जेना समाधिमे मौन बैसलि होथि। ब्राह्मण निवेदन कएल जे कृष्ण आबि गेलाह। रुक्मिणी ई सुनितहिँ आनन्दसँ कूदि उठलीहि ओ ब्राह्मणक पाएर पर खसि पड़लीहि।

विदर्भराजकेँ जखन वार्ता भेलैन्हि जे कृष्ण कुण्डिनपुर आएल छथि तँ ओ बुझलैन्हि जे कृष्ण विवाह देखए आएल होएताह। ओ पूर्ण सत्कार सँ हुनका नगरमे स्वागत कएल। विदर्भ देशक लोक जखन सुनलक जे कृष्ण नगरमे आएल छथि तँ सबहिक मुहसँ इएह बहराइक जे रुक्मिणीक पाणिग्रहण जँ कृष्ण करितथि!

शुभ क्षणमे रुक्मिणी अन्तःपुर सँ बहराए पार्वतीक पूजन हेतु विदा भेलीह। हृदयमे हुनका श्यामसुन्दरक टा ध्यान छलैन्हि। चारू दिसिसँ हुनका सखी घेड़ने छलैन्हि। शूर-वीर सैनिक हुनका सङ्ग छलैन्हि, पाछाँ-पाछाँ झुण्डक झुण्ड बजनिञा सब सङ्ग जाइत छलैन्हि। मन्दिर पहुँचि रुक्मिणी पार्वतीक पूजा कएल, वर माङ्गल जे हमर अभिलाषा पूर्ण हो, कृष्ण हमर पति होथि। पूजा सम्पन्न कए रुक्मिणी सखी सबहिक सङ्ग आपस विदा भेलीह। हुनक हृदयमे प्रबल प्रतीक्षा छल जे कखन कृष्ण आबिकेँ हमर हरण करैत छथि तेँ अत्यन्त उत्कण्ठासँ ओ चारूकात तकैत छलीहि जे कोमहर-सँ कृष्ण आबि रहलाह अछि।

ओमहर जतेक राजालोकनि आएल छलाह सब ई उत्सव यात्रा देखए सड़कक कातमे ठाढ़ छलाह। सब मोहित छलाह।

तावतहिँ केओ देखलक, केओ नहि देखलक, कोमहरसँ कृष्ण अएलाह, रथ पर सवार, रुक्मिणीक समीप आबि हुनका उठाए रथ पर बैसाए लेल ओ वायु-वेगसँ रथ हाँकि द्वारिकाक मार्ग धएल।

किछु काल धरि तँ लोक विमूढ़ ठाढ़ छल, बुझिए नहि सकल जे की भेलैक। पश्चात् जखन ई घोल भेलैक जे कृष्ण रुक्मिणीक हरण कए लए गेलाह तँ तखन शिशुपालक दलक सब वीर अपन-अपन सेनालए कृष्णक पाछाँ दौड़लाह मुदा यदुवंशी सेना बीचहिमे ओकरा रोकलक ओ भयङ्कर युद्ध भेलैक किन्तु शिशुपाल, जरासन्ध इत्यादि सकल वीर परास्त भए फिरि गेलाह। कृष्ण रुक्मिणीकेँ लेने चल जाइत रहलाह।

शिशुपालकेँ बड़ ग्लानि भेलैन्हि जे हुनक भावी पत्नीक हरण भए गेल। परन्तु जरासन्ध हुनका बुझाओल जे ई संयोग थिकैक, युद्धमे जय ओ पराजय अनिश्चित रहैत छैक तेँ अहाँ सन वीर पुरुषकेँ एकर क्षोभ नहि करबाक थिक। शिशुपाल अपन मित्र सबहिक सङ्ग घुरि अपन-अपन नगर चल गेलाह।

४

मुदा रुक्मी नहि मानलथिन्ह। ओ अपन बीछल सेना लए कृष्णक पाछाँ दौड़लाह। बड़ीकाल धरि युद्ध भेल। रुक्मीक सब यत्न कृष्ण व्यर्थ कए देल। ओ तरुआरि खीँचि

कृष्णक रथ पर कूदि गेलाह। रुक्मिणीकेँ बड़ डर भेलैन्हि जे आब कृष्ण रुक्मीकेँ मारि देथिन्ह। ओ कृष्णक पाएर पकड़ि कहए लगलथिन्ह जे "हे नाथ! हमर भाइक प्राण जनु लिओन्हि।" कृष्ण हँसए लगलाह ओ रुक्मीकेँ पकड़ि ओकरे दोपटासँ ओकर हाथ पाएर बान्हि, तरुआरिसँ ओकर केश, दाढ़ी ओ मोछकेँ एकभागसँ काटि कुरूप कए ओकरा ओहीठाम पृथ्वीपर छोड़ि देल।

ताबत शत्रुदलकेँ परास्त कए यदुवंशी सेनाक सङ्ग बल-रामजी ओतए पहुँचलाह। रुक्मीक ई दशा देखि हुनकहु बड़ हँसी लगलैन्हि मुदा ओ कृष्णकेँ खिसिआए लगलथिन्ह जे अपन सम्बन्धीक केओ एहन दुर्दशा करैत अछि। आ' रुक्मिणीकेँ बुझनए लगलथिन्ह जे हिनक ई दुर्दशा अपने दुष्कर्मक कारणे भेलैन्हि अछि अतएव ई सब मनमे नहि राखल जाए।

एवं क्रमेँ शत्रुकेँ परास्त कए कृष्ण रुक्मिणीकेँ लए द्वारिका पहुँचलाह, ओतए बड़ उत्सव भेल। कृष्ण विधिवत् रुक्मिणीक पाणिग्रहण कएल। सर्वत्र रुक्मिणी-हरणक गप्प होइत रहल। लक्ष्मीस्वरूपा रुक्मिणीकेँ पाबि आइ कृष्ण सत्ये लक्ष्मीपति छलाह ओ सब प्रसन्न छल।

रुक्मिणीसँ कृष्णकेँ बालक भेलथिन्ह प्रद्युम्न, जनिका दशमे दिन शम्बरासुर हरिकेँ लए गेल परन्तु जे पुनः ओकरा परास्त कए रतिकेँ स्त्री बनाए रुक्मिणी ओ कृष्णक ओहिठाम

अएलाह। प्रद्युम्न साक्षात् कामदेवक अवतार छलाह ओ जहिआ शङ्कर कामदेवकेँ भस्म कए देल तहिअहिसँ रति हिनकहि प्रतीक्षामे छलीह।

५

द्वारकामे एक जन महाप्रतापी यदुवंशी छलाह, सत्राजित्। ओ सूर्यक बड़ भक्त छलाह। सूर्य हुनका प्रसन्न भए एकटा मणि देलथिन्ह, स्यमन्तक, जे सूर्य जकाँ चमकैत छल आ' ओकर गुण इएह रहैक जे प्रतिदिन ओ पक्की तौल दू सेर सोन देल करैक। सत्राजित जखन ई मणि लए द्वारका अएलाह तँ सबकेँ आश्चर्य भेलैक आ' सङ्गहि सङ्ग लोभ सेहो भेलैक, तेँ कृष्ण एक दिन सत्राजितकेँ बजाए कहलथिन्ह जे ई मणि अहाँ राजा उग्रसेनकेँ दए दिऔन्ह। परन्तु सत्राजित कतहु से मानथिन्ह; ओ मणि नहि देलथिन्ह।

सत्राजितक छोट भाए छलाह प्रसेन। एक दिन ओ ओहि मणिकेँ गरामे पहीरि घोड़ा पर चढ़ि वनमे शिकार खेलाए गेलाह। ओतए एकटा सिंह हुनका मारि देलकैन्हि, आ' ओ मणि छीनि लेलकैन्हि। मणि लए ओ गुफामे जइतहिँ छल तावत ऋक्षराज जाम्ववान् देखलथिन्ह। ओ सिंहकेँ मारि मणि लए लेल तथा अपना गुफामे जाए बच्चाकेँ खेलएबाले दए देल। ओहि मणिसँ ओ गुफा सतत भासमान रहए।

प्रसेन जखन घुरिकेँ नहि अएलाह तखन सत्राजितकेँ बड़ दुःख भेलैन्हि। ओ बुझलैन्हि जे कृष्णकेँ हम मणि नहि देलिऐन्हि तेँ ओ हमर भाइकेँ मारि रत्न लए लेलैन्हि। कानाकानी ई गप्प कृष्णकेँ वार्त्ता भेल। ई मिथ्या कलङ्क हमरा लागि रहल अछि, एकरा दूर करबाक चाही, अतएव नगरक किछु प्रतिष्ठित व्यक्तिकेँ सङ्ग कए ओ विदा भेलाह, प्रसेनकेँ ताकए। पदचिन्हक अनुसरण करैत ओ लोकनि विदा भेलाह। घोर जङ्गलमे देखैत छथि, प्रसेनकेँ ओ हुनक घोड़ाकेँ मुइल, ओ ओहिठाम सिंहक पाएरक चिन्ह। सिंहक पाएरक चिन्हक अनुसरण करैत ओ लोकनि पहुँचलाह एक गोट गुफाक लगमे। ओतए सिंह मुइल पड़ल छल आ' गुफा छल भासमान। ओ लोकनि बुझलैन्हि जे सिंहसँ मणिकेँ लए केओ एही गुफामे गेल छथि तेँ आओर सबलोककेँ बाहरहिमे राखि कृष्ण एकसरे गुफामे प्रवेश कएल।

गुफाक भीतर जाए कृष्ण देखैत छथि जे ओतए एक गोट परिवारक आवास छैक तथा एक गोट प्रौढ़ा स्त्री एकटा बच्चाकेँ ओही मणिसँ खेलवैत छैक। अपरिचित व्यक्तिकेँ गुफाक मध्य देखैत बच्चाक ओ धाए चिचिआए लागलि। से सुनि वृद्ध ऋक्षराज दौड़लाह ओ क्रोधक आवेगमे ई के थिकाह से बिनु चिन्हनहिँ हुनका पर प्रहार कए देल। दूनूमे युद्ध चलल, पहिने अस्त्र-शस्त्रसँ, तखन पाथरसँ, तखन गाछसँ, अन्तमे दूनू कुस्तीमे बाझि गेलाह। अट्ठाइस दिन धरि युद्ध भेल। वृद्ध

जाम्बवान् विस्मित भए कृष्णकेँ कहए लगलाह—"प्रभो, हम नहि चिन्हल। क्षमा कएल जाए। अपने हमर स्वामी रामचन्द्र सएह कृष्ण भए अवतार लेल अछि। हम अज्ञनतासँ अपनेक विरोध कएल," ओ ई कहैत ओ कृष्णक पाएर पर खसि पड़लाह। कृष्ण परम कल्याणकारी अपन कोमल करकमलसँ जाम्बवानक देह पोछए लगलथिन्ह; जाम्बवानक सबटा क्लेश हटैत गेलैन्हि। तखन कृष्ण हुनका कहल "हे ऋक्षराज! हम मणिक हेतु एहि गुफामे आएल छी। एहि मणिक द्वारेँ हमरा मिथ्या कलङ्क लागल अछि जे ई मणि लए जाए हम दूर करब।" जाम्बवान दौड़लाह, ओहि मणिक सङ्ग अपन अनिन्द्य-सुन्दरी गुणवती कन्या जाम्बवतीकेँ लेने पहुँचलाह, ओ बड़े भक्ति ओ उल्लाससँ कृष्णक पूजा कए मणिक सङ्ग-सङ्ग अपन कन्या सेहो हुनका चरणमे अर्पित कए देल।

ओमहर जनिका लोकनिकेँ कृष्ण गुफाक बाहर छोड़ि आएल रहथि ओ लोकनि कृष्णक प्रतीक्षामे बारह दिन धरि ओतए रहलाह। परन्तु कृष्ण जखन नहि बहरएलथिन्ह तखन निराश भए द्वारका फिरि गेलाह तथा सबकेँ कहि देलथिन्ह जे कृष्ण जे गुफामे गेलाह से नहि बहरएलाह, प्रायः ओ आब नहि जिबैत छथि।

द्वारकामे सब शोकमग्न भए गेल। सब सत्राजितकेँ शाप देअए लागल। पश्चात् वसुदेव, देवकी, रुक्मिणी प्रभृति सब-केओ महामाया दुर्गा देवीक आराधनामे लागि गेलाह। एहि

मध्यमे मणि लेने अपन नववधू जाम्बवतीक सङ्ग कृष्ण द्वारका पहुँचि गेलाह। हुनका गरामे मणि ओ सङ्गमे परमसुन्दरी युवतीकेँ देखि द्वारकाक सब लोक परमानन्दमे मग्न भए गेल।

तदुत्तर कृष्ण राजसभामे महाराज उग्रसेनक समक्ष सत्रा-जितकेँ बजाओल ओ मणि कोना भेटलैन्हि से वृतान्त सबटा सुनाए ओ मणि सत्राजितकेँ सुनभाए देल। सत्राजित अत्यन्त लज्जित भए गेलाह। मणि तं ओ लए लेल मुदा लाजसं हुनक मूड़ी खसल रहए। अपन अपराध पर हिनक बड़ पश्चात्ताप होअए लागल ओ सतत अपन अपराधक मार्जन कोना करब, एही चिन्तामे डूबल रहथि। अन्तमे ई निश्चय कएल जे धनक लोभसँ जे अदूरदर्शिता हमरासँ भेल तकर प्रतिकार आब इएह अछि जे रमणीक रत्न अपन परम गुणवती ओ रूपवती कन्या, सत्यभामा, कृष्णकेँ दए दिऐन्हि। एहीसँ हमर कल्याण भए सकैत अछि। अतएव मणि लए अपना कन्याकेँ सङ्ग कए ओ कृष्णक ओहिठाम गेलाह, ओ हुनक पाएर पर खसि दूनू हुनका समर्पित कए देल। सत्यभामाक रूप ओ गुण द्वारकाक कोन कथा, लग पासक सब देशमे विख्यात छल। अनेक व्यक्ति सत्राजितसँ सत्यभामा मङनहु छलथिन्ह। हुनका पाबि कृष्ण बड़ प्रसन्न भेलाह। हुनक पाणिग्रहण ओ कए लेलथिन्ह, मुदा मणि ओ नहि लेलथिन्ह, कहलथिन्ह "ई मणि हम नहि लेब। अहाँ सूर्यक भक्त छी। ई अहींक सङ्ग रहओ, हमरा

एकर फल मात्रसँ प्रयोजन तेँ एहिसँ जे सोन प्रतिदिन बहराइक से हमरा दए देल करब।" सत्राजित प्रसन्न भए मणि लए अपन घर घुरलाह।

६

तावत लाक्षागृहमे आगि लागल ओ कुन्तीक सङ्ग हुनक पाँचो बेटा जरिकेँ भस्म भए गेलथिन्ह, ई वार्त्ता समस्त भारतवर्ष पसरि गेल। कृष्ण जनैत छलाह जे ई सब प्रवाद थिक, पाण्डवलोकनि जरलाह नहि। तथापि कुन्ती हुनक पिउसि छलथिन्ह तेँ हुनका जिज्ञासामे हस्तिनापुर जाएब आवश्यक। तेँ ओ बलरामक सङ्ग हस्तिनापुर चल गेलाह। कृष्णक परोक्षमे यदुवंशीक दू नायक, अक्रूर ओ कृतवर्मा, जनिका सत्यभामासँ विवाहक उत्कण्ठा छलैन्हि, एक तेसर यदुवंशी शतधन्वाकेँ आबिकेँ कहल जे "अहाँ सत्राजितसँ मणि किएक नहि छीनि लैत छी? हमरालोकनिकेँ सत्राजित वचन देने छलाह जे सत्यभामा ओ हमरहि लोकनिमे ककरहु देताह से ओ कृष्णकेँ दए देल।" शतधन्वा पापी छल। ओ अक्रूर ओ कृतवर्माक सनकओला पर बड़े निर्दयतापूर्वक सत्राजितकेँ जाए मारि देल ओ मणि लए पड़ाए गेल।

सत्यभामाकेँ वड़ दुःख भेलैन्हि। ओ रथ जोताए हस्तिनापुर गेलीहि। कृष्णक समक्ष जाए ओ कानए लगलीहि जे पापी शतधन्वा हमरा बापकेँ मारि देलक। कृष्ण ओ बलराम बड़

दुःखी भेलाह। सत्यभामाकेँ सङ्ग लेने ओ दूनू भाइ हस्तिनापुर अएलाह ओ शतधन्वाकेँ कोना दण्ड दी, कोना ओकर मणि लए ली, तकर परामर्श करए लगलाह।

शतधन्वा जखन सुनलक जे सत्यभामा कृष्णकेँ बजाए आनल अछि तखन ओ घबड़ाएल। पहिने ओ कृतवर्माक ओहिठाम गेल। कृतवर्मा कहलथिन्ह जे "हम कृष्णसँ विरोध नहि करब। जनिका जरासन्ध परास्त नहि कए सकल अछि, जकरासँ विरोध कए कंस यमपुर गेलाह, तनिकासँ हम वैरि मोल लेब ?"

कृतवर्मासँ निराश भए शतधन्वा अक्रूरक ओहिठाम पहुँचल। अक्रूर कहलथिन्ह—के एहन होएत जे कृष्णक बल ओ पौरुषकेँ जनैत हुनकासँ विरोध करत ? सात वर्षक जखन ओ छलाह तखनहि ओ एक हाथेँ गोवर्धनकेँ उखारि सात दिन धरि उठओने रहलाह। हम हुनका प्रणाम करैत छिऐन्हि। हुनक विरुद्ध हम नहि जाए सकैत छी।" शतधन्वा हताश भए ओ मणि अक्रूरक आगाँमे पटकि अपने तेज घोड़ा पर चढ़ि पड़ाएल।

कृष्णकेँ जखन ई वार्ता भेलैन्हि तखन बलरामक सङ्ग ओ ओकरा खेहारल। पड़ाएल-पड़ाएल मिथिलाक उपवन लग आबि शतधन्वाक घोड़ा खसि पड़लैक, मरि गेलैक। शतधन्वा पाएरहिँ पड़ाएल। कृष्ण बलरामकेँ रथ पर छोड़ि अपने पाए-रहिँ ओकरा पछुआओल, ओ अपन चक्रसँ शतधन्वाक

गरदनि काटि देल। कतबो तकलैन्हि मुदा स्यमन्तक मणि ओकरा सङ्गसे नहि भेटलैन्हि तँ निराश भए ओ घूरिकेँ रथ लग अएलाह तथा बलरामकेँ कहल जे शतधन्वाकेँ तँ हम मारल परन्तु स्यमन्तक मणि तँ नहि भेटल। बलरामकेँ विश्वास नहि भेलैन्हि ओ तेँ उदास भए कृष्णकेँ कहलथिन्ह जे अहाँ द्वारका जाउ, मणिक पता लगाउ गए। हमरा मिथिला-नरेशक भेँट करबाक अछि, हम ओतए जाइत छी।

द्वारका आबि कृष्ण सत्यभामाकेँ सबटा समाचार सुनाए देलथिन्ह जे कोना ओ सत्यभामाक बापकेँ मारनिहार शतधन्वाक प्राण लेल मुदा स्यमन्तक मणि ओकरा संगमे नहि छलैक।

कृतवर्मा ओ अक्रूर, जे शतधन्वाकेँ सनकओने छल, जखन देखलक जे कृष्ण शतधन्वाक प्राण लए लेल तखन भयभीत भए द्वारका छोड़ि दूनू पड़ाए गेल। ताबत द्वारकामे अनेक प्रकारक अनिष्ट ओ अरिष्ट आरम्भ भए गेल, विशेषतः ओतए वर्षा बन्द भए गेलैक। लोक कहैक जे अक्रूरक चल गेने ई सब उत्पात होइत अछि। कृष्णकेँ ई विश्वास नहि छलैन्हि तथापि अपन लोक चारू कात पठबाए ओ अक्रूरकेँ बजबाए मँगाओल। हुनक स्वागत सत्कार भेल। पश्चाति एकान्तमे लए जाए ओ अक्रूरकेँ कहए लगलाह जे "शतधन्वा स्यमन्तक मणि अहीँकेँ दए गेल अछि ई हमरा विश्वास अछि। सत्राजितकेँ पुत्र नहि तेँ हुनक ई मणि हुनक दौहित्र, सत्यभामाक बेटाक थिकैन्हि, मुदा ओ

मणि अपनहि रा ल जाओ। अपनेबड़ व्रतनिष्ठ छी, पवित्रात्मा छी। दोसराक हेतु ओ मणि राखव कठिन छैक। परन्तु देखल जाओ। एहि मणिक कारणेँ हमरा अपनहिं परिवारमे वैमनस्य भए जएबाक सम्भावना उपस्थित अछि। ने बलरामकेँ हमरा पर पूर्ण विश्वास होइत छैन्हि, ने सत्यभामा हमर गप्प पर विश्वास करैत छथि, ने जाम्बवती। अतएव अपने ओ मणि सबकेँ देखाए दिऔक, हिनकहुलोकनिकेँ देखाए दिऔन्ह जाहिसँ सबकेँ विश्वास भए जाइक। हमरा जे मिथ्या कलङ्क लागि रहल अछि ताहिसँ हमर रक्षा करू। मणि धरि ई अहीँक संग अछि, कारण, विनु ओहि मणिक प्रभावेँ अहाँ जे एतेक सोन यज्ञ-दानमे ख़र्च करैत छी से सम्भव नहि ”

कृष्णक ई कथा सूनि अक्रूर कर जोड़ि वस्त्रमे लपेटल ओ मणि हुनक समक्ष आगाँ मे राखि देल। कृष्ण ओकरा लए सबकेँ देखाए अएलाह। दूत पठाए वलरामकेँ सेहो वार्त्ता देल। मिथ्या कलङ्कसँ ओ आव मुक्त भेलाह। तथा अपनहु राखि सकैत छलाह तथापि ओ मणि कृष्ण अपने नहि राखल, अक्रूरकेँ दए देल।

७

लाक्षागृहसँ वहराए पाण्डवलोकनि बौआइत-बौआइत द्रूपद देशमे अएलाह। ओतए अर्जुन मत्स्यवेध कए द्रौपदीकेँ स्वयंवरमे जीतल। ओ लोकनि तदुत्तर इन्द्रप्रस्थ

अएलाह। ताही समयमे एक वेरि कृष्ण हुनक जिज्ञासा करए पहुँचलाह। अर्जुनक संग यमुनाक तीरमे शिकार खेलाइत एक गोट परम सुन्दरी कन्याकेँ ओ तपस्या करैत देखल। कृष्ण मुग्ध भए गेलाह ओ अपन मित्र अर्जुन केँ ओकर पुछारी करए पठाओल। अर्जुन जाएकेँ ओहि कन्याकेँ पुछलथिन्ह–"सुन्दरी! अहाँ के थिकहुँ? तपस्या किएक करैत छी? अहाँक इच्छा की अछि?" ओ कन्या कहलि "हम भगवान सूर्यक कन्या थिकहुँ, हमर नाथ थिक कालिन्दी। यमुनाक जलमे हमर पिता हमरा हेतु एक टा घर बनवाए देने छथि। लक्ष्मीक जे नाथ छथिन्ह भगवान, तनिका छोड़ि हम आनकेँ अपन पति नहि चाहैत छी, तेँ हम तपस्या करैत छी जे यदुवंश—शिरोमणि कृष्ण, जे भगवानक अवतार थिकाह से, हमरा ग्रहण करथि।" अर्जुन आबि कृष्णकेँ कहलथिन्ह। दयासागर कृष्ण स्वयं जाए ओहि कन्याकेँ संग लए गेलाह। पश्चात् जखन ओ द्वारका अएलाह तखन अपन स्वजनक अनुमति लए कालिन्दीक संग विधिवत् विवाह कएल ओ परम आनन्दसँ रहए लगलाह।

एहिना उज्जैनक राजाकेँ एक गोट बहिनि रहथिन्ह मित्रविन्दा। हुनक भाए कृष्णकेँ सम्बन्धेँ पीउसि छलथिन्ह। स्वयंवरमे ओ कृष्णकेँ पति वरण कएल परन्तु राजा रहथि दुर्योधनक वशवर्ती। ओ अपन बहिनिकेँ कृष्णकेँ देअए नहि चाहल

परन्तु मित्रविन्दाक वरण स्वीकार कए कृष्ण हुनका हरण कए लए गेलाह ओ हुनका सङ्ग विधिवत् विवाह कए लेल।

कोशल देशक राजा छलाह नग्नजित्। हुनका सात टा दुर्दान्त बड़द रहैन्हि, ककरहु बुते ओ बड़द सब नाथल नहि हो। राजाकें एकटा कन्या छलथिन्ह सत्या। राजा संकल्प कए लेल जे जे केओ एहि सातो बड़द कें जीतत तकरहि सङ्ग हम सत्याक विवाह कराएब। कृष्णकें जखन ई समाचार ज्ञात भेलैन्हि तखन ओ कोशल देश पहुँचलाह। राजा हुनक पूर्ण सत्कार कएल, हुनक पूजा कएल। ओ कर जोड़ि निवेदन कएल जे "हे वीर! हमरा राज्यमे सात गोट बड़द अछि जे ककरहु बुते नाथल नहि होइत अछि। तें हम संकल्प कएने छी जे जे केओ एकरा नथताह तनिकहि संग हम सत्याक विवाहक कराएब। कतेक राजा ओ राजकुमारकें ई बड़द सब परास्त कएने अछि तें अपने देखल जाए ओ सातो बड़दकें वशमे कए अपने हमर कन्याक ग्रहण कएल जाए।" सत्या सेहो जाए पार्वतीक पूजा कएल ओ प्रार्थना कएल जे "हे गौरी, कृष्णकें हमरा पति दए हमर लालसाक पूर्ति कए देल जाए।"

बड़दकें नाथब कृष्णक हेतु कोन कठिन कार्य छल? ओ अनायास सब बड़दकें नाथि रस्सीसे बाँधि राजाक समक्ष आनि देल। सब आनन्दसँ गद्गद छल ओ बड़े धूमधामसँ

सत्याक विवाह-विधि संपन्न भेल। राजा असंख्य धन यौतुकमे दए कृष्णकेँ विदा कएल।

एहिना कृष्णक एकगोट पीउसिकेँ केकय देशक राजासँ विवाह भेल छलैन्हि। हुनका एक गोट कन्या, भद्रा। ओहि कन्याकेँ हुनक स्वजन कृष्णक सङ्ग विवाह कराओल ओ कृष्ण ओहि परमसुन्दरी गुणवती भद्रा केँ सहर्ष स्वीकार कएल।

अन्तमे मद्रदेशक राजाकेँ एक गोट कन्या रहथिन्ह लक्ष्मणा। हुनका समस्त देश सुलक्षणा कहैन्हि। हुनका गुणसँ मुग्धभए कृष्ण हुनका हरण कए आनल ओ हुनका सङ्ग विधिवत् विवाह कएल। कृष्णक ई आठम विवाह छल जे ओ विधिपूर्वक सम्पन्न कएने छलाह।

८

मिहिर गोत्रक आवेस्ताक प्रणेता अग्निक उपासनाक प्रवर्त्तक जरथुस्त्रक कन्या भए पृथ्वी जन्म ग्रहण कएल। हुनक पुत्र दुर्धर्ष यवन नरकासुर जे पृथ्वीक पुत्र छलाह तेँ भौमासुर सेहो कहाबथि। ओ वरुणक छत्र, अदितिक कानक दूहू कुण्डल, ओ मेरु पर्वत पर देवलोकनिक क्रीड़ा स्थल मणि पर्वत अपना अधिकारमे कए लेलक। ओकर राजधानी छल प्राग्ज्योतिषपुर जकरा ओ अभेद्य किलासँ घेरि रखने छल ओ बड़का-बड़का असुरकेँ ओकर रक्षाक भार देने छल।

देवराज इन्द्र क्षुब्ध छलाह ओ द्वारका जाए

कृष्णकेँ निवेदन कएल। कृष्ण सत्यभामाकेँ सङ्ग कए गरुड़ पर चढ़ि प्राग्ज्योतिषपुर पहुँचलाह। बड़ जोरसँ ओ पाञ्चजन्य शङ्ख फूकल। सब असुर तैयार भेल। अपन गदासँ कृष्ण किला कें तोड़ि-फोड़ि देल ओ नगरक मध्य प्रवेश कएल।

भौमासुरक सेनापति छल मुर, ओकरा पाँचटा मूड़ी रहैक। शङ्खक ध्वनि सुनि ओ क्रोधसँ जरैत कृष्ण पर आक्रमण कएलक। घोर युद्ध भेल। कृष्णक सुदर्शन चक्रसँ ओकर पाँचो मूड़ी कटि गेलैक, ओ समुद्रमे जाए खसि पड़ल। तखन ओकर सातटा बेटा छूटल मुदा कृष्ण ओहि सातोक संहार कएल। तखन नरकासुर स्वयं आएल। घोर युद्ध भेल, परन्तु सुदर्शन चक्रसँ कृष्ण ओकरो संहार कएल।

तखन ओकर माए नरकासुरक बेटा भगदत्तकेँ लेने कृष्णक समीप पहुँचलीह ओ वरुणक छत्र प्रभृति देवतालोकनिक जे किछु हरण कए नरकासुर अनने छल सब किछु कृष्णकेँ समर्पण कए कुमार भगदत्तक हेतु अभय-दानक भिक्षा मँगलैन्हि। कृष्ण भगदत्तक हेतु अभय-दान दए ओकरा अपन भक्त बनाए लेल ओ तखन राजमहलमे प्रवेश कएल। ओतए ओ देखैत छथि जे राजा ओ सिद्धलोकनिक सुन्दरी कन्या सबह्निकेँ बलपूर्वक हरण कए आनि नरकासुर बन्दी बनओने अछि। सोलह हजार एहण रमणी ओतए वन्दिनी छलीहि। कृष्ण सबकेँ मुक्त कए देल। ओ सोलहो सहस्र रमणी कृष्णकेँ देखितहिँ मुग्ध भए गेलीह ओ एकरा भगवानक अहैतुकी कृपा ओ अपन परम

सौभाग्य बूझि, मनहि मन भगवान कैँ अपन पतिक रूपमे वरण कए लेल। प्रत्येक रमणी इएह संकल्प कएल जे कृष्ण हमर पति होथि तथा अपनाकैँ हुनक चरण-कमल पर समर्पण कए देल। भगदत्त अनन्त रत्न ओ धन कृष्णकैँ सलामी अर्पण कएल। कृष्ण सोलहो हजार रमणीकैँ धनराशिक संग द्वारका पठाए देल ओ स्वयं सत्यभामाक संग गरुड़ पर चढ़ि इन्द्रक भेँट करए स्वर्ग गेलाह।

स्वर्गमे इन्द्रकैँ ई वार्ता दए जे नरकासुरक संहार भए गेल, कृष्ण द्वारकाक हेतु विदा भेलाह। तखन सत्यभामाकैँ इच्छा भेलैन्हि जे परिजातक गाछ द्वारका लए जाइ। इन्द्र ओ गाछ देब स्वीकार नहि कएलथिन्ह मुदा सत्यभामाक अनुरोधसँ कृष्ण ओहि गाछकैँ जड़िसँ उपाड़ि गरुड़ पर राखि लेल ओ द्वारका आनि सत्यभामाक फुलबाड़ी मे ओहि गाछकैँ रोपि देल।

तदुत्तर अपन मायासँ भगवान सोलह हजार कृष्णक मूर्ति भए एकहि मुहूर्त्त मे सोलहो हजार राजकन्या जे ओ नरकासुरक कारागारसँ अनने छलाह सबहिक विधिवत् पाणिग्रहण कएल ओ सबहिक कामना पूर्ण कए देल।

एवं प्रकारैँ सोलह हजार आठ गोट स्त्रीक प्रेम ओ सुश्रूषा सँ नित्यनिरन्तर सेवित कृष्ण सबहिक प्रति समभाव रखैत सबकैँ तृप्त करैत अत्यन्त आनन्दसँ द्वारकामे प्रसन्न रहए लगलाह।

कृष्ण केँ आठ टा पटरानी छलथिन्ह ओ सोलह हजार सँ अधिक साधारण स्त्री । प्रत्येक गोटे देखथि जे कृष्ण सतत हमरहि महलमे रहैत छथि, हमहि हुनक प्रियतमा थिकिऐन्हि । ओलोकनि स्वयं कृष्णक रूप ओ गुण सँ मोहित रहथि; ई नहि बुझथिन्ह जे कृष्ण ककरहुसँ मोहित नहि छलाह । ओ आत्माराम छलाह, अपनहिमे रमण करनिहार छलाह ।

कृष्णकेँ प्रत्येक स्त्रीसँ दश-दश गोट पुत्र भेलथिन्ह । रुक्मिणीक बेटा प्रद्युम्न, जाम्बवतीक बेटा साम्ब प्रभृति सब मिलाए कृष्णक पुत्रक संख्या लाखसँ वेशी छलैन्हि ओ पौत्रक यदि हिसाब करी तँ कोटिक लग संख्या पहुँचि जाएत ।

६

देवर्षि नारद जखन बुझलैन्हि जे भौमासुरकेँ मारि कृष्ण एकसरे सोलह हजार राज-कन्यासँ विवाह कए लेल अछि तखन हुनका बड़ आश्चर्य भेल जे एतेक स्त्रीक तोष ई कोना रखैत छथि, एही उत्सुकता सँ प्रेरित भए ओ विदा भेलाह ओ द्वारका पहुँचलाह । द्वारका केँ देखितहिँ हुनक आश्चर्यक ठेकान नहि रहलैन्हि । एतेक ऐश्वर्य, एहन वैभव, एहि रूपक सौख्य ओ पृथ्वी पर कतहु देखने नहि छलाह । ओ सोझे कृष्णक महल पहुँचलाह । ओ महल की छल, एकटा नगर छल । हुनका बुझि पड़लैन्हि जे एकर निर्माणमे विश्वकर्मा

अपन सबटा कारीगरी लगाए देने छलाह। ओहि महलमे सोलह हजार एक सए आठ गोट तँ भिन्न-भिन्न खण्ड छल। प्रत्येक खण्डमे मूँगाक खम्भा ओ फरस इन्द्र नील मणिक रङ्गक छल। चनवामे मोतिक माला सब लटकैत रहए। आसन ओ पलङ्ग हाथी-दाँतक, जाहिमे रत्न जड़ल। दासी सब सोनक गहनासँ छाड़लि। घर-घरमे रत्नक दीप ओ दिव्य धूपसँ सुवासित। नारद तँ देखिकेँ चकित भए गेलाह।

तखन लगलाह ओ खण्ड-खण्ड जाए देखए। सबस पहिने ओ गेलाह रुक्मिणीक खण्डमे। देखैत छथि जे कृष्ण सिंहासन पर वैसल छथि ओ रुक्मिणी हुनका सोनाक डंटीबला चओंर डोलाए रहल छथिन्ह, यद्यपि ओही ठाम परिचर्यामे अनेको अत्यन्त रूपवती युवती दासी ठाढ़ि अछि। नारदकेँ देखितहिँ कृष्ण उठिकेँ ठाढ़ भेलाह ओ रुक्मिणीक सङ्ग हुनक सविधि पूजा कए हुनका अपन आसन पर वैसाओल ओ तखन कहल, "प्रभो! अपने तँ सब ऐश्वर्यसँ पूर्ण छी। अपनेक की सेवा कएल जाए?" नारद कृष्णक स्तुति कएल ओ कहल जे, "अपने तँ भक्त-वत्सल छी। अपनहिक श्रीचरण एहि संसार रूपी कूपमे खसल लोक केँ बाहर होएबाक एकमात्र अवलम्बन छैक। एतबए अपने कृपा कएल जाए जे ओहि चरण-कमलक स्मृति सतत बनल रहए, जतए रही अपनेक ध्यानमे तन्मय रही।"

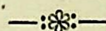
ओतएसँ नारद हुनक दोसर स्त्रीक महलमे गेलाह। ओतए देखैत छथि जे कृष्ण अपन प्रियतमा ओ उद्धवक सङ्ग चौपड़ि खेलाइत छथि। ओतहु नारदक ओहिना सत्कार भेल। ओतहु कृष्ण नारदकेँ अएबाक प्रयोजन पूछल। ओतहु नारद ओहिना भक्तिक भीख माङ्ल।

एवं क्रमे नारद घूमए लगलाह। एकठाम देखैत छथि जे कृष्ण छोट-छोट शिशुकेँ दुलार कए रहलाह अछि। कतहु स्नान कए रहलाह अछि। कतहु यज्ञ कए रहलाह अछि। कतहु ब्राह्मण भोजन कराए रहलाह अछि। कतहु सन्ध्या वन्दन कए रहलाह अछि। कतहु मौन भए गायत्रीक जप कए रहलाह अछि। कतहु तरुआरि भाँजि रहल छथि। कतहु पलङ्ग पर सूतल छथि। कतहु वन्दीजनक स्तुति सुनि रहलाह अछि। कतहु मन्त्रीक सङ्ग परामर्श कए रहलाह अछि। कतहु रमणी सबहिक सङ्ग जलक्रीड़ा कए रहलाह अछि इत्यादि।

एहि प्रकारेँ मनुष्यक लीला करैत कृष्णक योगमायाक वैभव देखि नारद आश्चर्यसँ मुग्ध भए गेलाह। गृहस्थक धर्मक आचरण करैत कृष्ण जेना देखबैत होथि जे धर्म, अर्थ ओ काम एही तीनू पर हुनका अटल श्रद्धा हो। यद्यपि छलाह ओ एक, परन्तु प्रत्येक पत्नीक महलमे हुनक स्वतंत्र मूर्ति विद्यमान छल। नारद कौतूहलसँ भगवानक समक्ष कर जोड़ि हँसैत कहल—धन्य छी प्रभो! धन्य अपनेक माया! मुदा

हमरहु तँ अपनेक चरण-कमलक सेवाक गौरव अछि। हमरहु तँ अपनेक योगमायाक रहस्य किछु बुझल अछि। आइ अपनेक लीलाकेँ प्रत्यक्ष कए हमहुँ धन्य छी। आब हमरा आज्ञा भेटओ जे हम अपनेक लीलाक गान करैत तीनू लोक भ्रमण करी ओ सर्वत्र अपनेक यशकेँ विस्तारित करी।"

कृष्ण उत्तर देल—"हे नारद! हम धर्मक केवल उपदेशे टा नहि दैत छिऐक, धर्मक हम पालन सेहो करैत छी, ओकर अनुमोदन सेहो करैत छी। संसार केँ धर्मक शिक्षा देबाक उद्देश्यसँ हम एहि रूपेँ धर्मक आचरण करैत छी। सत्ये ई हमर मायाक खेड़ि थिक। अहाँ एहि मायाक जालमे भोतिआए जनु जाइ। हमर मायासँ मोहित भए हमर वास्तविक स्वरूप केँ अहाँ बिसरि जनु जाइ।"



६

शिशुपाल-वध

१

एक दिन द्वारकापुरीमे राजसभा लागल छल, कृष्ण सभ यदुवंशीक सङ्ग सभामे बैसल छलाह। द्वारपाल आबि निवेदन कएलक जे "एक अपरिचित जन आएल छथि, दर्शनक अभिलाषी छथि।" सभामे आबि ओ कृष्णकेँ माथ झुकाए प्रणाम कएल ओ कहल जे "हम ओहि बीस हजार राजाक संवाद लएकेँ आएल छी जे राजालोकनि जरासन्धक दिग्वजयक समयमे हुनकासँ हारि नहि मानलैन्हि ओ तेँ जरासन्ध सबकेँ वन्दी बनाए गिरि-व्रजमे पर्वतक गुफामे रखने छथिन्ह। वन्दी राजालोकनि अपनेसँ निवेदन कएलैन्हि अछि जे "हे प्रभो! जे व्यक्ति अपनेक शरणमे अबैत अछि ओकर समस्त भय अपने नष्ट कए दैत छिऐक। अपने तँ साधुक रक्षा करबाक ओ दुष्टकेँ दण्ड देबाक हेतु अवतार लेने छी। तखन जरासन्ध अपनेक इच्छाक वा अपनेक आज्ञाक बिरुद्ध हमरा लोकनिकेँ कष्ट किएक दए रहल अछि? राज्यक सुख प्रारब्धक अधीन छैक। ओकरा पाछाँमे अनेक भय छैक तेँ हमरा लोकनि अपनेक चरण-कमलमे आएल छी; शरणागतक अपने रक्षक छी अतएव जरा-

सन्ध-रूपी कर्मक बन्धनसँ हमरा लोकनिकेँ मुक्त कएल जाओ। एक तँ एकसरे जरासन्ध दस हजार हाथीक बल रखैत अछि। अपने अठारह बेरि ओकरासँ युद्ध कएल। सत्रह बेरि अपने हराओल परन्तु अठारहम बेरि ओ जीति गेल। अपनेक शक्ति अनन्त अछि ओ जरासन्धसँ हारबाक अपने अभिनय मात्र कएल, हमरा लोकनि से बुझैत छी। परन्तु एहिसँ जरासन्धक अभिमान बड़ बढ़ि गेलैक अछि। ओ हमरा लोकनिकेँ एही हेतु आओर बेसी कष्ट दए रहल अछि जे हमरा लोकनि अपनेक छी। अतएव अपनेक जेहन इच्छा हो। हमरा लोकनिक उद्धार केवल अपनहिक हाथमे अछि।"

दूत ई निवेदन कइए रहल छल ताबत नारद जी ओतए आबि गेलाह। हुनक स्वागत-सत्कार, पूजा-अर्चा आदि सब किछु कए कृष्ण हुनका उच्च सिंहासन पर बैसाओल ओ पूछल जे "अपने तँ तीनू लोकमे विचरण करैत रहैत छी। कोनो विषय अपनेकेँ अविदित नहि रहैत अछि। हमरा लोकनि बैसल-बैसल अपनहिसँ तीनू लोकक घटना बूझि लेल करैत छी, तेँ हे नारद! कहल जाओ जे युधिष्ठिर की कए रहलाह अछि।"

नारद सोचए लगलाह, कहलथिन्ह—"अपने तँ परब्रह्म छी तथापि मनुष्य जकाँ लीलाक नाटक करैत, हमरासँ पूछैत छी, तँ सुनल जाओ जे अपनेक पिसिऔत भाए, परम भक्त, युधिष्ठिर सम्प्रति की विचार कए रहलाह अछि। युधिष्ठिरकेँ सब किछु छैन्हि, कोनो वस्तुक कामना नहि छैन्हि मुदा ओ

राजसूय यज्ञ करए चाहैत छथि जाहि द्वारा ओ अपनेक आराधना कए अपनेकें प्रसन्न कए सकथि। तें कृपा कए अपने हुनक अभिलाषाक अनुमोदन कएल जाइन्हि। ओहि यज्ञमे बड़का-बड़का देवता ओ यशस्वी राजा लोकनि एकत्र होएताह, सबकें अपनेक दर्शनक लालसा छैन्हि।"

सभामे जतेक यदुवंशी छलाह सबहिक इच्छा जे जरासन्ध पर चढ़ाइ कएल जाए तें नारदक ई गप्प हुनका लोकनिकें प्रिय नहि लगलैन्हि। कृष्णाकें ई बुझबामे भाङठ नहि रहलैन्हि ओ तें ओ मधुर शब्दें अपन प्रधान मंत्री उद्धवकें पूछल "अहाँ हमर हितैषी छी ओ शुभ सम्मति देनिहार छी। अहीं कहू जे एहना स्थितिमे हमरा की कर्त्तव्य थिक।"

उद्धव उत्तर देल जे "हे कृष्ण! नारदजी उचित कहलैन्हि अछि जे पाण्डवक राजसूय यज्ञमे उपस्थित भए हुनका सहायता करब अपनेक कर्त्तव्य थिक। परन्तु इहो ओहने सत्य ओ उचित, जे शरणागतक रक्षा कएल जाइक। राजसूय यज्ञ ओएह कए सकैत अछि जे दिग्विजय करए ओ ताहि दृष्टिसँ आवश्यक प्रतीत होइत अछि जे पहिने जरासन्ध परास्त कएल जाए। जरासन्धकें जितनहि हमरा लोकनिक उद्देश्य सिद्ध भए जाएत ओ सङ्गहि बीस हजार वन्दी राजाक मुक्ति भए जएतैन्हि। जरासन्ध बड़ वीर अछि, ओकरा जँ केओ हराए सकैत अछि तँ भीमसेन मुदा जखन ओ अपन सेनाक सङ्ग युद्ध करए लागत तखन ओकरा हराएब आओर कठिन। तें ओकरा हरएबाक

सबसँ सरल उपाय इएह थिक जे ओकरा सङ्ग द्वन्द्व युद्ध कएल जाए, ओ ताहि हेतु केवल भीमसेन उपयुक्त छथि। तकरो उपाय ई भए सकैत अछि जे जरासन्ध बड़ ब्राह्मण-भक्त अछि, तथा ब्राह्मण जखन ओकरासँ किछु याचना करैत छथिन्ह तँ ओ नहि नहि कहि सकैत अछि। तँ भीमसेन ब्राह्मणक रूपमे जाथि, ओकरासँ द्वन्द्व-युद्धक वचन लेथि ओ तखन ओकरासँ लड़थि। परन्तु हे कृष्ण! भीमसेन जितबे करताह से तखन जँ ई द्वन्द्व-युद्ध अपनेक समक्षमे हो। कारण सृष्टि स्थिति ओ संहार अपनेक हाथमे अछि ओ तँ जरासन्धक संहारमे भीमसेन कारण मात्र भए सकैत छथि; ओ संहार होएत अपनहिक इच्छासँ। मुदा जरासन्धकेँ परास्त कए यदि सब वन्दी राजाकेँ मुक्त कए ली तँ अपनेक बड़ यश होएत, शरणागतक रक्षा होएत, तथा राजसूय यज्ञ सम्पन्न करबामे पूर्ण सहायता भेटत।"

उद्धवक ई विचार सबकेँ पसिन्द भेलैन्हि, नारदजी सेहो एकर अनुमोदन कएलथिन्ह। निश्चय भेल जे कृष्ण इन्द्रप्रस्थ जाथि ओ पाण्डव लोकनिक सङ्ग आगाँ विचार करथि।

२

प्रातःकाल आज्ञा भेल जे युधिष्ठिरक राजसूय यज्ञमे सम्मिलित होएबाक हेतु कृष्ण सदल-बल विदा होएताह। पहिने नारदजीकेँ विदा कए, पश्चात् वन्दी नरपति-लोकनिक दूतकेँ बजाए 'कृष्ण कहल जे "अहाँ जाएकेँ राजा

लोकनिकेँ कहिऔन्हि गए जे हम सबहिक कल्याण चाहैत छी ओ जरासन्धकेँ नाश करबाक उपाय कए रहल छी।" ई कहि ओ दूत विदा कएल गेल। तखन बाल-बच्चाक सङ्ग समस्त रनिवास ओ ताहि सङ्ग-सङ्ग अनुचर, परिजन, तकर वस्तुजात, बड़द, ऊँट, घोड़ाक गाड़ी पर, तखन चतुरङ्गिणी सेना विदा कएल गेल। तखन कृष्ण रथ पर चढ़ि इन्द्रप्रस्थक हेतु विदा भेलाह।

नाना देश होइत, जनताकेँ अपन दर्शनसँ तृप्त करैत, कृष्णक दल इन्द्रप्रस्थ पहुँचल। युधिष्ठिर जखन सुनलैन्हि जे कृष्ण आबि रहलाह अछि तखन ओ सब भाए मिलि नगरक बाहर अएलाह ओ कृष्णक स्वागत कएल। बहुत दिन पर भेँट भेल छलैन्हि अतएव पाँचो भाइ, कुन्ती, द्रौपदी सब केओ पृथक्-पृथक् कृष्णसँ मिलैत गेलाह ओ बड़े सम्मानसँ कृष्णकेँ सङ्ग कए, इन्द्रप्रस्थ अनलैन्हि। हुनक आवासक व्यवस्था भेल। सबकेओ डेरा कए निश्चिन्त भेलाह।

तखन एक दिन समय पाबि युधिष्ठिर कृष्णकेँ कहलथिन्ह—"हे गोविन्द! हम राजसूय यज्ञ कएकेँ अपनेक ओ अपनेक विभूतिक स्वरूप, देवतालोकनिक, अर्चना करए चाहैत छी। हमर ई मनोरथ अपनेक चरणकमलक कृपासँ पूर्ण भए सकैत अछि। हमर अभिलाषा अछि जे संसारक लोक अपनेक चरणकमलक सेवाक प्रभाव देखए। ई सत्य जे अपने समदर्शी छी, अपनेकें ने शत्रु, ने मित्र, तथापि जे

अपनेक सेवा करैत छथि हुनका अपने भावनाक अनुसार फल भेटैत छैन्हि। फलमे कम वा वेशी होइत छैन्हि सेवाक न्यूनाधिकतासँ। तेँ हमर अभिलाषा जे पाण्डव ओ कौरव जे अपनेक भजन करैत छथि ओ जे अपनेक भजन नहि करैत छथि तनिकामे की अन्तर, से अपने अपन कृपासँ संसार केँ देखाए दी।"

कृष्ण कहलथिन्ह—"हे धर्मराज ! अपनेक विचार बड़ सुष्ठु। राजसूय यज्ञ कएलासँ अपनेक अनन्त कीर्ति होएत। ई यज्ञ ऋषि, देवता, अपनेक सम्बन्धी ओ हमर, सबहिक अभीष्ट अछि। परन्तु एहि हेतुक दिग्विजय करए पड़त, सामग्री एकत्रित करए पड़त। अपनेक चारू भाइ बड़ वीर छथि, बड़ संयमी छथि तेँ हम अपने लोकनिक वशमे छी, कारण, जे अपनाकेँ अपन वशमे नहि कए सकैत छथि से हमरा अपना वशमे कथमपि नहि कए सकैत छथि आ' जखन हम अपनेक वशमे छी तँ एहि पृथ्वी पर के दोसर भए सकैत अछि जे अपनेक वशमे नहि रहए।"

कृष्णक समर्थन प्राप्त कए युधिष्ठिर प्रफुल्लित भए गेलाह ओ अपन चारू भाएकेँ सेना लए दिग्विजयक हेतु पठाए देल। ओ लोकनि चारू दिशाकेँ जीति अनन्त धन आनि युधिष्ठिरकेँ देल।

परन्तु युधिष्ठिर जखन बुझलैन्हि जे जरासन्ध बाँकी रहि गेल, ओकरा पर विजय नहि भए सकल अछि, तखन ओ

चिन्ताक समुद्रमे डुबि गेलाह। तखन कृष्ण एकान्तमे जाए हुनका उद्धवक कहल विचार बुझाएकेँ कहि देल ओ तखन ओ लोकनि जरासन्धक विजयक उद्योगमे लागि गेलाह।

कृष्ण चुपचाप भीमसेन ओ अर्जुनकेँ सङ्ग कए गिरिव्रजक हेतु प्रस्थान कएल। जरासन्धक राजधानी गिरिव्रज छल। ओकर समीप जाए ई तीनू गोटे अप्न-अपन वेष ब्राह्मणक बनाए लेल ओ जाहि समयमे जरासन्ध अतिथि-अभ्यागतक सत्कार करए ताहि समयमे ओकरा समक्ष जाए उपस्थित भेलाह। जरासन्ध ब्राह्मणक परम भक्त ओ गृहस्थ धर्मक कट्टर पालन कएनिहार। ई तीनू गोटे राजाक स्तुति कए निवेदन कएल जे "हमरालोकनि अपनेक अतिथि छी; बहुत दूरसँ आएल छी; किछु प्रयोजन लएकेँ आएल छी; अपनेसँ किछु मङबाक अछि। अपने से वचन देल जाओ।" जरासन्ध हुनकालोकनिक रूप, बाजब ओ सबसँ बेशी हाथ पर धनुषक डोरीक चेन्हसँ बूझि गेलाह जे ई लोकनि ब्राह्मण नहि थिकाह। ओकरा इहो होइक जे हिनकालोकनिकेँ कतहु देखने छिऐन्हि परन्तु से मन नहि पड़ैक। मनहि मन ओ विचारलक जे क्षत्रिय भइओकेँ जखन ई लोकनि ब्राह्मणक वेष बनाए भीख माङए अएलाह अछि तखन जे माङथि से दए दिऐन्हि। विष्णु ब्राह्मण बनि बलिकेँ ठकि लेलथिन्ह परन्तु बलिक यश कतेक पसरि गेलैन्हि। हमरा अपन तँ इएह निश्चय अछि जे ई शरीर नाश भेनिहार थिक ओ एहि नाश भेनिहार शरीरसँ यदि अविनाशी यश

प्राप्त कए सकी तँ के मूर्ख होएत जे एहन अवसर छोड़त। ई बिचारि जरासन्ध हुनका तीनू गोटाकेँ कहल जे "हे ब्राह्मण! अपनेलोकनिकेँ जे इच्छा हो, माँगल जाओ। हम अपन प्राणसमेत देबाक हेतु प्रस्तुत छी"। जरासन्धसँ वचन लए कृष्ण कहए लगलथिन्ह—"हे राजेन्द्र! हमरालोकनि अन्नक भिक्षुक ब्राह्मण नहि थिकहुँ। हमरालोकनि थिकहुँ क्षत्रिय; ओ हमरा-लोकनि अपने सँ युद्ध मङैत छी। देखू ई थिकाह पाण्डुक पुत्र भीमसेन, ई थिकाह हुनक छोट भाए अर्जुन। हम थिकहुँ हिनका-लोकनिक ममिऔत भाए, अपनेक पुरान शत्रु, द्वारकाक कृष्ण।"

कृष्णक कथा सुनि जरासन्ध बड़ जोड़ सँ हँसल ओ कहए-लागल—"धुर मूर्ख, अहाँकेँ युद्धहिक इच्छा अछि तँ लीअ; हम सएह स्वीकार करैत छी। मुदा कृष्ण तोँ तँ बड़ डेरबुक छह; हमरा डरेँ मथुरा छोड़ि बीच समुद्रमे जाए बसलह। हम तोरा सङ्गे नहि लड़बहु। ई अर्जुन-ई एक तँ वयसमे हमरासँ छोट छथि, दोसर बलवान सेहो नहि छथि। हिनका सङ्ग हम की लड़ब? हँ, तखन भीमसेन अवश्य, ओ वीर छथि, हुनका सङ्ग हम लड़ि सकैत छी।"

ई कहि जरासन्ध अपन अजमाओल दू टा गदा मङबओलक; एकटा देलकैन्हि भीमसेनकेँ, दोसर लेलक अपने, ओ ई कहि उठि विदा भेल जे "चलू आब अखाड़ा पर, होअओ युद्ध।"

३

जरासन्ध ओ भीमसेनक द्वन्द्व-युद्ध अद्भुत भेल। दूनू महाबली छलाह; दूनू युद्धक रसिक छलाह; दूनू रणसे उन्मत्त भए लड़ए लगलाह। दूनू गदायुद्धमे कुशल छलाह; बल आओर उत्साहमे दूनू समान छलाह। युद्धमे जखन दूनूक गदा चूर्ण-चूर्ण भए गेलैन्हि तखन लगलाह दूनू गोटे घुस्सासँ मारि करए; कुस्ती लड़ए; एक दोसराकेँ पटकए। भरिदिन युद्ध होइत रहल, ने केओ हारलाह ने केओ जितलाह। ने थकलाह ने अकछेलाह। सन्ध्याकाल युद्ध बन्द भेल, सभ केओ मित्र जकाँ आपस अएलाह ओ जरासन्ध अत्यन्त सम्मानसँ तीनू अतिथिक सत्कार कएल।

एवंक्रमेँ सत्ताइस दिन धरि युद्ध होइत रहल। दिनकेँ ई लोकनि लड़थि। कृष्ण ओ अर्जुन कातमे बैसल तमासा देखथि ओ रातिकेँ मित्र जकाँ रहैत जाथि। युद्धमे ककरहु हारिक कोनो लक्षण नहि बुझि पड़ए। क्रम एहन मन लागए जे ई दूहू महाबली अखाड़ा पर युद्धक अभ्यास करैत छथि।

मुदा जँ जँ दिन बितल जाए कृष्णकेँ चिन्ता भेल जाइन्हि। हुनका जरासन्धक जन्म ओ मरणक रहस्य बूझल रहैन्हि। ओ जनैत रहथि जे जरासन्धक शरीर वज्रसन छलैक मुदा ओ दू फाँक रहैक। जरासन्धक माए, राक्षसी जरा, ओहि दूनू फाँककेँ जोड़ि अपना पुत्रक हेतु वज्रसन कठोर शरीर मढ्ने छलि।

अतएव जरासन्धक शरीर पर प्रहार कएने ओकरा किछु नहि हाएतैक। ओकर प्राणक अन्त तखनहि सम्भव छलैक जखन ओकर शरीर दू फाँकके चीरि देल जाइक। ई रहस्य कृष्णके जानल छल। तेँ अट्ठाइसम दिन ओ विचारल जे आब ई नाटक समाप्त हो। अपन शक्ति भीमसेनक शरीरमे संचारित कए अट्ठाइसम दिन ओ हुनका लड़बाक हेतु पठाओल। जखन युद्ध तुमुल भेलैक तखन ओ समीपक गाछक एकटा डारि तोड़ि ओकरा बीचसँ चीरि भीमसेनकेँ देखाए सङ्केत कएल। भीमसेन कृष्णक सङ्केत बूझि गेलाह। चट ओ जरासन्धकेँ एक झटका देल। जरासन्ध माटि पर खसल। भीमसेन लपकिके जाए अपन एकटा पाएरसँ जरासन्धक एकटा पाएर दाबि देलथिन्ह आ' दूनू हाथलँ ओकर दोसर पाएर कसिकेँ पकड़ि ओकरा दू खण्डकेँ चीरि देलथिन्ह। जरासन्धक प्राण चल गेलैक। लोक देखलक जे ओहि शरीरक दूनू फाँक केहन छलैक जे जुटिकेँ एकटा शरीर बनल छलैक। कृष्ण, भीमसेन ओ अर्जुन बड़ प्रसन्न भेलाह मुदा जरासन्धकक प्रजा बड़ शोकित भेल! कृष्ण लगले जरासन्धक पुत्रकेँ बजाए हुनक अभिषेक कए देल ओ राजा लोकनिकेँ जे जरासन्ध वन्दी बनाए रखने छल सबकेँ कारागारसँ मुक्त कए देल।

कारागारमे जरासन्ध बीस हजार आठ सए राजाकेँ वन्दी बनाए रखने छल। कृष्ण जखन ओहि कारागार-रूपी पर्वतीय गुफाक द्वार अपनहिँ ठाढ़ भए खोलाए देल तखन ओहिमे

सँ राजालोकनि क्रमशः बहराए लगलाह। सब राजा छलाह मुदा कारागारमे रहैत-रहैत सबहिक शरीर कृश भए गेल छल, सबहिक वस्त्र मैल ओ फाटल छल, भूखसँ सब दुर्बल छलाह, सबहिक मुह सुखाएल छलैन्हि, जहलमे बन्द भेल-भेल सबहिक शरीर ओ मन शिथिल भए गेल छल। बाहर अबितहिँ ओ लोकनि द्वार पड़ ठाढ़ देखल श्याम-सुन्दर कृष्णकेँ, जे छलाह घनश्याम, पीताम्बर, चतुर्भुज, वक्षःस्थल पर श्रीवत्सक चेन्ह, कमलक पात सन रक्ताभ ओ आयत आँखि, कानमे मकराकृत कुण्डल, गरामे मोतीक माला, बाँहि पर केयूर, माथ पर मुकुट, वनमाला पहिरने, छाती पर लटकल कौस्तुभ मणि। नारायणक ई रूप राजा लोकनि जेना आँखि सँ पीबए लगलाह। सकल पाप एहि दर्शनसँ नष्ट भए गेलैन्हि। ओ लोकनि सङ्ग मीलि हुनका प्रणाम कएल ओ स्तुति कएल।

"हे शरणागत-वत्सल! अपनेकेँ पुनः पुनः प्रणाम। जरासन्धक कारागारसँ तँ मुक्त कएल, आब जन्म-मृत्युक बनल संसारक कटु अनुभवसँ हमरा लोकनि थाकिकेँ अपनेक शरण आएल छी, हमरा लोकनिक रक्षा कएल जाए। हमरा लोकनि धन-सम्पत्तिक मदमे मत्त एक-दोसराक नाश करैत क्रूरताक जीवन वितबैत रहलहुँ, ओ प्रजाक पीड़न करैत रहलहुँ परन्तु ई अपनेक अनुकम्पा थिक जे हमरा लोकनिक मदकेँ अपने चूरि देल। आब हमरालोकनि अपनेक शरणमे छी। हमरा लोकनिकेँ आब राज्यक अभिलाषा नहि अछि। संसारक ई

सबटा ऐश्वर्य मृगतृष्णा थिक, केवल अपनेक माया। हमरा लोकनिकेँ आब ई कृपा कएल जाए जे अपनेक चरणक स्मृति बराबरि बनल रहए, कहिओ बिसरए नहि। हे कृष्ण! हे गोविन्द! हे वासुदेव! अपनेक चरणमे बारंबार प्रणाम।"

कृष्ण सब राजाकेँ आश्वासन दैत कहलथिन्ह जे "अपने लोकनि सत्य कहल अछि जे धन-सम्पत्ति ओ ऐश्वर्यक मदमे लोक बहुत रास उच्छृंखलताक कार्य करैत अछि ओ तकर फल होइत छैक जे ओ अपन पदसँ खसि पड़ैत अछि। नहुष, रावण, नरकासुर कतेक नाम गनाउ सब खसलाह। परन्तु ई बुझि लिअ जे शरीर ओ शरीरक सम्बन्धी सबहिक नाश अवश्यम्भावी छैक, तेँ ओहिमे आसक्ति नहि करी। मन ओ इन्द्रियकेँ सावधान भए अपना वशमे राखि हमर यजन करू ओ प्रजाक पालन करू। वंशक रक्षाक हेतु सन्तान उत्पन्न करू, मुदा भोगक हेतु नहि। प्रारब्धक अनुसार सुख वा दुःख जे प्राप्त हो, सम भावसँ ओकर सेवन करू मुदा मन नित्य ओ निरंतर हमरामे लगओने रहू। एहीमे मनुष्यक जीवन ऐहिक सुख पाबि सकैत अछि ओ अन्तमे हमर स्वरूपक दर्शन कए मुक्त होइत अछि।"

कृष्णक आदेश पाबि राजा लोकनि जाए स्नान कएल। जरासन्धक बेटा सब प्रबन्ध कराए देने छलथिन्ह! राजोचित वस्त्र, आभूषण, अस्त्र ओ शस्त्रसँ सुसज्जित भए सब गोटे उत्तमउत्तम-भोजन कएल। तदुत्तर सबहिक हेतु उपयुक्त सवारीक प्रबन्ध

कएल गेल; सब केओ कृष्णके प्रणाम कए ओ आश्वासन दए जे हमरा लोकनि सर्वात्मना युधिष्ठिरक राजसूय यज्ञमे सेवाक हेतु प्रस्तुत रहब, अपन-अपन राज्य जाइत गेलाह।

ई सब कए अर्जुन ओ भीमसेनक सङ्ग कृष्ण इन्द्रप्रस्थ अएलाह। युधिष्ठिरकेँ बड़े भक्तिसँ प्रणाम कएल। युधिष्ठिर बुझल जे राजसूय यज्ञ करबाक जे हमर संकल्प से एक तरहेँ पूर्ण भए गेल। प्रेमसँ हुनक हृदय भरि गेलैन्हि, आनन्द सँ हुनक आँखिसँ नोर टप-टप खसए लगलैन्हि, हुंनका मुहसँ तँ शब्दो नहि बहराएल।

४

कृष्णक विचारसँ यज्ञक उपयुक्त समय अएलापर शुभ लग्नमे युधिष्ठिर बड़का-बड़का ऋषि-मुनिकेँ आचार्य इत्यादिक हेतु वरण कएल। हस्तिनापुरसँ सब केओ अएलाह। देश भरिक राजा अएलाह। असंख्य ब्राह्मण ओ ताहि सङ्ग-सङ्ग यज्ञ देखबाक निमित्त अगणित लोक आएल। वस्तुतः अद्‌भुत सम्मेलन छल ओ कृष्णक निर्देशमे प्रबन्धक कतहु कोनो त्रुटि नहि छल।

तदुत्तर ब्राह्मणलोकनि सोनाक हरसँ यज्ञ–भूमिकेँ जोतबाए युधिष्ठिरकेँ शास्त्रानुसार यज्ञक दीक्षा देलथिन्ह। जेना प्राचीन कालमे यज्ञ होइत छल ओहिना विधिपूर्वक यज्ञ होअए लागल। देवता, सिद्ध, गन्धर्व, विद्याधर, नाग सब उपस्थित छलाह। सब मुक्त कण्ठसँ स्वीकार कएल जे कृष्णक

भक्त ओ धर्मराज युधिष्ठिरकेँ जेहन यज्ञ करबाक चाहिऐन्हि तेहने यज्ञ भेल। सब सन्तुष्ट छल। सब कृत्य राजालोकनिसँ सम्पादित भेल। याजकलोकनि देवता सन तेजस्वी छलाह ओ पूर्वकालमे जेहन यज्ञ वरुणदेव कएने छलाह तेहने यज्ञ युधिष्ठिरक भेल। युधिष्ठिर याजक लोकनिक भक्तिसँ पूजा कए, दक्षिणा दए-दए सबकेँ सन्तुष्ट कएल।

आब सभासदलोकनिमे एहि विषय पर विचार होअए लागल जे राजसूयमे जे विधि छैक अग्रपूजाक, से ककर हो। राजसूयक ई नियम छैक जे ओहिमे उपस्थित व्यक्तिमे जे सबसँ पैघ लोक हो, पूज्यतम हो, पुरुषोत्तम हो, जकरा सब केओ पूज्य बुझैक, सबहिक दृष्टिमे जे सबसँ पैघ लोक हो, तकर पूजा कएल जाइक। युधिष्ठिर आब ककर पूजा करथि इएह विचार-णीय छल ओ तकर निर्णय करबाक छल।

ओहि ठाम भिन्न-भिन्न प्रस्ताव आबए लागल। सब अपन-अपन विचार कहए लगलाह, मुदा सबसँ छोट पाण्डव, सहदेव, ऊठिकेँ कहए लगलाह—

"हे सभासदलोकनि! एहि सभाक कोन कथा, एहि संसारहिमे सम्प्रति यदुवंश-शिरोमणि भक्तवत्सल कृष्ण सबसँ श्रेष्ठ छथि, तेँ इएह हमरालोकनिक अग्रपूजाक पात्र थिकाह। सब देवताक रूपमे ओ छथि तथा देश, काल, धन, जतेक वस्तु छैक सबहिक रूपमे इएह छथि। ई विश्व हुनके रूप थिक, सब यज्ञ हुनके स्वरूप थिक, ज्ञान-मार्ग ओ

कर्म-मार्ग दूनू हिनके पएबाक हेतु अछि। हे सभासदलोकनि! कतेक वर्णन करब। कृष्ण परब्रह्म-रूप छथि, हिनकामे सजातीय, विजातीय ओ स्वगत कोनो भेद नहि अछि। अपनहि संकल्पसँ, अपने इच्छा-शक्तिसँ ई एहि संसारक सृष्टि करैत छथि, पालन करैत छथि, संहार करैत छथि। हिनकहि अनुग्रहसँ सम्पूर्ण संसार अनेक प्रकारक कर्मक अनुष्ठान करैत धर्म, अर्थ, काम, ओ मोक्ष सबहिक सम्पादन करैत अछि। अतएव सबसँ महान्, पूज्यतम, कृष्ण थिकाह। हिनके अग्र-पूजा होएबाक चाही। समस्त प्राणी, समस्त पदार्थक अन्तरात्मा, भेद-भाव-रहित, परम शान्त ओ परिपूर्ण कृष्ण थिकाह। जकरा इच्छा होइक जे हमर दान अनन्त भावसँ पूर्ण हो तकरा चाहिऐक जे अपन दान कृष्णकेँ समर्पित करए। हिनक पूजा कएला उत्तर सबहिक, समस्त प्राणीक, लोककेँ अपनो, पूजा भए जएतैक।"

सहदेवक कथा सबकेँ बड़ पसिन्द भेलैक। सब एक स्वरसँ "बाह, बाह, ठीक, उचित" इत्यादि समर्थन शब्द बाजए लागल। युधिष्ठिरकेँ अपनहु इएह इच्छा रहैन्हि। अतएव ब्राह्मणलोकनिक, राजालोकनिक, अपन आत्मीय कुटुम्ब-लोकनिक, सर्वसम्मत विचार सूनि युधिष्ठिर आनन्दसँ विह्वल भए उठलाह। पूजाक सबटा सामग्री संघटित भए प्रस्तुत छल; सबटा आनल गेल। अपन पत्नीक, चारू भाइ, मन्त्री ओ कुटुम्बलोकनिक सङ्ग युधिष्ठिर कृष्णक लग गेलाह। बड़का

अढ़िआमे ओ कृष्णक दूनू पाएर धोअलैन्हि तथा ओ जल अपना माथ पर, अपन लोकक माथ पर, लेलैन्हि। पीअर-पीअर रेशमी वस्त्र ओ बहुमूल्य आभूषण हुनका अर्पण कएल। षोड़शोपचार पूजा कएल गेल। तावत् समस्त सभा ठाढ़ छल। हाथ जोड़ने सब "नमो नमः" कहैत छल। चारण, वन्दी, सूत, मागध सब जय-जयकार करैत छल। युधिष्ठिरकेँ ओ हुनक भाए-वन्धुकेँ,द्रौपदीलोकनिकेँ,ततबा आनन्द छलैन्हि जे आँखि डबडबाए गेलैन्हि, किछु सूझि नहि रहल छलैन्हि। एहि नमस्कारक ओ जय-कारक ध्वनिक मध्यमे कृष्णक ई पूजा, ई सम्मान, ई सत्कार, देखि सब प्रमुदित छल, सब अपनाकेँ धन्य बुझैत छल। सभा-भवनमे फूलक वर्षा भए रहल छल। कृष्ण आइ पुरुष नहि, पुरुषपुङ्गव नहि, पुरुषोत्तम बुझल गेलाह, घोषित कएल गेलाह।

५

ओहि सभामे एक जन मात्र छलाह जे चुप रहलाह, एकर अनुमोदन नहि कएल, पूजामे सम्मिलित नहि भेलाह, कृष्णकेँ नमस्कार नहि कएल। ओ छलाह चेदि देशक राजा, दमघोषक पुत्र, कृष्णक पिसिऔत भाए, मुदा जन्मसँ हुनक विरोधी, द्रोही, शिशुपाल। ओ अपन आसन पर चुपचाप बैसल रहि गेलाह आ' जखन अग्रपूजा सम्पन्न भए गेल, सब आबि-आबि अपन आसन पर बैसि रहल। तखन ओ ऊठिकेँ ठाढ़ भेल।

एतेक काल कृष्णक गुण-गान सुनैत ओ हुनक पूजा देखैत ओकरा हृदयमे क्रोधक आगि लहरैत छलैक। ई सब ओकरा सह्य नहि भेलैक। हृदयक ज्वाला वाणीक कठोरताक सङ्ग बहराए लगलैक। तामसेँ थर-थर कँपैत, लाल लाल आँखि, ओ जोर-जोरसँ सभाकेँ सम्बोधित कए कहए लागल—हे सभासद गण अपने लोकनि सबहुँ पात्रकेँ चिन्हनिहार छी, सबश्रेष्ठ छी, मुदा ई सहदेव सन नेनाक कथाक समर्थन कए अपनेलोकनि उचित नहि कएल अछि। वेद कहैत अछि जे काल सबसँ बलिष्ठ थिक। तहिँ आइ एहिठाम ई देखल अछि। ई कालक कारणेँ थिक। नहि तँ एतए बड़का-बड़का तपस्वी, विद्वान ओ व्रतधारी, ब्रह्म ज्ञानक द्वारा समस्त पापक तापकेँ शान्त कएने, परमर्षिलोकनि, ब्रह्मनिष्ठलोकनि-जनिका लोकनिक पूजा दिग्पाललोकनि सेहो करैत छथि—सबकेँ छोड़ि ई कुल-कलङ्क गोपालक बालक कोना अग्रपूजाक अधिकारी भए सकैत अछि? की कौआ कतहु यज्ञक अंश पबैत अछि? कृष्णक ने कोनो जाति छैन्हि, ने आश्रम; कुलो हिनक पैध नहि छैन्हि। सब धर्मसँ ई बाहर छथि। वेदक ओ लोकमर्यादाक उल्लंघन कए अपनहि मने आचरण करैत छथि। कोनो गुण हिनकामे नहि छैन्हि। ई अग्रपूजाक योग्य कोना भेलाह? के नहि जनैत छैक जे हिनका वंशमे ययातिक शाप छैन्हि जाहि कारणे सत्पुरुष एहि वंशक बहिष्कार कएने अछि। ई लोकनि हरदम मदिराक सेवनमे आसक्त रहैत छथि। ई अग्र-

पूजाक योग्य कोना बुझल गेलाह ? ब्रह्मर्षिदेश मथुराक त्याग कए ई वेदक चर्चासँ रहित समुद्रक बीचमे अपन दुर्ग बनाए ओतए वास करैत छथि ओ जेमहर जाइत छथि, डकैत जेकाँ प्रजाकेँ लुटैत जाइत छथि। कहल जाओ जे एहन व्यक्ति कोना अग्रपूजाक पात्र बुझल गेल ? गोपक संग रहि ई गाए चराओल। वंशी बजाए व्रजक कुलकन्याकेँ बहकाए रास रचलैन्हि। माम कंसकेँ मारलक। जरासन्धकेँ परतारि छलसँ हुनक प्राण लेलक। एहन कपटी, भीरु, स्त्रीलम्पटकेँ अग्रपूजाक अधिकारी बनाए निश्चय काल अपन प्रभाव देखओलक अछि।"

एहने-एहने ओ एहूसँ कठोर-कठोर कथा कहैत-कहैत शिशुपालक जे किछु शुभकर्म छलैक, सबटा नष्ट भए गेलैक। परन्तु कृष्ण शान्त बैसल रहलाह। जेना गीदरक भुकने सिंह विचलित नहि होइत अछि तहिना कृष्ण कनेको विचलित नहि भेलाह। परन्तु एहि सभामे बहुत लोक छल जकरा कृष्णक ई निन्दा सुनल नहि गेलैक कतेक गोटे कान मूनि बैसल रहल, कतेक गोटे अपन आसन छोड़ि बाहर चल गेल, कारण, भगवानक तथा भगवानक भक्तक निन्दा सुनलहु पाप होइत छैक।

शिशुपाल जखन चुप भेल तखन कृष्णक पक्षपाती राजालोकनि अपन-अपन तरुआरि बहार कए शिशुपाल पर छुटलाह। शिशुपाल सेहो अपन तरुआरि बहार कए सबसँ लड़बाक

हेतु उठिकें ठाढ़ भेल। युधिष्ठिर किंकर्त्तव्यविमूढ़ छलाह। मुदा कृष्ण उठिकें ठाढ़ भेलाह, अपन पक्षपाती राजा सबकें शान्त भए ओ बैसए कहल तथा शिशुपालकें सम्बोधन कए कहल-थिन्ह जे "तोहर पापक घैल भरि गेलौक। तोरा माएकें हम वचन देने छलिऐन्हि जे तोहर अपराध हम क्षमा कए देल करबौक। मुदा तकर सीमाकें तों लाँघि गेलें।" ई कहैत ओ अपन सुदर्शन चक्र फेकल ओ लोक देखलक जे शिशुपालक मूड़ी कटिकें भूमि पर खसि पड़लैक आ' ओकर काटल-धरसँ एकटा तेज बहराए, कृष्णक शरीरमे चल गेलैन्हि। शिशु-पालकें भगवान तारि देलथिन्ह।

शिशुपालक अन्त भेला उत्तर कृष्ण-द्रोहीक अन्त भए गेल। कृष्ण आइ पृथ्वीक भार सर्वथा उतारि देल। ओ आइ पुरु-षोत्तम छलाह। सब हुनका नारायण बूझि नतमस्तक भए प्रणाम कएलक। कृष्णावतारक उद्देश्य सिद्ध भए गेल। आब केवल महाभारतक युद्ध अवशिष्ट रहल। समस्त देश कृष्णकें भगवान् बूझि पूजए लागल।

जय गोविन्द!

जय यदुवंशमणि!

जय कृष्ण!

उपसंहार

हम निरक्षर अबला बड़ साहस कएल। कृष्णक दिव्य लीला हम लीखि सकब तकर कोन भरोस छल ? परन्तु इहो कृष्णहिक लीला जे हमरा सँ ओ अपन लीलाक वर्णन टुटल-फूटल शब्दमे, शुद्ध-अशुद्ध, कोनहु रूपेँ लिखाए लेलैन्हि युग युगसँ लोक कृष्णक लीला गबैत आएल अछि, पढ़ैत आएल अछि, सुनैत आएल अछि। एहू घोर कलिकालमे जकरा कोनो अवलम्ब नहि छैक तकर अवलम्ब कृष्ण-चरित होइत छैक। हमरा सन अबलाकेँ मनोरथ भेल ओ से मनोरथ भगवान आइ पुराए देलैन्हि। ई यदि हुनक महिमा नहि तँ की थिक ? बहुत दिन सँ हमहुँ कृष्णक युगल मूर्तिकेँ राजपति मानि हृदयसँ सेवने छिऐन्हि। भक्तिक मर्म हम की बुझबैक मुदा नित्य ओ निरंतर हुनक चिन्तन, स्मरण, कीर्तन, श्रवण, वन्दन, पादसेवन, पूजन ओ आत्मनिवेदन करैत आइलि छी। हमरा विश्वास अछि जे लाखो जीवकेँ भगवान अपन मायाक प्रभावसँ मनोरथ पुराए-पुराए तारि देने छथिन्ह। हमरो मनोरथ पुराए राजपति आइ अपन दिव्य लीला देखाए देल।

पण्डित समाजसँ हमर करबद्ध निवेदन जे एकर त्रुटि ओ लोकनि एक अबला नारीक त्रुटि बुझथि हम स्वान्तः सुखाए ई लीला लिखलहुँ ओ भक्तिक उद्रेकमे एकरा लीखि गेलहुँ। भक्तिमे केवल हृदयक भाव देखबाक थिक से ओ भाव हम केवल भक्ति मात्रक रखने छलहुँ आ' छी। जनिका हृदयमे राधा-कृष्णक भक्ति होएतैन्हि से धरि हमर भक्ति-भावकेँ अवश्ये चिन्हताह। नहि तँ राजपति तँ छथिए।

जय गोपाल !
जय गिरिधारी ब्रजबिहारी !
जय लीलानागर राजपति !

—:०: इति :०:—